हीरक जयंती निदिध्यासन अंक

# भगवत् कृपा

# THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करनेवाली मासिक सत्संगपत्रिका


| | | |
|---|---|---|
| वर्ष 20 अंक : 1, 2, 3 | सम्पादक : **प्रभांकर राव** | वार्षिक चंदा : 50.00 |
| बुधवार 26/3/97 | जनवरी, फरवरी, मार्च -1997 | प्रति अंक : 5.00 |


## काका....... इतिहास गुणातीत समाज का तुम बिन लिखा न जाए!

1. प.पू. काकाजी की परावाणी **'सिंहगर्जना'** की कैसेट का उद्घाटन करते हुए **-पू. बापू**

3. हिन्दी भजन पुस्तिका **'नादसृष्टि'** का उद्घाटन करते हुए-**प.पू. कोठारीस्वामिजी**

2. हिन्दी भजनों की कैसेट **'नादसृष्टि'** का उद्घाटन करते हुए-**पू. वशीभाई**

4. हिन्दी **'ब्रह्मप्रवाह'** का उद्घाटन करते हुए-आत्मीय स्वजन **मा. सनत मेहता साहेब**

5. गुजराती **'ब्रह्मप्रवाह'** का उद्घाटन करते हुए-प.पू. काकाजी के लाडले **पू. भरतभाई**

अहो हो ! उमंग उल्लास से दिलो-दिमाग पर हमेशा के लिए छाता हुआ, अनेक नवीन स्मृतियाँ देता हुआ.... **गुरुभक्ति यज्ञ** !

पिछले छः-सात महीने से चातक पक्षी की भांति खूब आतुरता से जिस सुनहरे अवसर की हम सभी राह देख रहे थे वो आया... भक्ति अदा करने का अवसर मिला... जीवन धन्य हुआ, आपसी नज़दीकीयाँ बढ़ीं और गुरुजी की ओर ही निगाह रखकर, उनकी प्रसन्नता के लिए ही क्रियायोगों को करने की लगन बढ़ी..... सेवा के फलस्वरूप कई राग टले... अंतःकरण शुद्ध व पवित्र हुआ—अनोखा आनंद मिला.... प्रभु की सर्वोपरि सत्ता के अनुभव हुए। क्या और किस रूप में शब्दों द्वारा वर्णन करें? ऐसा होता है कि बस दिन-रात स्मृति कर-करके उसी आनंद में झूमा करें। सभी कुछ आंखों से देखा भी, पर जैसे दिल भरा ही ना हो। सो, आओ... चलो, हम सब इकट्ठे होकर '**गुरुभक्ति यज्ञ**' के दिनों की सुहानी यादों के खजाने को संजोये कि—कहीं कोई बात हमारी नज़र से बाहर चली ना जाए.... अंतरपट के कैमरे में इन चिरंजीव स्मृतियों को हमेशा के लिए सुरक्षित रख लें..... शाश्वत् कर लें ! अनमोल स्मृतियाँ ही तो हमें 'गुरुभक्ति' अदा करने की नित्य नवीन सूझ, प्रेरणा, बल देती रहेंगी!

पिछले एक डेढ़ साल से दिल्ली के सभी मुक्तों-मंदिर के संतों-सेवकगण, भाई-भाभियों, बहनों के दिल में '**गुरुभक्ति यज्ञ**' मनाने की लौ जल रही थी। क्योंकि-अब तक तो प.पू. गुरुजी ने हम सब के हर प्रकार के उत्थान के लिए खूब किया..... अब हमारा अवसर था-प.पू. गुरुजी के प्रति भक्ति अदा करने का। वैसे, बड़ा function करने की बजाय बहनों की 'अक्षरज्योति' के भवननिर्माण के लिए प.पू. गुरुजी ने हरिभक्तों को पटा लिया था। पर, फिर सभी के दिल-भावना के आगे वे पिघल गए और.....'**गुरुभक्ति यज्ञ**' की तैयारियाँ शुरु हुई.....

तब से थोड़ा-थोड़ा decoration वगैरह का आयोजन करना भी शुरु किया.....और नवेंबर 96 में जब प.पू. पप्पाजी के '**भक्ति उत्सव**' से लौटे, तब से सभी एक साथ दिन-रात लग पड़े। सबसे पहले मुख्य द्वार व सभामंडप के द्वार की तैयारी हुई। पू. ऋषि, पू. आशिष, पू. गोरु, पू. कपिल, पू. सागर, पू. विक्की, पू. जीशु, पू. उनीत, पू. टीटू वगैरह युवकों ने दिन-रात जगकर खूब परिश्रम करके जूट से बना और देखने में simple, फिर भी rich gate तैयार किया। फिर...... stage पर depth लिए हुए दीवार का एक पर्दा तैयार करना था। प.पू. गुरुजी के जीवन को जिन्होंने खूब करीब से निहारा है, ऐसे हमारे आत्मीय स्वजन व एवोर्डेड आर्टिस्ट प.भ. अमृत पटेल साहेब ने पत्थरों की दीवार-जिस पर फूल उगे हैं- ऐसा डिज़ाइन बना कर दिया। थर्मोकोल के टेढ़े-मेढ़े आकार में काट-काट कर उसे paint करने पर हुबहु पत्थर ही लगे, ऐसे हजार के करीब पीस तैयार किए......इस सेवा में तीन साल के बच्चों से लेकर 22-24 तक के युवकों ने, भाभियों ने, बहनों ने बेहद परिश्रम किया। अक्षरज्योति की बहनें-गुणातीत स्वरुपों के आसन, हार, महाराज के श्रृंगार, पाघ, batches आदि बनाने में जुट गई..... निमंत्रण कार्ड, पत्रिका आदि की सेवा तो चालू थी ही और प.पू. गुरुजी तो प.पू. काकाजी के पत्र संकलन-'**ब्रह्मप्रवाह**' पुस्तक की तैयारी में दिन-रात देखे बिना लगे हुए थे। हर एक को इससे निरंतर प्रेरणा मिल रही थी...... भाभियाँ करीब तीन-चार महीने से सुबह से ही अनाज आदि की सफाई की सेवा में आ जाती..... इस प्रकार चारों ओर 'सेवा यज्ञ' चालू था। हर एक के चेहरे पर 'गुरुभक्ति यज्ञ' में मैं क्या योगदान दूँ? किस तरह गुरुजी प्रसन्न हो जाएं। बस यही एक अरमान झलक रहा था !

इससे भी अधिक, कहीं भी कुछ काम से या चीज़ खरीदने जाते तो कुछ जान-पहचान ना होते हुए भी वे सब इतने अधिक भाव से सेवा करने तैयार हो जाते कि हमें स्पष्ट ख्याल पड़ता कि यह व्यक्ति नहीं वर्त रहा, बल्कि स्वयं प.पू. काकाजी ही उसमें प्रवेश करके हमें सहायरुप हुए हैं...... decoration का सामान खरीदने की इसी भागदौड़ के दौरान थर्मोकोल की कटिंग करने की निमित्त **सुनील भईया** हमारे सम्पर्क में आए, जिन्होंने थर्मोकोल की कटिंग करने से जूतों के rack लाने तक व केक का सांचा बनाने तक की रात दो-दो बजे रुक कर खूब अपनेपन से सेवा कि हमें तो केवल सुरुचि मात्र रखनी है.... बाकी प्रभु अपने आप सेट कर देते हैं.....

तीन-चार महीने तो जैसे पंख लगाकर उड़ गए.... और उत्सव का गिनती के दिन नजदीक आ गए ! 27 जनवरी को **जयपुर** से **प.भ. भोगी लाल और मंडल** सेवी में आ गया और अत्यधिक अपनेपन से दिन-रात रत होकर प.पू. गुरुजी व सभी सेवकों का दिल जीत लिया।

29 जनवरी से 'अनिर्देश' जगमगाते बल्वों से दुल्हन की तरह सजने लगा। सड़क से आते-जाते लोग रोशनी देखकर सहज ही बोल उठते-'**वाह ! 'राष्ट्रपति भवन' जैसा सजाया है**' मंदिर के प्रवेश द्वार के पास ही झोपड़ी में नीलकंठ वर्णी की मूर्ति खड़ी थी। 29-30 जनवरी की पूरी रात जग कर

सभामंडप के बाहरी द्वार पर सुन्दर आकार में बनाया हीरा चढ़ाना था..... ढाई घंटे की लगातार मेहनत के बाद 'स्वामिनारायण-स्वामिनारायण' करते दिल्ली व जयपुर मंडल के भाईयों ने हीरा चढ़ाया-जो घूमता हुआ इन्द्रधनुषी रंगों की आभा लिए अत्यधिक चमक रहा था।

31 जनवरी तो जैसे एक अनोखी ऐतिहासिक यागदार बनी....... सभी गुणातीत स्वरुप व मुंबई, वडोदरा, काठियावाड़, अहमदावाद के मुक्त इसी दिन पधार रहे थे। प.पू. अक्षरविहारी -स्वामीजी, प.पू. दिनकरभाई, प.पू. कोठारीस्वामी जी प.पू. ज्योति बहन, पू. प्रेम बहन व करीब दो सौ हरिभक्त पश्चिम एक्सप्रेस में-एक ही ट्रेन में इकट्ठे हो गए, जबकि पहले से इनका ऐसा कोई आयोजन भी नहीं था। वडोदरा-मुंबई को तो by chance हुआ मान भी लिया जाए, परन्तु काठियावाड़, अहमदावाद के मुक्त भी इसी ट्रेन से आये! इससे तो स्पष्ट ही था कि-**प.पू. काकाजी को बेहद 'संगठनभाव' का inner force ही इसके पीछे कार्य कर रहा था**.... ट्रेन के हर एक डिब्बे में अपना ही कोई ना कोई ग्रुप बैठा देखकर, एक-दूसरों से मिल कर सब आश्चर्य में पड़ जाते कि-अरे! आप भी इसी ट्रेन में हो? आखिर से अंत तक का कोई डिब्बा ऐसा ना था जिसमें हमारा कोई ग्रुप बैठाना हो। प्लेटफॉर्मा अपने ही गुणातीत समाज से भरा होने से लगता था कि आज की इस ट्रेन का नाम '**गुरुजी हीरक जयंती स्पेशयल**' रखा होता तो! प.पू. पप्पाजी भी उसी दिन प्लेन से पधारे और **प.पू. बेन** भी जैसे **प.पू. बा की खोट पूरी करने** 80 साल की उम्र में प्लेन से आ गईं!

प.पू. गुरुजी ने शाम की सभा में बताया कि प.पू. काकाजी अधिकतर पश्चिम एक्सप्रेश ट्रेन से या तो प्लेन से दिल्ली आते थे। तो, आज जो सब पश्चिम एक्सप्रेस से आए वे सब प.पू. काकाजी के स्वरूप ही आए हैं और प.पू. काकाजी के रूप में साक्षात् प.पू. पप्पाजी तो प्लेन से पधारे ही। दोपहर तक धर्मशालाओं, प.भ. मल्कानी साहेब के फॉर्म हाऊस व अन्य जगहों पर सब के रहने की व्यवस्था हो गई..... 31 जनवरी की शाम को प.पू. पप्पाजी, प.पू. दिनकरभाई, प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी की निश्रा में प.पू. काकाजी महाराज के लाडले योगेश्वर पू. भरतभाई का जन्मदिन मंदिर के हॉल में मनाया.....

ठाकुरजी का हॉल आज बहुत ही अलग रूप लिए हुए था... मंदिर के हॉल में चारों ओर लाक्षणिक मुद्राओं में एवं स्वरूपों के साथ प.पू. काकाजी की मूर्तियाँ व दिल्ली मंदिर के लिए प.पू. काकाजी द्वारा किए कार्य की छोटी-सी झांकी लगाई थी...... प.पू. गुरुजी के बचपन से लेकर अब तक की थोड़ी मूर्तियाँ भी थी.... मूर्तियों के नीचे रहस्याबोधी सूत्र लिखे थे.... कटे पेड़ जैसे खूब सुन्दर तने के आकार के स्टेन्डस पर प.पू. काकाजी द्वारा पू. गुरुजी को दिए अद्भुत आशीर्वाद थे, जो सभी के आकर्षण का केन्द्र बने थे। जो भी हॉल में दाखिल होता–वह सन्न हो जाता और उसका वहां से हटने का मन नहीं करता और वहीं बार-बार घूमता रहता.... जैसे काकाजी के प्रति होता था कि बस उनके पास से उठने का मन ही ना करता! प.पू. पप्पाजी, प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी, प.पू. दिनकरभाई, प.पू. साहेब सभी स्मृतिखंड के रूप में प.पू. काकाजी की यह झांकी देखकर बहुत ही खुश हुए क्योंकि कुल मिला कर यह स्मृतिखंड short and sweet-rich yet sober था। प.पू. पप्पाजी तो यह देख कर बोले कि–'**कुछ नया ना करे वो मुकुंद नहीं!**' **पू. घनश्यामभाई अमीन** को तो यह स्मृतिखंड इतना अधिक छू गया कि function से वे वापिस विद्यानगर गए तो उनके दिलो-दिमाग पर यह हॉल ही छाया रहा। आखिर उन्होंने फोन पर प.पू. गुरुजी को बोला कि मैं वो हॉल भूला नहीं पा रहा... और प.पू. गुरुजी की आज्ञा से दोबारा अपने परिवार को लेकर प्लेन से दिल्ली वापिस आए। एक गाना तो सुना था–

**'मैं निगाहें तेरे चेहरे से हटाऊँ कैसे?**
**लूट गये होश तो फिर होश में आऊं कैसे?'**

पर यह घटना तो यहां आये सभी से घटी! वैसे यह स्मृतिखंड दिनांक 9 फरवरी तक ही बनाये रखने का आयोजन था। परन्तु प.पू. दिनकरभाई ने तो इसे और अधिक दिनों तक रखने की आज्ञा दी..........!

पहली फरवरी की सुबह तो अनिर्देश का पूरा फ्रंट फूलों से सजा था, जिससे मंदिर की शोभा देखते ही बनती थी। पवित्रता व दिव्यता के वातावरण की चारों ओर खुश्बू बनी थी। मंदिर के दोनों द्वार पर सुन्दर अर्धगोलाकार की आर्च पर घंटियां लगी थीं। एक द्वार पर लिखा था '**श्री अक्षरपुरुषोत्तम मंदिर**' तो दूसरे द्वार पर लिखा था–'**सुस्वागतम्-गुरुभक्ति यज्ञ-1997।**'

मंदिर के साथ की जमीन–जो कि कई दिनों के परिश्रम से एकदम साफ-सुथरी हुई थी, वह आज हर एक के लिए आकर्षण का केन्द्र बन रही थी क्योंकि सेवकों ने दिन-रात

अत्यधिक जेहमत से जो प्रवेश द्वार व सभा मंडप का द्वार तैयार किया था, वह आज उस पर पूर्णरूप से सुशोभित हो रहा था। मुख्य द्वार पर भावात्मक एकता के प्रतीक रूप गुणातीत समाज, योगी डिवाईं सोसाईटी, अक्षरज्योति, अनुपम मिशन व गुणातीत ज्योत के चिन्हों के साथ मध्य में गुरुभक्ति यज्ञ का लोगो था। सभा मंडप 'नैमिषारण्य' नाम लिए हुए था। **'नैमिषारण्य' यानि जहां मनोमय चक्र, इंद्रियों-अंतःकरण की धाराएं कुंठित हो जाएं और जहां भगवान के एकांतिक साधु का निवास हो....।** द्वार के दोनों ओर–**'हर एक समस्या का रामबाण इलाज भजन ही है'** इस तथ्य के संकेत रूप भजन करते दो साधुओं की प्रतिमा रखी गई थी... जिसे देखकर अपने आप ही सभी को भीतर की आध्यात्मिकता की अनुभूति हो रही थी।

करीब ढाई हजार हरिभक्तों के बैठने की सुविधा युक्त यह विशाल सभा मंडप चारों ओर गुणातीत ध्वज का बोर्डर व हिन्दी एवं अंग्रेजी में 'स्वामिनारायण' मंत्र लिखे कपड़े की दीवार से बना हुआ था। बीच-बीच में योगी डिवाईन सोसाईटी, प.पू. काकाजी के हस्ताक्षर लिया हुआ सूर्य, अक्षरज्योति व गुरुभक्ति यज्ञ के चिन्ह लगे हुए थे। मंच के पीछे के पर्दे पर सुनहरे अक्षरों में **'हरा अनुग्रह'** लिखा था। प.पू. काकाजी व प.पू. पप्पाजी के बीच में दिल्ली व उत्तर के मुक्तों के प्राणाधार प.पू. गुरुजी का कमल के आकार में गुलाबी पंखुड़ियों वाला सुन्दर आसन बना था। प.पू. स्वामिजी आपरेशन होने की वजह से इस उत्सव में आ नहीं सके थे, लेकिन हर एक दिल में यह एहसास था कि मन से-दिव्य रुप से वे यहीं पर हाजिर हैं और..... प.पू. स्वामिजी के आसन पर उनकी जो मूर्ति (कटआउट) रखी थी-वह भी इतनी जीवंत थी कि कई धोखा खा जाते थे कि प.पू. स्वामिजी तो साक्षात् यहाँ विराजमान हैं ही। इसी प्रकार प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी, प.पू. साहेब, प.पू. दिनकरभाई के आसन लगाये थे। पू. कोठारीस्वामिजी, प.भ. मल्कानी साहेब भी स्टेज पर विराजमान थे।

दूसरी ओर अक्षरज्योति के बराबर का शॉपिंग कोम्पलेक्स जो कि प.भ. विजयपालजी की सहायता से खूब अच्छा साफ हो गया था, वहां प्रसाद–भोजन की व्यवस्था की गई थी, जिसका नाम **'अक्षयपात्र'** रखा गया था। भगवान कृष्ण व द्रौपदी के एक चावल के दाने के प्रसंग को ध्यान में लेकर 'अक्षयपात्र' नाम चुना गया था। उत्सव के तीनों दिन सभी ने यहीं प्रसाद लिया। **पू. सुहृदस्वामी, प.भ. राजुभाई शाह, प.भ. विनोद भाई, प.भ. प्रकाशभाई, प.भ. विजयभाई मेहता, प.भ. हरेशभाई दोशी, प.भ. दिलीपभाई शाह, प.भ. बुधरामजी** वगैरह ने खड़े पांव रहकर बहुत ही अच्छी तरह से रसोई की सेवा संभाल ली और प.पू. गुरुजी को अत्यन्त प्रसन्न कर लिया।

1 फरवरी 97, शनिवार की सुबह प.पू. पप्पाजी, प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी, प.पू. साहेब, प.पू. दिनकरभाई, प.पू. कोठारीस्वामिजी के साथ प.पू. गुरुजी सभा मंडप में पधारे..... प.पू. पप्पाजी ने प्रवेश द्वार व सभा मंडप को बहुत करीब से देखा। प.पू. पप्पाजी को लगा कि शायद बाहरी कारीगरों को बुलाकर यह द्वार बनवाया है, पर प.पू. गुरुजी ने बताया कि यह छोटे-छोटे बच्चों व युवकों ने अपने हाथ से दिन-रात परिश्रम करके बनाया है। तो, प.पू. पप्पाजी खूब प्रसन्न हो गए कि आत्मबुद्धि व प्रीति युक्त एक समाज यहां तैयार हो गया है।

सभी स्वरुपों के साथ प.पू. गुरुजी के पंडाल में प्रवेश करते ही प.भ. विनोदभाई (पंजाब), प.भ.राकेशभाई ने बुलंद आवाज़ **'आयो रे आयो रे आयो प्रभु भजवाने-माया के बंधन से मुक्त कराने......'** भजन गाया। सारा सभा मंडप गूंज उठा व आनंद का वातावरण छा गया। स्वरुपों के आसन ग्रहण करने के पश्चात् 'हरा अनुग्रह' शिविर प्रारम्भ हुई।

सर्वप्रथम आवाह्न श्लोक बोल कर 'स्ववमिनारायण' धून्य हुई और प.भ. राकेश भाई ने सभी गुणातीत स्वरुपों व देश-विदेश से पधारे हरिभक्तों का हृदय के भाव से शब्दों व फूलों के हारों द्वार स्वागत किया। पश्चात् प.पू. शांतिभाई साहेब (ब्रह्मज्योति) के हाथों शिविर उद्घाटन का दीप प्रज्जलित करा गया और प्रासंगिक उद्बोधन के बाद प.पू. काकाजी की परावाणी की **'सिंहगर्जना'** कैसेट का उद्घाटन प.पू. काकाजी के लाडले योगेश्वर **महेन्द्र बापु** के वरद् हस्तों हुआ एवं **'नादसृष्टि'** भजन की तीन कैसटों का उद्घाटन प.पू. गुरुजी के अत्यन्त प्रिय **पू. वशीभाई** ने किया।

हरा अनुग्रह यानि-'लीलो अनुग्रह' प.पू. काकाजी का प्रासादिक शब्द है। **' मारे तमारा ऊपर लीलो अनुग्रह करवो छे....' यानि-मुझे तुम पर हरा अनुग्रह करना है.......** यूं वे आखिर-आखिर में खूब कहते थे। सभी को शिविर का यह नाम खूब पसंद आया। हम सभी जानते भी हैं कि सभी स्वरुपों के दिल में प.पू. गुरुजी ने आज एक अनोखा स्थान पाया है। हृदय की भाषा में यदि कहें तो सभी स्वरुप उन पर

बेहद फिदा हैं। हम ऐसे पात्र किस प्रकार बन सकें-इस उद्देश्य से यह शिविर रखी गई और आनंद उत्सव में आये सभी मुक्त अपने जीवन के लिए कुछ आध्यात्मिक भोजन साथ लेकर जाएं, यही शिविर के आयोजन के पीछे मूल भावना थी। प्रासंगिक उद्बोधन के बाद सभी स्वरुपों ने अपने प्रवचन में प.पू. काकाजी व प.पू. गुरुजी द्वारा दिल्ली में किए कार्य की सराहना की व अनुग्रह रूपी आशिष वर्षा की और.....शाम को दोबारा समय पर सभा में हाज़िर होने की भावना लेकर पहली सभा को विसर्जित करके सब 'अक्षयपात्र' में प्रसाद लेने पहुँचे.....

शाम को साढ़ पाँच-पौने छः बजे 'नैमिषारण्य' रोशनी से सुसज्जित होकर दोबारा स्वागत के लिए मानो तैयार खड़ा था। सुबह की तरह ही सभी गुणातीत स्वरूप एक साथ सभा मंडप में पधारे। शिविर के द्वितीय सत्र में प.भ. विनोदभाई व पू. ऋषि ने भक्ति भरा नया भजन ' **गुरुभक्ति यज्ञ मनाये हम, पराभक्ति में खो जाएं हम....गुरुजी स्वरूप को पहचानें....'** सब में 'गुरुभक्ति' अदा करने मानो नया जोश भरने गाया। फिर संतों-पू. स्नेहलस्वामी (सांकरदा), पू. भाईस्वामीजी एवं भक्तों के प्रासंगिक उद्बोधन का कार्यक्रम चला और गुणातीत स्वरूपों ने उदार दिल से आशिष वर्षा करके साधना में अटके प्लेटफॉर्म से आगे जाने की अद्भुत सूझ, बल व प्रेरणा देकर धन्य-धन्य कर दिया।

2 फरवरी, रविवार-प.पू. गुरुजी की हीरक जयंती का मुख्य उत्सव....जिसका दर्शन करने का हमें महीनों से बेसब्री से इंतजार था। आज का नज़ारा ही अलग था। सुबह 8.00 बजे तक तो सारा स्टेज एकदम तैयार....... स्टेज पर पत्थरों की तीन अलग-अलग दीवारें बनाई हुई थी, जिसमें जगह-जगह फूल उगे हुए दिखाए गए थे और बीचोंबीच श्री अक्षरपुरुषोत्तम महाराज की मूर्ति स्थापित की गई थी व एक ओर ब्र.स्व. शास्त्रीजी महाराज व दूसरी ओर गुरुहरि योगीजी महाराज की मूर्ति लगाई हुई थी। इस पर्दे का अद्देश्य था कि- **'ब्र.स्व. शास्त्रीजी महाराज का संकल्प झेल कर, गुरुहरि योगीजी महाराज की मर्जी में मिट जाने-प.पू. काकाजी ने रेती में जहाज चलाने जैसा दुर्गम कार्य किया और उसमें प.पू. गुरुजी को निमित्त बनाया-यह हम सभी जानते हैं और प.पू. गुरुजी ने भी प.पू. काकाजी की आशिष पाकर खूब कठिनाई से, धैर्य से, विश्वास से बंजरभूमि को हरियाला बनाया-मानों पत्थरों की कई दीवारें तोड़कर उसमें फूल उगाने जैसा कार्य दिल्ली-उत्तर भारत-पंजाब में सत्संग फैला कर किया है।'** सच! यहां का सत्संग समाज प.पू. गुरुजी के अनहद् परिश्रम का आज हुबहु प्रमाण है। इस दिन के स्टेज का दूसरा आकर्षण था-प.पू. गुरुजी का सूर्य के आकार में बना आसन-जो कि 25 जनवरी 86 को ब्र.स्व.प.पू. काकाजी महाराज द्वारा प.पू. गुरुजी को दिये आशीर्वाद का प्रतीक था। साथ ही सभी गुणातीत स्वरुपों के आसन भी बहुत ही सुन्दर ढंग से सुसज्जित थे। माने अक्षरधाम की सभा अपने पूर्णरूप में धरती पर उतर आई थी।

जिस तरह हम इस भव्य उत्सव को मनाने बेचैन थे, वैसे ही इन्द्रदेव अपने पूरे साज-समान के साथ इस सभा के दर्शन के लिए हम सब से पहले ही तैयार होकर पधारे......आप समझे? आप समझ गए होंगे- यानि बरसात पड़नी शुरू हो गई। प.पू. गुरुजी तो लगभग डेढ़ महीने पहले ही सहज बोल गए थे कि- वाटरप्रूफ पंडाल बनवाना। हम ने स्टेज तो वाटरप्रूफ करवाया था। लेकिन, आर्थिक कठिनाई को देखते हुए, पूरा पंडाल वाटरप्रूफ बनाना संभव नहीं था। बरसात देख कर सभी के भीतर जैसे कि प.पू. काकाजी कहते थे कि-'नाभि का भजन' अपने आप होने लग गया। थोड़ी देर के लिए सब कुछ अस्त-व्यस्त हो गया। कई परेशान- उदास जैसे भी हो गए। पंडाल में जगह-जगह पानी टपकने लगा......कहीं कोई गद्दे उठा रहा था कोई पतीला-बाल्टी रख रहा था। पर इस समय भी जैसे हर एक को भीतर में गुणातीत स्वरूपों से बल-धीरज तो मिल ही रहा था। एक उनके ही भरोसे पर सब बैठे-बैठे भजन, प्रार्थना कर रहे थे। दो तीन भक्तों ने फंक्शन पोस्टपोन करने की प्रार्थना भिजावई। पर, प.पू. गुरुजी ने स्पष्ट मना कर दी। इतना ही नहीं, बल्कि लिख कर भी भेजा कि- **'प.पू. काकाजी ने मुझे लिख कर दिया कि मैं तेरे पक्ष में रहूँगा और.....हमेशा रहे हैं। सो विश्वास किसे रखना है कि महाराज हमारी favour ही कर रहे हैं? हमें या इन स्वरूपों को?'** दूसरी और आश्चर्य की बात यह थी कि आसन पर विराजमान प.पू. गुरुजी तो कुछ रहस्यमयी हंसी से हंस रहे थे......बाद में प.पू. गुरुजी ने अपने प्रवचन में बताया कि सब सोचते होंगे कि आपकी पेरशानी से मैं खुश हो रहा था। पर, सच में तो तुम सब की सेवा महाराज को पहुँचाने की सेवा जो इंद्रदेव ने करी है, उसकी मुझे ख़ुशी है। अर्थात्-यदि उत्सव में यह अड़चन नहीं आई होती, तो हमें भीतर में एक गुदगुदी जरूर रहती कि ओहो ! हमने कितना अच्छा up to date

function किया। **इंद्रदेव ने असल में हमारी फेवर करी-हमें इस गुदगुदी से बचाया, मान के देवता को हमारी सेवा खाने नहीं दी।** अंग्रेजी में लिखा जाये तो-**ये ब्लेसिंगस इन डीसगाईझ ही थे।** करीब डेढ़ घंटे के बाद महाराज ने सभी का भजन-प्रार्थना स्वीकार करके बरसात बंद कर दी। धूप निकल आई-मौसम एकदम पलट-सा गया, जैसे कुछ हुआ ही ना हो। वैसे बरसात दौरान भी उत्सव तो धीरे-धीरे चल ही रहा था। स्टेज पर **प.भ. राकेशभाई** के कुशल संचालन में सभा शुरू हो चुकी थी। बरसात ने प्रोग्राम को थोड़ा आगे पीछे तो जरूर कर दिया था।

सर्वप्रथम सभा की शुरूआत प.पू. काकाजी को बेहद पसंद मैत्रीभाव का संकेत देते हुए बेज गुणातीत स्वरूपों को अर्पण करके हुई। छःसात युवकों ने स्वरूपों के सम्मुख स्टेज पर पंजाबी भांगड़ा करके आनंद व्यक्त करते हुए **'विजयदिन मनाए आज हम काकाजी का....'** भजन से अपनी प्रार्थना रखी। फिर प.पू. पप्पाजी ने प.पू. काकाजी व पू. गुरुजी का माहात्म्यदर्शन व एकरूपता बताते हुए आशिष वर्षा करके सबको अत्यधिक बल देकर फ्रेश कर दिया। प.भ. राकेशभाई, प.भ.एन. के. अग्रवालजी, प.भ. पुरी साहब ने प.पू. गुरुजी के प्रति अपने दिल के भाव व्यक्त किए। तत्पश्चात् हिन्दी भजन पुस्तिका **'नादसृष्टि'** का उदघाटन **पू. कोठारीस्वामिजी** के वरद् हस्तों हुआ। काफी समय से सभी हरिभक्त हिन्दी भजन की कैसेट व पुस्तक की माँग भी कर रहे थे। प.पू. गुरुजी की हीरक जयंती निमित्त ये दोनों चीजें स्मृति भेंट बन गई।

फिर, प.पू. काकाजी से विशेष रूप से जुड़े आत्मीय स्वजन **प.भ.विट्ठलदासभाई** ने सभी को प.पू.काकाजी की प्रतिभा के अद्‌भुत प्रसंग बता कर प.पू. काकाजी की स्मृति में लीन कर दिया और उसके बाद... दिल्ली के हरिभक्त खूब आतुरता से जिसकी प्रतीक्षा में थे-क्योंकि हर हरिभक्त ने प.पू.गुरुजी को पिछले तीन-चार महीने से देह, भूख, प्यास, नींद की परवाह किए बिना, दिन रात प.पू. काकाजी के पत्रों की पुस्तक के कार्य में एक क्लर्क की भाँति लगे हुए देखा था-उस हिन्दी पुस्तक **'ब्रह्मप्रवाह'**का उद्‌घाटन प.पू. काकाजी के परम स्नेही व अभिवादक एवं हमारे अतिथि विशेष **माननीय श्री सनत महेता साहेब** के वरद् हस्तों कराया......साथ ही उन्होंने अपनी अत्यंत विलक्षण शैली में प.पू. काकाजी के प्रति अपने भाव व्यक्त किए। सच में **उनके मन में प.पू. काकाजी के प्रभावशाली व्यक्तित्व की एक निराली ही छवि है।** प.पू. काकाजी के साथ विशिष्ट संबंध से जुड़े **मा. श्री एच. के. एल भगत साहेब** भी अब तक सभा आ गए थे। प.पू. गुरुजी से भी उन्हें विशेष लगाव है। उन्होंने भी अपने संबंध के बारे में बताते हुए बातें करी। फिर प.पू. काकाजी के पसंदीदा पात्र लाडले योगेश्वर **पू. भरतभाई** ने गुजराती भाषा में प्रकाशित **'ब्रह्मप्रवाह'** पुस्तक का अनावरण करते हुए सभी को उद्‌बोधित किया......

प.पू. गुरुजी ने ब्रह्मप्रवाह का यह संकलन प.पू. पप्पाजी के चरणों में अपर्ण करा है। इसके पीछे प.पू. गुरुजी की भावना सुन कर स्वरूपों के प्रति की उनकी अजोड़ दासत्व भक्ति का दर्शन सहज होता है कि **प.पू. काकाजी की बातों पर चलने की बात तो दूर रही पर हम उन बातों को अभी समझ तक नहीं पाये। प.पू. काकाजी के-रहस्यमयी गहराई लिए शब्दों के-उनके अभिप्राय को प.पू. पप्पाजी जैसी दिव्य विभूति ही समझा सकती है।** सो, इस भावना से यह संकलन प.पू. पप्पाजी को अर्पण किया है कि वे हमें इन बातों को समझा कर -हमें इन पर चलने का पवित्र बुद्धियोग व बल भी दें।

सभा मंडप में एकदम नीरवता थी। सब जैसे जगत को तो भूल गये थे। किसी को समय का तो जैसे ख्याल ही नहीं था इतने में तो सभा मंडप **'काका, तेरी कुर्बानी शब्दों में ना समाये, इतिहास गुणातीत समाज का तुम बिन लिखा ना जाए......'** भजन से प.भ. विनोदभाई, प.भ. राकेशभाई की वाणी में गूँज उठा। भजन के शब्द इतने अधिक मार्मिक थे कि सभी की आँखें आंसूओं से छलक गई। जिन्होंने प.पू. काकाजी को देखा है, उनका जीवन निहारा है, उनकी आंखें भीगना तो स्वाभाविक है। पर, **जिन्होंने प.पू.काकाजी को देखा ही नहीं उनकी भी आंखों में पानी आना साबित करता है कि वो परम हितकारी चेतना आज भी वैसे के वैसी ही हमारे करीब ही मौजूद है।** कई शहीदों के लिए आज गाये गीतों पर लोगों को हमदर्दी जरूर होती है, पर आँखे छलकती नहीं.....**इस उत्सव का यह नया ही करिश्मा था।** सभी इस भजन से प.पू. काकाजी की स्मृतियों में लीन हो गए थे और तुरन्त **प.पू. साहेब** ने आशिष प्रवचन किया, जिसमें प.पू. साहेब ने प.पू. काकाजी द्वारा समग्र गुणातीत समाज के लिए किए गए अनथक् परिश्रम व प.पू. गुरुजी के दिल्ली में किए कार्य को सराहा।

पूजन-हारविधि का भव्य कार्यक्रम तो बाकी ही था, सो यह कार्यक्रम शुरू हुआ..... हार विधि में सर्वप्रथम बच्चों ने

अपनी भावना को चॉकलेट-टाफी से बनाये अनिर्देश के मॉडल के अत्यधिक आकर्षित रूप में पिरोकर व्यक्त किया और प्रार्थना करी कि-'**हे गुरुजी ! हमारे जीवन में आपका स्थान ही प्रथम रहे.....**' तत्पश्चात् पू. स्नेहलस्वामी ने सतों की ओर से हाथ में माला लिए हुए भजन करता हुआ हार अर्पण किया, जो कि स्वयं कह रहा हो कि-'**हम सभी आपकी तरह ही हर प्रसंग पर भजन का ही उपाय लें......**।' पू. ऋषि ने साधक भाईयों की ओर से कृष्ण-अर्जुन की मूर्ति वाला हार प.पू. गुरुजी को अर्पण करके भावना रखी कि-'**हमारी कोई ताकत-लायकात नहीं, पर आप समर्थ सारथी मिले हो, तो आप जबरदस्ती भी हम से आपका जँचता करवा लेना।**' पू. नवीनभाई ने साधक बहनों की ओर से हवन कुंड का आकार लिया हार अर्पण करके यह प्रार्थना करी-'**गुरुभक्ति यज्ञ निमित्त हम हमारे हठ-मान-ईर्ष्या, प्रकृति -स्वभाव की आहुति इस यज्ञ में देकर प.पू. काकाजी-प.पू. गुरुजी के परिश्रम को सार्थक करें......**' पंजाब मंडल की ओर से प.भ.रमेश मास्टरजी ने सूर्य के आकार वाला हार अर्पण करते हुए प्रार्थना करी कि-'**जैसे पू. गुरुजी, प.पू. काकाजी का परिचय बने और सभी के दिल की प्रसन्नता प्राप्त की है- वैसे हम भी अपने वर्तन से आपका परिचय बनें।**' और....प.भ. मल्कानी साहेब ने गृहस्थ समाज की ओर से चाँदी का हार व मुकुट अर्पण किया....प.पू. काकाजी के साक्षात्कार की रजत जयंती पर हार व मुकुट पहनी हुई प.पू. काकाजी की एक खूब लुभावनी-सुन्दर मूर्ति है, जिसे देखकर भाभियों को प.पू. गुरुजी के लिए चाँदी का हार-मुकुट बनवाने की इच्छा हुई थी। तो, पू. दीदी से आज्ञा लेकर सभी ने अपनी थोड़ी-थोड़ी चाँदी देकर मिलजुल कर हार व मुकुट बनवाया और भावना व्यक्त करी कि-'**संबंध वालों को हम माथे का मुकुट मानें.....**' प.पू. गुरुजी ने इसे पहले प.पू. पप्पाजी को पहनाया। फिर वह प्रसादी का हार व मुकुट प.पू. गुरुजी को पहनाया गया.... प.पू. गुरुजी का हार व मुकुट पहने हुई मूर्ति तो '**भूलूँ मैं लाख....मधुर छवि ना भूलाऊं रे**' जैसे सभी के जीवन की चिरंजीव स्मृति बन गई.... कईयों की आँखों में तो यह दृश्य देख कर खुशी से आँसू भर आये... पू. ऋषि-जिसके कुशल नेतृत्व में सभी छोटे-छोटे बच्चों, युवकों, गृहस्थ भाईयों ने उमंग से सजावट की सारी सेवा की थी.... उस पर अपनी दिलीप्रसन्नता दिखाने **प.पू. गुरुजी ने प्रसादी का वह हार पू. ऋषि को पहनाया.... तो दूसरी ओर पू. दीदी के छुपे परिश्रम व प.पू. गुरुजी के प्रति की भक्ति से प्रसन्न होकर प.पू. पप्पाजी ने पू. ज्योति बहन द्वारा प.पू. गुरुजी की प्रसादी का मुकुट पू. दीदी को पहनवाया.... धन्य हो उनकी भक्ति !**

इसी दौरान मुंबई, विद्यानगर, हरिधाम के संतों व बहनों की ओर से, सांकरदा, शिकागो मंडल आदि के अनेक हरिभक्तों ने अपनी भावनाएं व्यक्त करने प.पू. गुरुजी को हार अर्पण किए। हार अर्पण के बाद प.भ. ओमप्रकाश अग्रवालजी-मुंबई ने दिल्ली गुणातीत समाज की ओर से सूर्य के चिन्ह का कार्ड अर्पण किया जिसमें प्रार्थना थी कि-'**जैसे आप सूर्य समान प.पू. काकाजी का आज परिचय बने-प्रतीक बने......प.पू. काकाजी द्वारा दिए आशीर्वाद 'तीनों सूर्य एक' करके साधुता की चरम सीमा प्राप्त की। हम भी प.पू. काकाजी व आपका परिश्रम सार्थक करें....ऐसी आशिष हीरक जयंती पर आप कृपा करके बरसाना......**'

**मुंबई-ताड़देव** के मुक्त समाज की ओर से **प.भ. हेमंत मर्चंट** ने प.पू. गुरुजी को कार्ड अर्पण किया व उस पर लिखी प्रार्थना तो हर एक को भीतर तक स्पर्श कर गई......कार्ड में उन्होंने काव्यात्मक शैली में प.पू. गुरुजी के पहले के व अब के जीवन की बहुत ही अच्छी तुलना करते हुए निम्न प्रार्थना करी है-

जिन्हें प्रश्न थे, वही आज उत्तर हैं,
जो चंचल थे, वो आज स्थिर हैं,
और लगते थे नादान वो गंभीर हैं।

जो देहाध्यासी थे, वे सावधान हैं,
जिन्हें दिशा ही नहीं थी, वो सब के निशान हैं,
जहां केवल बुद्धि ही थी, वहां समाधान है,
जहाँ समस्या थी, वहां समाधान है,
लगता था दुष्कर, वो आसान है।

जहां मेरा था, वहां हमारा है,
सिर्फ प्रभु के संबंध का ही ख्याल है,
इस कड़ाके की ठंड में एक मधुर उष्मा है।

जहाँ तर्क था, वहाँ स्वीकार है,
और केवल प्रभु का ही आधार है,
जहाँ बेचैनी थी, वहां हल है,
संबंधों को मुलायम करता आत्मीयता का बर्ताव है।

जहां शंका थी, वहां विश्वास है.,
जहां अंधेरा था, वहां रोशनी है,
जहां पहेली थी, वहां सूझ है,

और सबको शांति देती तसल्ली है,
जहां मज़ाक थी, वहां निर्दोष विनोद है,
सब को आनंद देता कोई दिव्य खेल है,
जहां शिला थी, वहीं दिव्य मूर्ति है,
सब के अन्तर में उजाला करता प्रदीप्त दीप है,
जहाँ शोर शराबा था, वहां पुकार है,
और उपेक्षा थी, वहां स्वागत है,
जो केवल अपने थे, वे आज सभी के हैं,
संतों और सेवकों के तो हैं ही,
पर.....दिव्य बहनों, बेटियों और भाभियों के भी हैं !
जहाँ शून्य था, वहां आकार है,
इस स्थान पर मंदिर-स्थावर और जंगम साकार है !
जो स्वप्न था, वो वास्तविक रूप है,
और जो संकल्प था, वो हकीकत बनी है,
जिसके प्रांगण में ही परम शांति का वास है,
वो मंदिर और वो साधु,
अखंड प्रभु का आवास है !

हे गुरुजी !
काकाजी के आप पनौते पुत्र हो,
और हमारे स्वजन परम लाडले हो,
इसलिए.....
**आपका सब कुछ.....**
**हमारे मन विशेष और महत्वपूर्ण है,**
स्वीकारो हमारी भावना....
जिसका यह छोटा-सा प्रतीक है।

***–ताड़देव मुक्त समाज के***
***प्यार भरे जय स्वामिनारायण।***

अभी हारविधि का कार्यक्रम चल ही रहा था कि अत्यधिक परिश्रम से बनी विशाल केक सभा मंडप में लाई गई। **अखंड भारत** के सांस्कृतिक नक्शे पर 'स्टीमर' आकार का केक बनाया था.....सभी उस केक को आश्चर्य से निहारते ही रह गये। **पू. निष्ठा दीदी** के साथ मिल कर अक्षरज्योति की बहनों ने लगातार तीन दिन और रात कर यह भव्य केक बनाई थी। केक द्वारा भावना दर्शाई थी कि-

**'अखंड भारत में हमारा जन्म हुआ, वह हमारा सौभाग्य है, क्योंकि इसी भूमि पर श्रीजी महाराज का अवतरण हुआ और उन्होंने गुणातीत परम्परा अखंडित रख दी.....उसी गुणातीत परम्परा के प.पू. काकाजी ने हमें एक स्टीमर के रूप में पू. गुरुजी दिए, जो हमें हमारे प्रकृति-स्वभाव से परे कर देंगे....'**

प.पू. पप्पाजी, प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी, प.पू. साहेब, प.पू. दिनकरभाई, प.पू. कोठारीस्वामिजी, प.पू. गुरुजी, प.भ. मल्कानी साहेब ने मिल कर यह केक काटी। एक ओर प.पू. दिनकरभाई happy birday to dear Guruji की धून्य आनंद में गा रहे थे, तो दूसरी ओर स्टेज के नीचे युवकों का समुदाय आनंद में झूम कर नाचने लगा था। दिव्यानंद में सब झूम गये....केक कटिंग की विधि के बाद प.भ. राकेशभाई ने प.पू. गुरुजी पर विशिष्ट रूप से बनाया भजन-'**कमाल है गुरुजी आए मेरे जीवन में.....**' ऐसा गाया कि सारी सभा मानो राकेशभाई के पीछे खींची गई।

अब बारी थी प.पू. गुरुजी की आशिष वर्षा की-जिसके लिए सभी अत्यन्त उत्सुक थे.......प.पू. गुरुजी जब बोले कि तीन बज गए..... तब तो सब का ध्यान समय की ओर गया। मानो सब को जैसे इस दिव्य दर्शन में भूख-प्यास की सुध-बुध ही नहीं रही थी। पंडाल पूरा भरा था, पर किसी बच्चे तक के शोर की आवाज़ नहीं थी। ऐसा लग रहा था कि यह उत्सव यूं चलता ही रहे तो। किसी का सभा मंडप में से उठने का जैसे मन ही नहीं हो रहा था। प.पू. गुरुजी की आशिष वर्षा में तीन-चार महीने से निरन्तर सेवा में लगे सेवकों के प्रति की उनकी अत्यधिक आंतरिक प्रसन्नता का दर्शन हो रहा था। प.पू. गुरुजी की प्रसन्नता पाने का ही तो सेवकों का निशान था....

समय के अभाव को देखते हुए कार्यक्रम को छोटा करने की कोशिश की, पर तब भी.... इसके बाद एक बिल्कुल नई वराईटी के रूप में राष्ट्रीय गान-'**जन गण मन**' पर आधारित विशिष्ट रूप से प.पू. गुरुजी की हीरक जयंती निमित्त बनाई प्रार्थना-'**हीरक जयंती पर हे भगवन् ! हम पर अनुग्रह कर दो...**' दिल से करते हुए पू. राकेशभाई, पू. विनोदभाई, पू. ऋषि ने समूह गान गाया। यह दृश्य भी सभी को अंतर तक छू गया क्योंकि प.पू. गुरुजी तो एक छोटे बच्चे की भाँति हाथ जोड़कर खड़े थे। उनके चेहरे पर तनिक भी आभासमात्र नहीं था कि आज के इतने बड़े उत्सव के हीरो तो वह हैं। स्वअस्तित्व, बड़पन्न लेशमात्र भी उनको छू तक नहीं गया था और.....अबोध बालक की तरह प्रार्थना करती हुई उनकी वह सौम्यमूर्ति देखते हुए **भूतपूर्व प्रधानमंत्री मा. श्री अटलबिहारी बाजपेयीजी** की कविता की निम्न पंक्तियाँ याद आ जाती हैं कि–

'......सबसे अलग-थलग
परिवेश से पृथक,
अपनों से कटा-बँटा

शून्य में अकेला खड़ा होना,
पहाड़ी की महानता नही,
मज़बूरी है।
ऊँचाई और गहराई से
आकाश - पाताल की दूरी है।
जो जितना ऊँचा,
उतना ही एकाकी होता है,
हर भार को स्वयं ही ढोता है,
चेहरे पर मुस्कानें चिपका,
मन ही मन रोता है।
**जरूरी यह है कि**
**ऊँचाई के साथ विस्तार भी हो,**
जिससे मनुष्य
ठूँठ सा खड़ा न रहे,
**औरों से घुले-मिले,**
**किसी को साथ ले,**
**किसी के संग चले।**
भीड़ में खो जाना,
यादों में डूब जाना,
स्वयं को भूल जाना,
अस्तित्व को अर्थ,
जीवन को सुगन्ध देता है.......
न वसंत हो, न पतझड़,
हो सिर्फ ऊँचाई का अंधड़,
मात्र अकेलेपन का सन्नाटा।
**मेरे प्रभु !**
**मुझे इतनी ऊँचाई कभी मत देना**
गैरों को गले न लगा सकूँ
इतनी रुखाई कभी मत देना।

**आश्चर्य यह था कि प्रार्थना के समय हम सब के शिरछत्र होते हुए भी अत्यधिक सरलता के स्वरूप प.पू. पप्पाजी भी खड़े हो गये थे। साधुता की यह कैसी चरम सीमा होगी ना** ! सभी गुणातीत स्वरूपों व हरिभक्तों ने भी खड़े होकर ही यह प्रार्थना की और आनंद, उमंग व उल्लास के वातावरण में हीरक जयंती सभा का विसर्जन हुआ। सभी के मुख पर अनोखा आनंद छाया था...... सब 'अक्षरपात्र' की ओर प्रसाद लेने गए।

कहने मात्र के लिए यह उत्सव भले पूरा हुआ, पर इस उत्सव में भाग लेने वाले छोटे से बड़े हर एक व्यक्ति के दिलो-दिमाग पर यह अमिट यादगार बनकर छा गया, क्योंकि उत्सव की समाप्ति के बाद सब हरिभक्तों के दिल से निकले उद्गार इस बात का स्पष्ट प्रमाण दे रहे थे।

**शिकागो** से प.पू. दिनकरभाई के साथ आए **पू. नयना दीदी** बोल उठे कि **'अहो हो यह आनन्द शब्दों में कैसे explain करें? क्योंकि इस उत्सव में आकर तो हमें inner happiness का एहसास हुआ है.....'**

**मुंबई** से आए **पू. नीला भाभी** पुरोहित भी कह उठे-**'यह उत्सव मेंआकर काकाजी की स्मृति ताजी हो गई ! सच में गुरुजी ने यहां अनोखे समाज का ही निर्माण किया है......'**

लुधियाना-**पंजाब** से आए **प.भ.कमल खुराना की साली साहिबा** बोली कि- **'इससे अलग भी भला स्वर्ग की कल्पना की जा सकती है?'**

**दिल्ली के प.भ. लालाजी के लड़के प.भ.मक्खन लालजी बोले-'53 साल की मेरी उम्र में मैंने तो ऐसा भक्तिभाव भरा उत्सव नहीं देखा.....सच में unforgetable!'**

वृहद गुणातीत समाज से खूब करीब से जुड़े व सभी के आत्मीय **प.भ. विठ्ठलदासभाई (आणंद)** ने उत्सव के बारे दिल के उद्गारों में लिखा कि-**'उत्सव में बहुत ही आनंद आया। प.पू. काकाजी की स्मृतियों से भर कर तीनों दिन जो उत्सव किये, वह स्मृति हमेशा ताजी रहेगी। वहां के मुक्तों के भाव-उत्साह व उमंग भीतर से इतनी गहराई लिए हुए थे कि शब्दों में बयान करना नामुमकीन है..... आपके परिश्रम को धन्यवाद है। बहुत कठिन परिस्थितियाँ होते हुए भी खूब ही धैर्य से भक्ति की जो चिकनाई वहाँ आप लाए हो, उसे शाब्दिक आभार से कितना ही व्यक्त करूं तब भी कम है।'**

सभी ने इस उत्सव में ऐसी भावना से सेवा करी है कि किसका नाम लिखें और किसका नहीं? प.भ. राकेशभाई तो पिछले कई दिनों से सेवा करने मंदिर ही रुकने आ गये थे। अन्य कई सेवाओं के साथ-साथ भजन बनाना, भजन की प्रेक्टीस करना व सभा संचालन का कार्य भी उन्होंने संभाला जो प.पू. गुरुजी के प्रति उनके अत्यधिक समर्पण का सम्यक् परिचय देता है। इस उत्सव में **पू. स्नेहलस्वामिजी** व **प.भ. मजुमदारजी** के साथ पी.ए. system व recording वगैरह की सेवा लूटने **महाराजालाल एण्ड सन्स के प.भ. माथुर साहेब** ने पूरे-पूरे दिन यहीं खड़े रहकर स्वयं के भक्ति भरे दिल-आत्मीयता एवं अपनेपन का परिचय दिया, जबकि उनके पिताश्री उत्सव के छः दिन पहले ही अक्षरवासी हुए थे। दूसरी ओर प.भ. कौशिकभाई, प.भ.कमल दालिया, प.भ. अनिलजी, प.भ. राजकुमार शर्मा ने साथ मिल कर अपनी शक्तिभर

तन-मन-धन से जो सेवा करी उसके लिए शब्दों से आभार नहीं हो सकता....

वैसे देखा जाए तो दिल्ली का समाज छोटा-सा ही है। मुट्ठीभर सेवकों ने इतना विशाल कार्य उठा लिया, लेकिन इन मुट्ठीभर सेवकों के दिल में प.पू. काकाजी व पू. गुरुजी के प्रति मरे मिटने की भावना थी कि ऐसा अमूल्य मौका हमारे जीवन में कहां से? **अक्षरज्योति की बहनों** व **गृहस्थ भाभियों** ने भी प.पू. गुरुजी के प्रति भक्ति अदा करने में कहीं कसर नहीं छोड़ी। धर्मशाला पर तैनात सेवकों और रसोई विभाग की सेवा वालों ने सभा मंडप तक देखा नहीं-धन्य हो उनकी सेवा-भक्ति और सूझ को।

और इससे भी अधिक, यह सेवा हर एक ने एक दूसरों की बातों को-सुझाव को स्वीकार करके करी जिससे स्पष्ट ख्याल आता था कि-**क्रियायोगों की अपेक्षा आपसी सुहृदभाव बढ़ाकर स्वरुप की प्रसन्नता पा लेने की भावना से ही सेवा करी गई।** साथ ही यह सारी सेवा केवल अपना कौशल दिखाने या कोई टोकाटाकी ना करे-नुक्स ना निकाले, सो अच्छी करनी है इस भावना से नहीं, बल्कि-**प.पू. गुरुजी को सब कुछ खूब अच्छा ही पसंद है, सो-खूब up to date करके प.पू. गुरुजी को प्रसन्न कर लेने करनी है-इस भावना से करी थी।** तभी तो हर एक को सब कुछ खूब छू भी गया.....

जीवनभर भूली ना जा सके-हीरक जयंती की ऐसी अद्‌भुत निराली स्मृति के रूप में 2 फरवरी की शाम को अम्बा थियेटर में हिन्दी चलचत्रि '**सरदार**' को देखने का विशेष आयोजन किया था। **गुणातीत समाज में पहली बार** प.पू. पप्पाजी व दिव्य स्वरूपों के सान्निध्य में बैठकर संतों, भक्तों, बहनों, गृहस्थों ने **इस प्रकार यह दिव्य आनंद किया** कि जो सच में अविस्मरणीय ही है। सत्संग के पुराने जोगी जिन्होंने प.पू. काकाजी के जीवन को अत्यधिक नज़दीक से देखा था, उन्हें **सरदार देखकर सहज ही प.पू. काकाजी द्वारा हमेशा पर्दे के पीछे रहकर किये कार्य की जीवन पद्धति याद आ गई और उन सब की आँखें भीग गई।** सरदार अखंड भारत के केवल स्वप्न दृष्टा ही नहीं, बल्कि बेजोड़ सृष्टा भी बन कर रहे। वैसे ही **स्वामिनारायण संप्रदाय की अखंडिता और गुणातीत समाज की भावात्मक एकता के लिए प.पू काकाजी जीवन के अंतिम क्षण तक तत्पर और प्रयत्नशील रहे।** उसी हेतु उन्होंने अपने आपको याहोम भी कर दिया। **सांस्कृतिक कार्यक्रम** के रूप में **सरदार चलचित्र का आयोजन अपने आप में एक नवीन ही घटना व अनोखी स्मृति थी।**

'गुरुभक्ति यज्ञ' वैसे गुरुजी की जयंती का उत्सव था। पर, प.पू. गुरुजी की पहले से ही ऐसी तीव्र इच्छा रही कि यह उत्सव यदि मनाया भी जाये, तो प.पू. काकाजी के प्रति भक्ति अदा करने के रूप में ही मनाना। दिल्ली के मुक्त समाज ने भी प.पू. गुरुजी की इस भावना को मन ही मन लाखों प्रणाम किये और इस इच्छा को सिर माथे पर चढ़ा कर हर एक क्रिया दिल की सच्चाई से उसी रूप में करने की भरसक कोशिश करी क्योंकि प.पू. गुरुजी तो प.पू. काकाजी द्वारा ही उत्तर भारत के समाज को दी अनमोल भेंट रूप हैं और..... उत्सव में जो भी आये वे सभी असमंजस में थे कि यह प.पू. गुरुजी की हीरक जयंती मना रहे हैं या प.पू काकाजी का कोई उत्सव है? कई तो बोले भी कि-प.पू गुरुजी की जयंती से अधिक यह तो प.पू काकाजी का ही कोई उत्सव बना है..... दिल की सच्चाई की यह फलश्रुति थी। चारों ओर काकाजी-काकाजी का ब्रह्मनाद गूँज रहा था.....कण-कण काकाजी-काकाजी पुकार रहा था......जैसे कि प.पू गुरुजी हमेशा कहते हैं कि-**हमारा जो भी कुछ अस्तित्व है वो काकाजी के कारण है।** सभी को प.पू. काकाजी की हाज़िरी का आभास भी हो रहा था....

**3 फरवरी.....प.पू. काकाजी का साक्षात्कार दिन......**दिल्ली मंदिर का पाटोत्सव दिन और सोने पे सुहागा कि आज इसके साथ ही प.पू. गुरुजी की हीरक जयंती का दिन भी जुड़ गया। गुलाबी व सफेद गुब्बारों से नए रूप में सुसज्जित हुआ अनिर्देश भक्तों व सड़क से आते -जाते हर का मन लुभा रहा था। simple & sober ढंग से किया यह सुशोभन कुछ दिव्य व अनोखापन लिए हुए था। ऊपर के हॉल में श्रीजी महाराज ने आज सफेद सुनहरी पाद्य व दुपट्टा धारण किया था। सभी गुणातीत स्वरुपों के विराजमान होते ही **पू. वशीभाई, पू. दासस्वामी,पू.शांतिभाई द्वारा महापूजा शुरु हुई।** पू. वशीभाई की महापूजा से तो कोई भी अपरिचित नहीं। महापूजा के बाद गुणातीत स्वरुपों ने पाटोत्सव विधि करके मूर्तियों को हार पहनाये। आज वैसे सभा का कोई पूर्व आयोजन नहीं था पर, अक्षरधाम की पूरी कैबिनट विराजमान थी। सो, गुणातीत स्वरूप हम पर आशिष बरसाए बिना भला कैसे रह पाते? छोटी सी, पर दिलों को छू जाती सभा हुई। सभी को भीतर में एक अलग ही दिव्य आनंद की अनुभूति हुई। सब बोल उठे कि-1 और 2 फरवरी तो अनोखी थी ही, पर 3 फरवरी तो वाह ! वाह ! पश्चात् गुणातीत स्वरुपों के पीछे संतों,युवकों, बहनों, मुक्तों का विशाल समुदाय नाचते-गाते-बजाते, आनंद से झूमते हुए'**अक्षरज्योति' की जमीन पर शिलान्यास विधि**

करने पहुँचा और....1994 में प.पू. काकाजी के अमृतपर्व पर निकाली गई शोभायात्रा का दृश्य सब की आँखों के सामने उभर आया। अक्षरज्योति की जमीन पर पहुँचकर प.पू. बेन, प.पू. ज्योति बहन, पू. प्रेम बहन, पू. आनंदी दीदी, पू. मम्मी बा, पू. योगिनी बहन व निजी गृहस्थों ने प.पू. काकाजी का अस्थि कलश, प.पू. बा का अस्थि कलश व तीर्थ स्थानों की रज व ईटें पूजन करके रखीं। **इस प्रकार प.पू. काकाजी द्वारा उठाये बहनों के भगवान भजने के क्रांतिकारी कदम की उत्तर भारत में भी शुभ शुरुआत हुई.....**

प.पू. बेन तो जिस फूर्ती व उमंग से ईंट रखने नीचे उतरे तब ऐसा ही लगा कि-**स्वयं प.पू. बा. अपने लाडले मुकुंद द्वारा उठाये कार्य पर प्रसन्नता बताने प.पू. बेन में प्रवेश होकर आ गई हों।** आज तो सभी भक्त, बहनें, भाभियों के आनंद की मानो सीमा ही नहीं थी.....सभी खुशी से झूम रहे थे....अरे ! प.पू. बेन जिन्हें सब ने wheel chair पर आते देखा था... वो **८० साल की उम्र होते हुए भी इतनी अधिक उमंग में आकर नाचे कि सभी आश्चर्य में रह गए कि क्या ये वही wheel charir ली हुई बेन हैं?** आज भी किसी को समय की सुधबुध नहीं रही। लगभग ढाई बजे के करीब सभी 'अक्षयपात्र' में प्रसाद लेने पधारे। यूं अत्यधिक हर्षोल्लास, भक्तिभाव, महिमा व दिव्यता के वातावरण में तीन दिन का उत्सव पूर्ण हुआ।

3 फरवरी तो गुणातीत समाज के लिए ऐतिहासिक विजयदिन ! इस दिन **प.पू. काकाजी अपने पनौते पुत्र को आशीर्वाद दिए जाने की प्रतिति कराये बिना कैसे रह पाते?** आश्चर्य की एक घटना घटी कि 3 फरवरी की सायं प.पू. पप्पाजी और मंडल स्वामिनारायण फार्म हाऊस के लिए by car जा रहे थे, तो रीज रोड पर चलती गाड़ी से ही अचनाक दो नोट कहीं से उड़ कर पड़े दिखाई दिए..... गाड़ी रुकवा कर देखा तो ठीक '**60 रुपये**' यानि—एक पचास का नोट व एक दस का नोट था ! प.पू. पप्पाजी ने बताया कि—**प.पू. काकाजी ने मुकुंद की हीरक जयंती पर आशीर्वाद रूप 60 रुपए चिदाकाश में से भेजे हैं.....** जबकि प.पू. पप्पाजी ऐसी चीज़ों में कभी विश्वास नहीं करते। पर, यह तो खुली आंखों देखी—अनुभव करी घटना बनी थी। प.पू. पप्पाजी ने उन दोनों नोटों पर आशीर्वाद लिख कर प.पू. गुरुजी को दिए !

3 फरवरी की सायं मुंबई व शिकागो के हरिभक्त हरिद्वार जाने निकल गए..... 4 फरवरी की सुबह प.पू. दिनकरभाई, पू. महेन्द्र बापु पंजाब विचरण के लिए निकल गए.... प.पू. गुरुजी तो सभी भक्तों को जैसे ढेर स्मृतियां देने में लगे थे। उत्सव से वो तनिक भी थके जैसे नहीं थे—एकदम उमंग में व हमेशा fresh ही दिखाई पड़ते थे और...... तभी 6 फरवरी की सुबह तो मुंबई, शिकागो व दिल्ली के भक्तों को बख्तावरपुर **प.भ. बुधरामजी के यहां** भावपूर्ण हृदय से परोसा नाश्ता कराते हुए प.पू. काकाजी के प्रसादीस्थल का दर्शन करवाने **कुरुक्षेत्र–ब्रह्मसरोवर** ले गये। वहां धून्य-भजन आदि कर के सभी को खूब आनंद करवाया। वापिस आते हुए रात को अभी-अभी ही सम्पर्क में आए **पानीपत** के **प.भ. पुनीत भईया** के यहाँ सभी ने प्रसाद लिया। प.भू. पुनीत भईया व परिवार के चेहरे पर प.पू. गुरुजी व भक्तों के आने की खुशी समाती नहीं थी।

**7 फरवरी** की सुबह प.पू. काकाजी के स्मृति दिन निमित्त प.पू. गुरुजी ने करीब ढाई घंटे का जपयज्ञ कराया। गुजरात एपार्टमेन्ट के भक्तों की भावना के वशीभूत होकर प.पू. पप्पाजी के दिव्य सान्निध्य में **गुजरात एपार्टमेन्ट में 'भजन संध्या'** करी गई... सभी ने प.पू. काकाजी की आशिष पाकर स्वयं को धन्य माना और प्रसाद लिया...

८ फरवरी को प.पू. दिनकरभाई, शिकागो व मुंबई के हरिभक्तों ने भावभीनी विदाई ली... इस उत्सव की एक विशेषता या आश्चर्य यह था कि बाहर से पधारे **सभी के सभी मुक्त आँखों में आंसू भर कर विदाई लेकर गये।** इस प्रकार 'गुरुभक्ति यज्ञ' उत्सव का समापन हुआ, लेकिन तब भी जिस तरह सभी के दिल में इसकी स्मृतियाँ घर कर गई, उसे देखते हुए गीता का श्लोक याद आ जाता है—

**'तच्च संस्मृत्य संस्मृत्य......**
**विस्मयो मे महान.... हृष्यामि च पुनः पुनः।'**

अर्थात्-'पुनः पुनः स्मरण करके महान् आश्चर्य होता है और मैं बार-बार हर्षित हो रहा हूँ।'

इसी प्रकार प.पू. काकाजी के साक्षात्कार दिन की स्मृति कहो या प.पू. गुरुजी की हीरक जयंती का उत्सव..... अभी भी, कहीं भी आपस में सब मुक्त मिलें या फोन वगैरह भी आए, तो एक ही वाक्य बोल उठते हैं कि **—अहो ! कल्पना से परे का उत्सव था।** बस याद किया करें.... सभी को ऐसी स्मृतियाँ मिल गई हैं कि जिन्हें बार-बार याद करके भीतर का आनंद समाता नहीं है.... और यही वजह है कि अभी इन स्मृतियों को बंद करने के लिए कलम को भी विराम नहीं मिल रहा है.... कमा..... ल है ना !

# 'गुरुभक्ति यज्ञ' प्रसाद.......

## प.पू. पप्पाजी

*( 1 फरवरी—हरा अनुग्रह शिविर, सुबह )*

महाराज सर्वोपरि पुरुषोत्तम नारायण–प्रकृति पुरुष से पर के स्वरूप। प्रकृति पुरुष से पर के स्वरूप ने जाना कि कोई साधन काम आने वाला नहीं... सो, महाराज और गुणातीत दोनों ने तय किया कि जो कोई सामने आए, जो कोई भिड़ जाए उसे देहभाव से परे करके ब्रह्मभाव करा देना है। ब्रह्मभाव करके परब्रह्म में जोड़ देना... जो भी गुणातीत स्वरूप-भगतजी महाराज, जागास्वामी, अदा, शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज पधारे उन्होंने यही रास्ता पसन्द किया। हम सब योगीजी महाराज, शास्त्रीजी महाराज और निर्गुणस्वामी के ऋणि हैं क्योंकि–व्यापक स्वरूप में संत, युवक, बहनें और गृहस्थों को ऐसे गुणातीतभाव में रहते कर दिए जिससे कि जो कोई उनके संबंध में आए उसका वन-वे-ट्रॉफिक रख कर ही कल्याण करें। निंदा से या वंदना से संबंध हुआ ना? तो भी उसका कल्याण ! क्योंकि मूर्ति तो प्रकृति पुरुष से परे की है। इस प्रकार कल्याण योजना शुरू करी। काकाजी, योगीजी महाराज ने भी वैसी रीत अपनाई और योगीजी महाराज, काका और बा को देखें तो संत–ढेर सारे-ऐसे प्रमुखस्वामी से मिलाकर महंतस्वामी, डॉ. स्वामी, त्यागवल्लभस्वामी, हरिप्रसादस्वामी, अक्षरविहारीस्वामी और गुरुजी जैसे संत तैयार किए। साहेब, अश्विनभाई, सनंदभाई, रतिभाई, शांतिभाई जैसे नेकटाई साधु। ऐसे ही बहनें, बा, बेन जैसे ज्योति बहन, तारा बहन, हंसा बहन, देवी बहन तैयार किए और ऐसे दिनकरभाई जैसे गृहस्थ तैयार कर दिए......

सत्व, रज या तम तीन गुण में सारी दुनिया घूमती है। सामने आए और दृष्टि पड़े उसे देहभाव से परे करके ब्रह्मभाव में कर दें यह लीलो अनुग्रह.... जो सामने आए वो लायक। 1952 से देखा है कि योगीजी महाराज ने सत्वगुणी, रजोगुणी या तमोगुणी हो–सभी को अक्षरधाम में रहता कर दिया। तो, अहंता-ममता निकालनी है। रजोगुणी और तमोगुणी अहंता-ममता easily निकाल सके; क्योंकि उसे ख्याल पड़े कि मेरा दोष है। जबकि सत्वगुणी को अहंता निकालने में मुश्किल पड़े, क्योंकि वह सभी में दोष देखता रहता है....

योगीजी महाराज को पूछा कि आप इतने बड़े कैसे हो गए? योगीजी महाराज ने कहा कृष्णजी अदा की कृपा से शास्त्रीजी महाराज के अल्प संबंध वाले की सेवा शास्त्रीजी महाराज का स्वरूप मान कर कर ली। सो, शास्त्रीजी महाराज की मुझ पर दृष्टि पड़ गई और मैं सुखी हो गया। **बड़ी से बड़ी बात यह कि अभी जो सत्पुरुष गुरुजी हैं–वो काकाजी ने असाधारण कृपा करी और गुरुजी जैसे दिल्ली में बख़्शिश रूप में दिए.....**

खूब आनंद की बात है... संबंध में जो कोई आए–दिल्ली के संबंध में, मंदिर के संबंध में जो कोई आए, निंदा करके या वंदना करके उन सब को स्वामी सच में आध्यात्मिक समता करवाते हैं और उन सब को देहभाव से परे करके ब्रह्मभाव कराके परब्रह्म में जोड़ दें... गुरुजी गुणातीतभाव में रहते हुए और दोष देखे बिना उसे अहंता-ममता से रहित करके परब्रह्म में अपने संकल्प से, अपनी कृपा करने–ऐसी अलग-अलग प्रकार की सेवा करा के प्रसन्न होने के लिए-प्रसन्न होकर आशीर्वाद दें.....

*( 1 फरवरी—हरा अनुग्रह शिविर, सायं )*

गुरुजी की सुवर्ण जयंती मनाने आप सब इकट्ठे हुए हैं। सुवर्ण जयंती या हीरक जयंती वह शंका थी। हीरक जयंती तो मेरी मनाई जा रही है। मेरी हीरक जयंती और गुरुजी की सुवर्ण जयंती मना रहे हैं... बापा कहते हैं–जिस गुरु में जुड़े हो उसकी अनुवृत्ति की भक्ति कर लें, तो हमें उसके जैसे गुण प्राप्त हों....

गुरुजी बहुत बुद्धिशाली थे। दिल्ली में कैसे हालात हैं, वह उसे पता था। वह सब ख्याल में न लेकर, काकाजी ने कहा और दिल्ली आकर कुएँ में छलांग लगाई। काकाजी के प्रिय पात्र बन गए–जैसे अर्जुन कृष्ण का था। यूं काकाजी के आध्यात्मिक वारिसदार बन गए और काकाजी ने सारा काम किया। सत्पुरुष आज्ञा देते हैं, तो साथ में मूर्ति देते हैं। हमें तो हाँ ही करने की बात है.... काकाजी के बहुत शिष्य थे। बहुतों का लगाव था। लेकिन काकाजी की नज़र गुरुजी पर ठहरी; क्योंकि असाधारण लगाव बुद्धिपूर्वक और असाधारण लगाव में दिल और दिमाग बंद हो गया व पसंद हो या ना हो, व्यवस्था हो या ना हो लेकिन दिल्ली आए। सच में उस समय श्रद्धा रखनी बहुत मुश्किल बात। ज़रा-सी अश्रद्धा, अविश्वास या शंका करी नहीं। काकाजी ने कहा था कि–हो जाने वाला है... अभी देखते हैं कि गुरुजी काकाजी में लय और लीन हो गए। काकाजीमय हो गए। काकाजी में खो गए और काकाजी ने भी उन्हें ऐसे ही जवाब दिया। अभी गुणातीत समाज-अक्षरधाम के समाज का दर्शन कर रहे हैं। धन्यवाद है गुरुजी को कि गुरुभक्ति गुरुजी ने करी.... अब गुरुजी को प्रसन्न

करने के लिए उनके आगे दिल और दिमाग दोनों बंद करके वे जो कहें वो दो हाथ जोड़ कर करें। तो, गुरुजी जैसे सुख भोगते हैं वैसे काकाजी जैसा सुख भोगते हो जाए यह हकीकत है। **करते ही हैं हम, लेकिन थोड़ी रिज़र्वेशन होगी। अपनी जो वृत्ति हो, अपनी मान्यता हो, दृढ़ हुई मान्यता हो–वह रख कर फिर गुरुजी की आज्ञा पालते हैं।** आज गुरुजी का सुवर्ण जयंती महोत्सव मना रहे हैं। गुरुजी को स्वरूप मानते हैं, निर्दोष भी मानते हैं, लेकिन यथार्थ स्वरूपनिष्ठा गुरुजी के प्रति हो जाए–जिससे कि गुरुजी यथार्थ पहचाने जाएं। **गुरुजी ने यह मंदिर किया, सेवा करी या जो किया वह सच में उनकी पहचान नहीं।** उनकी पहचान **उनके जैसे गुण आ जाए वह है।** अभी जो मान्य स्वरूप हैं उन्होंने योगीजी महाराज को यथार्थ पहचाना...... उनके जैसे गुण प्राप्त कर लिए। योगी स्वरूप सबको कहते हैं। अखंड भगवानमय जीवन वे जीये हैं। अपना सर्वस्व स्वरहित–थोड़ा भी रीज़र्वेशन रखे बिना लय और लीन हो गए.....

काकाजी पर ऐसे ही योगीजी महाराज, शास्त्रीजी महाराज प्रसन्न नहीं हुए.... नंदाजी के बंगले में दर्शन करने काकाजी गए, उस समय काकाजी को क्लीयरिंग फोरवर्डींग के लिए परमिट लेना था केन्द्र सरकार के लिए। बैंक ने कहा कि 5 लाख की गारंटी चाहिए। उस गारंटी के लिए थोड़े पैसे काकाजी ने नेशनल बैंक में आगे-पीछे से लाकर इकट्ठे करके रख रखे थे और शास्त्रीजी महाराज ने कहा-दादु 51,000 चाहिए। उस समय क्रीटीकल पल थी कि या तो L.C. खोले तो कंट्राक्ट मिले। कंट्राक्ट मिले तो आगे व्यापार चले। ऐसा था.... लेकिन सोनाबा का कहना पड़े। उन्होंने हां करी और 51,000 दिए व एक छलांग लगाई। 51,000 कोई बड़ी वस्तु नहीं–अभी तो लाखों की सेवा करते हैं कई। लेकिन तक की उस समय करी। एक तरफ कैरियर था और दूसरी ओर युवक के रूप में थे दादुभाई.... कंट्राक्ट मिले उसके लिए तो प्रयत्न करते थे और आशीर्वाद मांगते थे। पर, शास्त्रीजी महाराज रखते नहीं।ये सत्पुरुष जितना लेते हैं उतना दे देते हैं। पर हमें विश्वास नहीं आता। जैसा गुरुजी ने कहा ना? कि–श्रद्धालु नास्तिक। इस तरह की अश्रद्धा रहती है कि–नहीं करें तो? वगैरह... दादुभाई ने 51,000 करके दिए और वहां बैंक में गए तो बैंक ने बिना पैसे L.C. खुलवा दी और काकाजी का काम अच्छा शुरू हुआ व कंट्राक्ट मिलने लगे। मतलब यह कि–ऐसे गुरुजी ने काकाजी का परिश्रम देखा... अनादि पुरुष ही हैं.....

गुरुजी काकाजी के चैम्बर में बैठे थे... गुरुजी बहुत सावधान। मैं भी चैम्बर में बैठे-बैठे वॉच करूं। काकाजी और गुरुजी दोनों का चलता था.... एड्मीशन कराना था। तो काकाजी ने कहा मैं जाऊं? काकाजी आपको जाना हो तो जाओ, लेकिन कोई पॉलीसी की–आपके यह करो और मैं साधु हो जाऊं, इस बात में माल नहीं। काकाजी बोले मैं तुझे साधु होने नहीं कहूंगा। मुझे तेरा काम करना है। पर आखिर, काकाजी और बा के लगाव से दिलीपभाई साधु बने। इतनी चंचल प्रकृति कि पल भर बैठ ना सके। उसमें से बापा के वचन से साधु हुए। अभी तो कितने सॉबर–आध्यात्मिक समताभरी निर्दोषबुद्धि रखते हुए व गुणातीत समाज में काका के विश्वास से काका के लड़के बने और काका ही काम कर रहे हैं। **ऐसे के ऐसे काका के जैसे ही सुख भोगते हो जाएं, यही अंतर की प्रार्थना और आशीर्वाद ! गुरुजी ने माँगा कि काकाजी जैसा-जैसा-जैसा ही सुख आना चाहिए।** हम सब तो कहते ही हैं काका स्वरूप। क्योंकि यहां दिल्ली में काम किया। बाह्यदृष्टि से यह सब यूं विचार करेंगे। पर, आंतरिक रूप से अखंड 24 घंटे काकाजी को–**काकाजी साक्षात् ब्रह्मस्वरूप थे–व्यापक, नियंत्रक, प्रेरक वे ब्रह्मस्वरूप** और यही गुरुजी मानते हैं व्यापक में। तो, ऐसे **काकाजी की तरह सहज लीला देखते हो जाएं–** यही अंतर की प्रार्थना और आशीर्वाद !

### *( 2 फरवरी—हीरक जयंती की सभा )*

काकाजी का आज विजय दिन मना रहे हैं। गुरुजी की सुवर्ण जयंती मना रहे हैं। इंद्र भी आज स्वागत करने और मनाने के लिए पधारे हैं। हम सब ने उसका स्वागत किया। शूरवीरता काका का मूलभूत सिद्धांत। पू. काकाजी को चिरंजीव करने गुरुजी, विज्ञानदास, दिनकरभाई, बापु, भरतभाई वगैरह वारिसदार–काकाजी के आध्यात्मिक वारिसदार पके। यह काकाजी का विजय दिन है.... अपने जैसे साधुस्वरूप पकें–तैयार करे वह गुरु का विजय दिन है। काकाजी को देखें तो काकाजी पहले से ही–सामने से विरोध में ही चले.... गुरुजी को धन्यवाद कि दिल्ली आए...... मूर्ति के बल से लड़े और इतने सारे अक्षरमुक्त तैयार किए। धन्यवाद है ! देहभाव छोड़ना मुश्किल है, देहभाव से अधिक कीर्ति वगैरह छोड़ना मुश्किल और गुरुजी को सच में काकाजी ने जो कार्य किया..... **काकाजी तो सर्वव्यापी थे।** शिकागो में जाकर ऐसे का ऐसा मंडल बनाया। मुंबई में भी ऐसे के ऐसे सत्संगी तैयार किए। काकाजी के स्वभाव के मुताबिक ही-उनके सच्चे वारिसदार भी विरोध में खेलते हैं, सच्ची बात यह है....

काकाजी एक ही बात मानते थे कि भजे उसके भगवान। सभी गुणातीतभाव में रह सकते हैं। अक्षरधाम का सुख जीते

जी भोग सकते हैं। ऐसा काकाजी का अभिप्राय था। काकाजी इसी तरह वर्ते। इस तरह संत, बहनें, युवक और गृहस्थ तैयार किए और देखते हैं कि इसलिए काकाजी विमुख हुए। संस्था में मानते हैं कि एक ही व्यक्ति ऐसा हो सकता है। एक ही गुणातीत स्वरूप हो सकता है। काकाजी ने विरोध किया... सभी भगवान धारक संत हो सकते हैं और इसलिए संस्था से निकाले गए। पर, काकाजी योगीजी महाराज के हो कर जिए तथा जिस जिसको उनके साथ लगाव था, उन सब को देहभाव से परे किया... अब, पक्ष से परे हो कर और काकाजी जैसा सुख भोगते हो जाएं.... जगत की तरफ उपेक्षा करके आत्मा से बरतते हो जाएं व ऐसे sample काकाजी ने दिए हैं..... तो हम उनका अनुसरण करें। ऐसा अनुसरण करने का सबको बल मिले और अक्षरधाम का सुख भोगते हो जाएं—यही अंतर की प्रार्थना और आशीर्वाद !

***( 3 फरवरी—ब्रह्मस्वरूप प.पू. काकाजी महाराज के साक्षात्कार दिन की सभा )***

मुक्ताक्षर पुरुषोत्तम—मुक्तों में योगीजी महाराज काम कर रहे हैं। काकाजी ब्रह्मस्वरूप थे—तो काकाजी काम कर रहे हैं। ब्रह्मस्वरूप एकाकार होता है। ये मूतियाँ पधराई हैं—ये ब्रह्मस्वरूपों की मूर्तियाँ हैं। काकाजी भी ऐसे। हमरा सारा समाज काकाजी, बा और योगीजी महाराज का समाज है। योगीजी महाराज, काकाजी और बा उन्होंने प्रत्यक्ष की पूजा करके—प्रत्यक्ष का समाज खड़ा किया। योगीजी महाराज के साथ में काकाजी, बा शामिल हुए तो संत, बहनें, युवक और गृहस्थ—चार पंखुड़ियों का समाज अस्तित्व में आया, जो महामानव का सुख भोग रहा है। तो अभी काकाजी को जो करना था—वो गुणातीत समाज सारा हरिप्रसाद हों, अक्षरविहारी हों, साहेब हों, काकाजी हों या हरिभाई हों या बा या बेन हों। ये सारा **गुणातीत समाज सारा ही एकाकार-भगवान नियंत्रित ही चलता है।** हम विचार करें—शांति से विचार करो कि तुमने एकांतिकभाव सिद्ध करने में क्या प्रयत्न किया? कोई भी व्यक्ति यह नहीं कह पायेगा कि मैंने यह किया तो एकांतिकभाव सिद्ध हुआ और मैं योगीजी महाराज का होकर जीने लगा। महाराज के संकल्प से—योगीजी महाराज के संकल्प से गुणातीत स्वरूपों के संकल्प से हम सब धीरे-धीरे आगे जा रहे हैं। अत्यं. 2 वचनामृत—बहुत स्पष्ट spiritual practical वचनामृत है। उसमें महाराज ने कहा कि मैं यह गढ़डा शहर नहीं देखता, दादा खाचर नहीं देखता, लाडुबा, जीवुबा या ब्रह्मानंद या मुक्तानंद किसी को देखता नहीं। मैं तो सभी को प्रगति करते चैतन्य देखता हूं और तुम कहोगे कि तुम बुलाते तो हो ! तो बुलाने के लिए रखते हैं कि—फला भाई आओ, दादाखाचर आओ, जीवाखाचर आओ, ब्रह्मानंद-मुक्तानंद..... बाकी सभी को प्रगति करते चैतन्य देखता हूँ। गोलोक, बैकुंठ, श्वेतद्वीप, बद्रिकाश्रम, अक्षरधाम रूप देखता हूँ। तो सभी पूछेंगे कि हमें क्यों दिखाई नहीं देता आपके जैसा। **तुम्हें भी दिखाई दे—यदि परोक्ष के प्रति प्रतीति है, ऐसी प्रत्यक्ष के प्रति रखो तो तुम भी चैतन्यदर्शी, आत्मदर्शी हो जाओ।** गुरुजी को सच में धन्यवाद है कि काकाजी में सर्वोपरि नारायण का स्वरूप मान कर जिए। अर्जुन और कृष्ण—इसी प्रकार काकाजी और ये-दोनों सच में जिए। तो काकाजीमय—चैतन्यदर्शी हो गए। **सर्वदेशियता काकाजी का सबसे बड़े से बड़ा गुण।** यह गुण गुरुजी में आया और सारा समाज—अक्षरधाम का समाज यहां इकट्ठा हुआ है। आज हमारे लिए सर्वोपरि दिन है। **काकाजी के मंडल के हम कहलाते हैं, कहलाते हैं-काकाजी मंडल। सारा गुणातीत समाज ही तुम लो तो काकाजी मंडल के—काकाजी वाले, काका वाले यूं कहेंगे हमें।** तो हरिधाम-सोखड़ा, सांकरदा, शिकागो, विद्यानगर और अमदावाद, मुंबई—सारा समाज आज यहां इकट्ठा हुआ है। आज काकाजी का साक्षात्कार दिन ! सर्वोपरि दिन ! **काकाजी यहां पधराए गए**, दुनिया में किसी भी जगह काकाजी—मुक्त पधराए नहीं गए। **मुझे तो बहुत आनंद हुआ।** आज काकाजी के साक्षात्कार दिन पर यहां मूर्तिपूजा, काकाजी की ही पूजा—**काकाजी की पूजा means हम सब की पूजा-ध्यान रखना। गुणातीत स्वरूपों की पूजा। गुणातीत स्वरूपों का पाटोत्सव !** यह हमारा पाटोत्सव किया हमने, यहां आगे काकाजी को पधरा कर।

तो, संबंध वाले हैं ना? योगीजी महाराज के संबंध वाला है ना? काकाजी जैसे मानते—निर्दोषबुद्धि के राजा कहलाते-सम्राट कहलाते। निर्दोषबुद्धि यानि—योगीजी महाराज के, शास्त्रीजी महाराज के संबंधवाले सभी में शास्त्रीजी महाराज ही काम करते हैं—ऐसा मानना वह निर्दोषबुद्धि और यह काका को कराना था हमसे। हम प्रकृति और स्वभाव सभी के देखते हैं। मध्यम के 26 वचनामृत में तो श्रीजी महाराज ने कह दिया कि त्याग, वैराग्य, धर्म, ज्ञान, वैराग्य और भक्ति को भी पीछे करके निर्दोषबुद्धि रखना। निर्दोषबुद्धि यानि संबंध से कल्याण—वह महाराज ने किया। महाराज ने यह सिद्धान्त दिया....

आज सर्वोपरि दिन है। काका का साक्षात्कार दिन है और काकाजी की मूर्ति का पूजन हमने किया। अक्षरपुरुषोत्तम महाराज और गुणातीत स्वरूपों-सभी का पूजन किया। तो, आज सभी को काकाजी जैसी निर्दोषबुद्धि का सुख आया

करे... मेरी दृष्टि से तो जगत में दो ही व्यक्ति हैं। एक जड़ और एक चेतन। स्वामिनारायण के संबंध वाले सभी चेतन हैं और बाकी सब चक्करों में घूमा करते हैं–जड़ हैं। तो हम चेतन स्वरूप हैं। शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज, निर्गुणस्वामी ने परिश्रम करके महामानव का सुख भोगते करने यह किया है। काकाजी, बा और योगीजी महाराज से सम्पूर्ण गुणातीत समाज अस्तित्व में आया। हम इस बार देखते हैं कि 'मैं' मार कर गुरुमुखी जीवन जीते हुए हम सब बैठे हुए हैं.... वे सब जिस-जिस गुरु को मिले हों, उनमें लय और लीन होकर, खोकर और गुरुजी जैसी स्थिति प्राप्त करें–यही अंतर की प्रार्थना और आशीर्वाद !

[अभी-अभी **पप्पाजी ने बात करी**....... उनकी बातों को पकड़ने के लिए हमें खूब सावधान रहना पड़े। **महाराज ने वचनामृत मध्य के 45 में करी वैसी बात आज इन्होंने करी है।** इतने साल के बाद भी हमें यह बात करनी पड़ी इनको। हमें शर्मिन्दा होना चाहिए। **महाराज ने कहा था तुम मेरे कहलाते हो।** योगीजी महाराज और काकाजी ने हमें इसके बारे में कई बार समझाया था कि देखो महाराज ने एक टोना मार दिया है कि **तुम मेरे कहे जाते हो, लेकिन हुए नहीं हो।** इस तरह **पप्पाजी अभी बोले कि हमारा समाज काकाजी मंडल का कहलाता है।** फिर **दोबारा भी बोले–हमारा समाज काकाजी मंडल का कहलाता है।** आज हमें **पप्पाजी से आशीर्वाद मांगना है कि हमारा सारा समाज काकाजी मंडल का हो जाए ऐसी अब आप कृपा करना.....**

*–प.पू. गुरुजी ]*

***

## प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी

*( 1 फरवरी—हरा अनुग्रह शिविर, सुबह )*

...... काकाजी ने हम सब पर अनहद् कृपा की है कि हमें गुरुजी जैसे उनके वारिसदार दे दिए हैं... वैसे मेरी दो-तीन दिन से तबियत ठीक नहीं है। बहुत ज्यादा सर्दी-कफ हो गया है। इसलिए मैं बहुत ज्यादा भी बात नहीं करूंगा, सिर्फ इतना ही कहूंगा कि जैसे काकाजी ने उन पर कृपा वर्षा की है, इसी तरह सब साधकों के लिए भी वो ऐसे ही प्रार्थना–भजन करें.....

**गुरुजी** जब बात करते हैं, तो बहुत इन्टलीजन्ट होने के कारण **साधना की अति सूक्ष्म गुत्थियाँ वो बताते हैं।** ऐसी-वैसी गुत्थी तो हमारी सोच में भी नहीं आती है। मगर वो तो केवल कृपा करके सत्पुरुष अनुग्रह करके निकाल देते हैं.....

***

## प.पू. साहेब

*( 1 फरवरी—हरा अनुग्रह शिविर, सुबह )*

**जो चीज़ बिना मांगे मिलती है, उसको प्रभु का अनुग्रह बोलते हैं**..... गुरुजी मूर्तिमान गुरुभक्ति का स्वरूप हैं।

प्रभु जो काम करते हैं उसमें दिव्यता होती है, निर्दोषता होती है, वो काम में पवित्रता होती है। वो काम में आनंद भी होता है और ये काम से सब में एक-दूसरे के प्रति प्रेम भी बढ़ता जाता है। ऐसा हो तो मानना ये प्रभु का काम है....

गुरुजी चलता-फिरता मंदिर है... ऐसे गुरुजी के साथ जितना हमारा तालमेल बढ़ता जाए-उनके प्रति हमारे अंदर से जितना भाव बढ़ता जाए–गुरुजी को जैसे मानेंगे वैसे हम भी बन जाएंगे। स्वामिनाराण भगवान के हैं–**सत्पुरुष को जैसे मानेंगे, वैसे हम बन जाएंगे.... स्वामिनारायण भगवान** की विशेषता है...उन्होंने आकर एक नई दिशा–**नई सूझ हमको दी है।** अब तक साधना चलती थी–निष्कामी होने के लिए संसार छोड़ देते थे। जंगल में चले जाते थे। निष्क्रोधी होने के लिए सब खाना-पीना छोड़ देते थे। निर्लोभी होने के लिए, निर्मानी होने के लिए कुछ चीज़ भी नहीं रखते थे। लकड़ी की चीज़ रखते थे। कितना त्याग कर दिया? लेकिन इससे कुछ भी हुआ नहीं। देह का भाव छूटा नहीं... स्वामिनारायण भगवान ने बताया आप कोई गलत साधना कर रहे हो। **साधना तो यह करनी है कि भगवान को–स्वामिनारायण भगवान को भगवान के रूप में स्वीकार करो।** परब्रह्म तत्व ऐसे साधु द्वारा प्रगट हैं? उनकी मूर्ति का ध्यान करो स्वामिनारायण मंत्र का भजन करो और उनकी आज्ञा को अपना जीवन बना दो। साथ में **उनको जितना दिव्य मानते हैं, निर्दोष मानते हैं उतना सारे परिवार को यानि सारे सत्संग को निर्दोष और दिव्य मानो तो–तुम निष्क्रोधी, निष्कामी** ! सब देह का भाव अपने आप चला जाएगा। ऐसी सरल साधना, आनंददायक साधना के लिए स्वामिनारायण भगदवान ने हमें ऐसे साधु की भेंट दी-वो हम पर हरा अनुग्रह हुआ है...

यूं हमारी साधना अपने आप चलती रहती है–ऐसे साधु मिल जाने पर। उनको हम हमारी आत्मा मान लेते हैं कि मैं नहीं हूँ–गुरुजी मेरी आत्मा हैं। गुरुजी मेरा जीवन है...

स्वामिनारायण भगवान ने बताया कि अपने प्रति मत देखो, अपने गुण के प्रति मत देखो, अपने दोष के प्रति मत देखो। **देखने लायक** कोई भी है, तो ऐसे **संत और प्रभु हैं।** उनके प्रति देखकर चलते रहो और उनकी आज्ञा को अपना जीवन बनाते हो और सबको निर्दोष मानकर स्वामिनारायण मंत्र का भजन करके बल लेते रहो.....

***( 1 फरवरी—हरा अनुग्रह शिविर, शाम )***

सब के प्रवचन सुनने में बड़ा आनंद आया... गुरुजी ने बताया जो काकाजी बता रहे थे कि क्या हमको समझना है? दिनकरभाई ने जो बात बताई पप्पाजी की कि—जो भी होता रहे, होता चले—हम सब को प्रभु में स्थिर रहना है और वो ये गुणातीत स्वरूपों की कृपा जब होती है तब होता है... योगीजी महाराज एक भजन बहुत सुनाते थे 'हाँजी भला साधु,हर का साध....' गुणातीत भावना जिसके जीवन में स्थिर हुई है, जो गुणातीत अवस्था में जीवन जीते हैं, ऐसे साधु के लक्षण कैसे हों? ये बताते हए पूरे भजन पर प्रकाश डालते थे....

आणंद के मंदिर में एक बार एक हरिभक्त ने काकाजी के साथ बहुत जोर-शोर से झगड़ा कर दिया।काकाजी का अपमान कर दिया। 10-15 मिनिट ऐसे ही बात चलती ही रही।काकाजी ऐसे खड़े ही रहे। वो शांत हो गया। फिर काकाजी ने पूछा—अब मैं जाऊं दर्शन के लिए? इतनी स्थिरता से काकाजी ने बोला..... हम सब के दिल में तो उथल-पुथल हो गई थी, पर काकाजी ने बताया—उस भक्त ने योगीजी महाराज को-संस्था को छात्रालय की भूमि गिफ्ट दी थी—इतनी सेवा ! या सुनकर—उसके प्रति जो विरोध था वो हमारे दिल से—सब के दिल से निकल गया। काकाजी के दिल में और कुछ होता तो दूसरी बात करते.......

ऐसे काकाजी, योगीजी महाराज हमारे बीच में थे, काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी हैं—तो हमारी साधना सरल बन गई। हम भगवान के मार्ग पर चल रहे हैं, तो सब कुछ बनेगा—मंदिर भी बनेगा, हरिभक्त भी आएंगे, समृद्धि भी आएगी।सब चलता ही रहेगा...... जो भी हो रहा हो उसे होने दो, उसे हमें इन्कार नहीं करना है... लेकिन हम प्रभु की ओर देखते रहें। हमारा पहला धर्म यह है कि हम प्रभु में रहकर सब कुछ करें।प्रवृत्ति तो मंदिर की करनी है... जिस समाज में हम पले-पोसे बड़े हुए हैं, जिस समाज से हम आ रहे हैं, उनके लिए भी काम करना है।काकाजी बताते थे कि आम आदमी जो करते हैं वैसे सत्संगी और साधु को भी करना पड़ता है।लेकिन इसमें बहुत फर्क है।साधु करते हैं प्रभु की भक्ति के लिए, प्रभु की प्रसन्नता के लिए... उनको नज़र समक्ष रखकर प्रवृत्ति करेंगे, तो प्रवृत्ति उनके लिए बंधनरूप नहीं होगी... आप प्रभु की प्रसन्नता के लिए कर रहे होंगे, 2तो उसका स्वाद भी आएगा... राग से यदि बनाएंगे तो वो जब छोड़ना पड़ेगा, तब हृदय में दुःख होगा।प्रभु की प्रसन्नता के लिए बनाते होंगे, तो निकल जाने में कुछ दुःख नहीं होगा....

दिनकरभाई ऐसी टेकनीक देते हैं कि हर एक प्रवृत्ति भीतर में प्रभु के साथ जुड़ कर करनी है। काकाजी ऐसे थे और ऐसे गुरुजी की हमको भेंट दी है। गुरुजी का जीवन भी ऐसा है। सब ने बताया कि कैसे थे गुरुजी? हमने भी बहुत बातें सुनी... हम किसी की बात करेंगे तो वही वर्णन करेंगे। लेकिन उनके भीतर की जो बात है, उनके भीतर में उनका जो आलोच योगीजी महाराज, महंतस्वामी और काकाजी के लिए था, उसको हम देख नहीं सकते हैं। गुरुजी कहते हैं कि मैं काकाजी के साथ झगड़ता था, उनका मानता नहीं था—तो यह बात आपने पहचानी कैसे? कि काकाजी का मैं मानता नहीं था, वो आपने जाना कैसे? काकाजी को प्रसन्न करने का जो सतत् आलोच रहता था-है, इससे पता चलता है कि काकाजी की प्रसन्नता के लिए मैंने यह नहीं किया-वो नहीं किया। हम हमारे जीवन में ऐसा सोच भी नहीं सकते। हमको विचार भी नहीं आता है कुछ.... **गुरुजी सब की प्रसन्नता के पात्र, उनमें भेद दृष्टि नहीं। वर्ना एक की प्रसन्नता के पात्र रहते....**

**श्री अरविंदो** ने बताया था कि ये **शरीर में जब प्रभु प्रकाशित होंगे,तब यह शरीर की उम्र ऐसी ही रहेगी।** शरीर की उम्र नहीं बढ़ेगी। गुरुजी ने बाताया कि मुझे क्यों 60 साल के बोलते हो सब? ओहो! 16 साल का हृदय है.... उनकी उम्र ही दिखाई नहीं पड़ती। इनमें इतना आनंद है। प्रभु को राजी करने का इतना आलोच है, इतना उत्साह है, इतनी उमंग है। भीतर में इतनी शक्ति उभर आती है.....

**गुरुजी दुनिया के कोई भी संप्रदाय की किताब पढ़ेंगे तो उसमें से वो निकालेंगे—योगीजी महाराज, स्वामिनारायण भगवान, काकाजी की बात और वह लेकर हमको रहस्य बताएंगे।** भीतर से वो प्रभु में स्थिर हैं। **जो प्रभु में स्थिर हैं—वे ही असली साधु हैं।** वो स्थिरता हमको सबको लानी है। हम प्रभु को प्रार्थना करते हैं या सभा में बैठते हैं तब स्थिर होते हैं। लेकिन बाहर जाते हैं तो प्रभु से दूर हो जाते हैं। सब का मध्य बिन्दु ऐसे गुणातीत स्वरूप बन जाएं। उनकी आज्ञा पालें या ना पालें, उनका वचन ना भी पाल सकें तो भी-उनको राजी करने का सतत् आलोच भीतर में रहेगा तो वो उदार हैं, कृपालु हैं। हम पर ऐसा अनुग्रह करते ही रहेंगे। हम सब को ऊंचे उठाते ही रहेंगे। गुरुजी ने जीवन में यही किया है और अभी भी वो यही करते रहे हैं। मंदिर है, समाज भी सब बढ़ता रहेगा, लेकिन भीतर से जो प्रभु के लिए निकले हैं, उन सब पर आशीर्वाद बरसाते रहेंगे।

ऐसे अद्भुत साधु की भेंट राजधानी में हम सब को मिली है। वो हम पर बहुत बड़ा अनुग्रह किया है। ऐसी स्थिरता हम सब की रहे और प्रभु के साथ जुड़ कर सारा जीवन व्यतीत करें—ऐसा सदा हम पर अनुग्रह किया करें ऐसी गुरुजी की हीरक जयंती की प्रार्थना.....

***( 2 फरवरी—हीरक जयंती की सभा )***

प.पू. पप्पाजी ने आशीर्वाद में निर्देश किया–काकाजी विरोध में काम करने वाले थे। आज गुरुजी को भी ऐसे काकाजी ने ट्रेईन किया..... **भजन और सत्पुरुष का वचन ये दो चीजें जीवन में हों तो जीवन में हर चीज़ पार उतर जाए।** गुरुजी के जीवन में से यह देखने को मिलता है........

......गुरुजी ने जिस सत्य को संभाला, सत्य को पकड़ कर जिस निष्ठा से प्रभु के प्रति प्रगति की है-वह चीज़ पकड़ कर रखनी है.... गुरुजी हमारे लिए बहुत बड़ी भेंट हैं काकाजी विरोध में काम करते थे, वो विरोध की ट्रेईनींग गुरुजी को भी दी। गुरुजी वह ट्रेईनींग दिल्ली वासियों को दे रहे हैं। यह उत्सव में जो विरोध हुआ है–कुदरत का-तो बारिश में जो काम करा, जो धगश से, जो उत्साह से, इसमें जरा भी कमी आई नहीं? । वह उमंग और उत्साह वह गुरु के प्रति, गुरुजी के प्रति की सच्ची भक्ति का दर्शन है... प्रतिकुल संजोगों में किसी भी प्रकार फरियाद किए बिना जो होने वाला है वो होगा ही उसमें से हमें कैसे उमंग और उत्साह से रास्ता निकालना, वह गुरुजी ने अपने जीवन के वर्तन से हमें सिखाया.....**हमारी प्रार्थना–भजन से वातावरण नहीं बदलने वाला....हमारा हृदय शांत हो जाएगा। सभी प्रतिकूल संजोंगों में भी हमें दिल में शांति और आनंद रहेगा। वही उस पर विजय करी कहलाए......**

ऐसे दिव्य पुरुषों के लीला चरित्र-करते हैं मनुष्य चरित्र, पर लीला चरित्र कह कर गाना, वह चीज़ स्वामिनारायण भगवान ने बताई......उनको गाना इसलिए है कि इस तरह जीवन जीते थे, पर समर्थ पुरुष मिले-घड़ने वाले मिले तो ऐसी अद्‌भुत मूर्ति हमें प्राप्त हुई है। सो वह समझने के लिए भी प्रसंगों की जरुरत है। प्रसंग प्रेम से सुनना, पोज़ीटिव्ली लेना-वह हमारी साधना है। वह डेप्थ–गहराई है साधना की.... जन्मदिन मनाए जाएं–हमें प्रसंग सुनने को मिलें.... सनतभाई ने सच्ची बात करी कि स्वामिनारायण संप्रदाय को प्रत्यक्ष बनाने का कार्य शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज ने किया। आज प्रत्यक्ष के संप्रदाय को छोटे भी हरिभक्त द्वारा पहुँचा कर उस हरिभक्त को भी दैवत्व वाला बनाने का काम किया है, तो वो काका और पप्पा ने। वे अद्‌भुत क्रांति लाए.....

दिल्ली मंडल को खूब-खूब धन्यवाद ! थोड़े समय में खूब अच्छी तरह से गुरुजी की प्रसन्नता के पात्र बन गए..... राकेशभाई ने सुन्दर भजन बनाया और विनोद ने गाया। इतना सुन्दर गाया कि पंड़ाल के सभी इसमें इन्वॉलव हो गए, शामिल हो गए और वही चीज गुरु के प्रति भक्ति का दर्शन हमें कराती है। तो गुरुजी ऐसे के ऐसे हंसते खेलते 100 वर्ष तक रहें और हमेशा सभी पर ऐसे के ऐसे आशीर्वाद बरसायें, आनंद कराएं, कोस्मोपॉलीटन साधु-उन्हें पप्पाजी कहते हैं, तो सभी प्रकार के-सभी कक्षा के मुक्तों को खूब आनंद किल्लोल कराते-कराते अक्षरधाम का सुख, शांति और आनंद भोगते करें.......

***( 3 फरवरी—ब्रह्मस्वरूप प.पू. काकाजी महाराज के साक्षात्कार दिन की सभा )***

आज काकाजी का स्वरुपानुभूति दिन-मूर्तियों का पाटोत्सव..... मूर्तियों की पूजनविधि के दर्शन का भी लाभ मिला। दिनकरभाई ने सही बताया-गुरुजी आज बहुत आनंद में थे। काकाजी का साक्षात्कार दिन हम सभी के लिए आनंद का दिन है। विनोद ने गाया '....**गुणातीत समाज का इतिहास तुम बिन लिखा नहीं जाए....**' सही बात बताई। **काकाजी नहीं होते तो गुणातीत समाज भी नहीं होता।** 3फरवरी को रियलाईज़ेशन हुआ, तब से इस समाज का ढ़ाँचा बदल गया। योगी महाराज छुपे रहते थे। सब की मर्जी में अपनी मर्जी मिला देते थे। इसलिए सबको बहुत प्यारे थे। काका ने आ कर बात बताई कि देह छोड़ कर जो प्रभु की प्राप्ति करना है, वो ही प्रभु योगीजी महाराज के रूप में हमें मिले हैं.....काकाजी ने जो बात सच थी वो समाज के सामने रख दी और बताया कि योगीजी महाराज हमारी सेवा करते हैं... पर, दर्शन तो हमें योगीजी महाराज का करना है। वो बात जब काकाजी ने बताई तब से मानव देह में परिवर्तन का ख्याल आया और वास्तव में होने लगा। तब से गुणातीत समाज बना....

गुणातीत भावना को लाये बिना मानव कभी सुखी नहीं होगा। जब तक हम हैं, जब तक देहभाव है जीवन का पूरा आनंद कभी नहीं मिलेगा......वो गुणातीत भावना प्रगटाने के लिए ही काकाजी ने बात बताई कि योगीजी महाराज की आज्ञा के मुताबिक हमको चलना है। ये बात जिसने-जिसने मान ली, सब का देहभाव छूटता गया और देखा कि एक नारायणी सेना खड़ी हो गई। ऐसी नारायणी सेना-जिसमें केवल प्रभु के लिए ही जीवन व्यतीत करने का सब संकल्प करते हैं। योगीजी महाराज काकाजी पर इतने प्रसन्न हुए थे कि कहीं भी जाएं तो उनके मुँह से दादुभाई-दादुभाई-दादुभाई.....कोई भी प्रोब्लेम आए तो दादुभाई को बुलाओ....कोई भी काम हो तो दादुभाई को भेजो। क्योंकि काकाजी ने योगीजी महाराज का जो रहस्य था, स्वामिनारायण का जो रहस्य था-वो पकड़ लिया था और वही लेकर वो घूमते रहते थे। जहां भी जाते काम बन जाता। ऐसी ताकत-काका

बोलते थे-सबमें लानी है। इसके लिए काका हमारे साथ रहे। बहुत-बहुत कठिनाई उन्होंने झेली है। कोई उनकी बात माने या ना माने, कोई उनके पास जाए या ना जाए, कोई उनको प्रणाम करे ना करे-सबको प्रेम करते रहे। कोई मांगे ना मांगे वो सब को देते ही रहे, देते ही रहे। काकाजी ने बहुत किया, हमारे लिए बहुत किया। सबसे बड़ा काम वो कि–गुरुजी की भेंट दी, दिनकरभाई की भेंट दी, भरतभाई, बापु, कोठारीस्वामी ऐसे संतों की हम को भेंट दी है। काकाजी ने बात की कि 'पाँच इकट्ठे होकर.....' वो रहस्य की बात बता रहे थे। उस समय काकाजी की बात हमको बहुत आनंद लाती थी। उनकी बात सुन लेते थे। लेकिन एक्शन में लाने के लिए कोई कुछ करता नहीं था। काकाजी कहते रहते थे–आप जितने हैं उतने इकट्ठे होकर प्रभु का काम करो। एकांतिक बन जाओगे। वे जानते थे कि ये मेरी बात सिर्फ सुनते हैं, तो धुन कराते-खूब धून कराते। योगीजी महाराज भी बहुत धून कराते और योगीजी महाराज तो सर्वदेशीयता का मूर्तिमान स्वरूप थे। वो ही सर्वदेशीयता बिल्कुल गुरुजी ने काकाजी का सेवन किया, तो सभी काकाजी के गुण गुरूजी में दिखाई पड़ते हैं। यहाँ भी धून कराते हैं और **सर्वदेशीयता का तो मूर्तिमान स्वरूप हैं। सब के प्रति जो प्रेम है, सबके प्रति जो भाव है वो हृदय से हैं। उसमें यदि दिखावा होता तो वो ट्रान्सफर नहीं होता। गुरुजी में सच में हैं, तो वैसा ही भाव और सर्वदेशीयता व भजन पूरे दिल्ली मंडल में मल्कानी साहेब से लेकर कल का जो नया आया हो, उसमें भी दिखाई पड़ता है.....**

आज काकाजी का साक्षात्कार दिन है। काकाजी ने हमको जो दिया है वो समझें ! और.....प.पू. पप्पाजी आप ऐसा संकल्प करो कि काकाजी ने जो बताया था 'एकता-एकांतिक'। **सब देहभाव विसर्जित हो जाएं तो ही सच्ची एकता होती है। हम में से निकल कर आप में रह कर काकाजी का जो भाव है, काकाजी ने जो मेहनत की है....उस परिश्रम को सफल करने के लिए हमारी ओर से जो भी होना चाहिए वो करते रहें** और इसमें आनंद करते रहें–ऐसे आशीर्वाद दो......

***

## प.पू. दिनकरभाई

*( 1 फरवरी—हरा अनुग्रह शिविर, सुबह )*

आज पप्पाजी जो यहां आए–सबसे हरा अनुग्रह तो वही है....गुरुजी का भी ये हरा अनुग्रह है हम सब के ऊपर कि हम इतने भाग्यशाली हुए हैं कि हमको ये मौका मिला....200 साल पहले हमको इधर दिल्ली आने में भी बहुत टाईम लगता। मगर आज जमाना बदल गया....अभी जैसा गुरुजी ने बताया कि इधर जो कुछ भी हो रहा है, वो दूरदर्शन पर दिखाई पड़ेगा। आज सबको संजय दृष्टि मिल गई है। **विज्ञान ने जब ऐसा किया है, तो क्या आध्यात्मिकता में ऐसा नहीं हो सकता है? काकाजी बोलते थे कि आध्यात्मिकता में ये टेकनीक, ये नई-नई रीसर्च करके हम आपको देते हैं जिससे कि आपको सुविधा से अक्षरधाम का सुख मिले.....**

साहेब ने बताया कि गुरुजी ऐसे सरल हो गए। वैसे दिखते तो बहुत कड़क हैं। गुरुजी के पास जाने में सेवकों को भी यह महसूस होगा..... डर भी लगता है। पर, वो हम को ट्रेईनींग दे रहे हैं। हरे अनुग्रह की एक अंतिम बात बता रहा हूँ कि **जब गुरु हरा अनुग्रह करता है तो भरी सभा में हमारा अपमान भी करे। हमारे जो चहेते हैं उनके सामने हमारा अपमान भी करे ! तब भी गुरु के प्रति हमको ज्यादा प्रेम बढ़े, गुरु के प्रति हमारी ज्यादा भक्ति बढ़े....हमारे दिल में कुछ चुभ ना जाए, हमारे दिल से सचमुच प्रेम का फुव्वारा निकले कि मैं ऐसी पात्रता वाला तैयार हो गया हूँ। गुरुजी को मुझ पर ऐसा विश्वास आया है।** योगीजी महाराज पर हर एक भक्त अधिकार कर सकता था। योगीजी महाराज पर हर एक भक्त गुस्सा कर सकता था। वो योगीजी महाराज ने हरा अनुग्रह माना.....कई-कई गुरुओं का शिष्यों के साथ प्रसंग बना है कि गुरु शिष्य को गुस्सा करके भगा देते हैं और उस से वे भाग भी जाते थे। मगर दिल में ऐसा दुःख लेकर भाग जाते हैं कि मैंने गुरु का इतना-इतना किया और मेरे गुरु ने मुझे पहचाना नहीं। मेरे गुरु ने मेरे को यह क्या किया? मगर ये प्रसंग पहली बार बना है कि गुरु की हाज़िरी में, गुरु के होने पर भी, गुरु से दूर रह कर गुरु का गोपियों की तरह ज्यादा भजन हुआ है। गुरु को ज्यादा प्रसन्न किया है। यह हरा अनुग्रह है......आज के दिन पर गुरुजी की जो भावना है वो हमारी सचमुच उगे......

*( 1 फरवरी—हरा अनुग्रह शिविर, सायं )*

प्रगट स्वरूपों के सान्निध्य में आज सब अक्षरधाम की बातें हो रही हैं....सचमुच में नैमिषारण्य क्षेत्र है यह। हमारी इन्द्रियों की धारा कुंठित होकर दस इन्द्रियों और चार अंतः करण-जो हमारा ध्येय है उसके प्रति रहे उसके बारे में ये बातें चल रही हैं। पू. दासस्वामी ने बहुत अच्छी तरह से 200 साल से लेकर आज तक के इतिहास की बात बताई। **काकाजी** जब भी शिकागो आते थे, **आज से 25 साल के बाद क्या होने वाला है वो बातें करते रहते थे।** मल्कानी साहेब ने एक बहुत अच्छी

बात बताई कि **वर्तमान इतनी तेज गति से भाग रहा है कि उसके साथ मिलकर नहीं रहेंगे, तो हम भूतकाल में सड़ जाएंगे। दूसरी ओर 25 साल के बाद क्या होने वाला है वो बातें प.पू. काकाजी करते रहते थे** और आज वह हो भी रहा है.... **गुरुजी ने आज सच बात बताई कि जहां है वहां से सन्तुष्ट होकर रुकना नहीं है।** वो लीला (हरा) अनुग्रह मैं सोच रहा था। पू. कोठारीस्वामी, पू. प्रेमस्वामी को काकाजी जब भी मिलते थे, वे उन पर लीला (हरा) अनुग्रह करते रहते थे...परन्तु, जो हरा अनुग्रह वो कर रहे हैं उसको हम अच्छी तरह से पकड़ कर नहीं रखते हैं। वो क्या चीज हैं? वो **हमारा कौन सा -ऐसा प्रावईवेट फील्ड है जहां ये गुणातीत पुरुष पहुंचने पर भी हम नहीं बदल सकते और आज हम हमारे हृदय में ढूंढेंगे तो वो पता भी चलेगा—कोई ऐसी वृत्ति होगी, कोई ऐसा स्वभाव होगा जो हम को हरा अनुग्रह झेलने में बाधा डालता है, पर्दा डालता है....**

ये सचमुच अंतर्दृष्टि का विषय है। आज गुरुजी ने ये बात करके हमारे सामने रखी है। सचमुच मानें तो ये मौका हम को मिला है....हम सब माँगते हैं। पर, **हम माँगते हैं-तोते की तरह। किसी ने बोला है, किसी से सुना है—वह हम भी बोल देते हैं। वो काम नहीं करेगा। जो अंदर से उगेगा, जो अंदर से निकलेगा, डूंटी में से निकलेगा वो काम करेगा....अनुभव तो है। दुनियादारी की कोई भी चीज डूंटी से माँगी है, तो मिली है। मगर हम पामर, विषयी मुमुक्षु की कक्षा तक ही पहुंचे हैं। वो मुक्त की दशा में नहीं गए......**आज ऐसे समर्थ मावतर बैठे हैं, हमको आशीर्वाद दे रहे हैं....योगी बापा ने बड़े सरल तरीके से वो दे दिया है....हर रोज सुबह यह भावना करनी है कि मैं ब्रह्मरूप हूँ.....जैसे सुबह में बोला था कि काकाजी, इधर एक रीसर्च लेबोरेटरी चलाते थे, पप्पाजी ने ये रीसर्च लेबोरेटरी चलाई। स्वामिजी की ये रीसर्च लेबोरेटरी है...उसमें काकाजी ने एक टेकनीक बताई कि—रात की प्रार्थना—कल के लिये की प्रायश्चित रूप प्रार्थना है। सारे दिन में कुछ भी गल्ती हुई हो, उसकी माफी माँग लेना। किसी को कुछ डाँटा हो उसको जस्टीफाय नहीं करना कि ये हुआ था, वो हुआ था इसलिए किया। पर-मुझे उससे आगे जाना है यह प्रार्थना करनी। **रात की जो प्रार्थना है वो हमारे सब कोन्यीयस मन के अंदर इतना काम करती है कि हमारी छः घंटे या आठ घंटे की जो नींद है, वो नींद नहीं-समाधि बन जाती है। ये टेकनीक काकाजी न बताई।** इतना तो हम कर सकते हैं। सोते समय 5 मिनिट अपने स्वरूप को दिल से प्रार्थना करें और सुबह में उठते ही उनको याद करें—उनको धन्यवाद दें, **जिससे कि सारे-दिन की जवाबदारी** जैसे टी.वी. का रीमोट कंट्रोल होता है कि दूर से ही चैनल बदल सकते हैं, ऐसे **वो भी हमारा रिमोट कंट्रोल बन जाए......**आज पप्पाजी के चरणों में यह प्रार्थना करें कि पप्पाजी की भगवान के अंदर की जो स्थिरता है, वो उनके आशीर्वाद से हम सबको मिल जाए.....

***(3 फरवरी—ब्रह्मस्वरूप प.पू. काकाजी महाराज के साक्षात्कार दिन की सभा)***

.....पिछले दो दिन में गुरुजी जो दिखते थे, उससे आज अलग दिखते हैं। आज साक्षात्कार का दिन है। उनकी खुशी अलग प्रकार की है....वैसे वो छुपे—दिखाई नहीं देंगे। लेकिन जब देखने जाएंगे तो पता चल जाता है—उनके हालचाल से, उनकी स्वाभाविक चेष्टा से......साक्षात् अक्षरधाम की सभा बैठी है। कोठारीस्वामी ने बात बताई। वो तो ब्रह्मरूप हैं ही.... उनकी साधुता ही दिखाई देती है। जो काकाजी हम सब को करवाना चाहते हैं वो गुरुजी ने माँगा। वो कोठारीस्वामी ने माँगा, ये हमारे लिए माँगा.....

वालिया साहेब, मल्कानी साहेब—हमारी सब की भी यही बात है। **कितने जन्मों से जो किया है उसका फल आज मिल रहा है...**आज साक्षात्कार दिन की रजत जयंती भी है....**आज हमारा विजय दिन है और उसकी आज रजत जयंती है।** तो पप्पाजी के चरणों में प्रार्थना करें कि जो विजय आप हमें करवाना चाहते हैं, वो आपके आशीर्वाद से जल्दी से जल्दी हो जाए......

***

## पू. कोठारीस्वामिजी

***(1 फरवरी—हरा अनुग्रह शिविर, सुबह)***

.....गुरुजी हमारे मित्र हैं.....आज आनंद का दिन है कि पप्पाजी के दिव्य सान्निध्य में हम सब अक्षरधाम का आनंद अनुभव कर रहे हैं। महाराज ने कैसी कृपा करके अनुग्रह किया कि ऐसे दिव्य पुरुष हमारे लिए कायम के लिए पृथ्वी ऊपर रख दिए.....बापा ने जैसे मेहळाव में प्रार्थना करी थी, उस अनुग्रह की हम सब को जरूरत है। हे शास्त्रीजी महाराज ! आप निर्दोषबुद्धि के भूखे हो, हमको निर्दोषबुद्धि दो। योगी गीता में लिखी निर्दोषबुद्धि रखनी बहुत मुश्किल है। बापा ने चार मुद्दे दिये, उसमें-उसके दर्शन जँचे, उसके पास रहना जँचे, उसकी क्रिया जँचे, उसका स्वभाव जँचे। स्वभाव जँचाना खूब मुश्किल है। हम सब पर आप हरा अनुग्रह करो कि आपकी क्रिया और स्वभाव हमें जँचे। पप्पाजी ने आज सुबह आशीर्वाद देते हुए कहा कि सात्त्विक व्यक्ति को यह बात

समझ नहीं आ पाए.... स्वयं के दोष का सम्यक् दर्शन कभी नहीं हो पाए.... आपके चरणों में प्रार्थना-आपके स्वरूप का हमें विज्ञान हो और हमारे दोष का सम्यक् दर्शन हो और दर्शन के बाद-उसे टालने की हमें भजन, प्रार्थना करने की लगन प्रगटे ऐसा अनुग्रह सब पर बरसाओ....

*( 2 फरवरी—हीरक जयंती की सभा )*

आज काकाश्री का साक्षात्कार दिन.....काकाजी बापा के एक सर्जन थे.....योगी बापा गोंडल में शरद्पूर्णिमा के दिन खूब आनंद में होते थे....बापा देरी में पधारें, दर्शन करें और ऊपर दर्शन करने गए। तब बापा बोले कि यह गुणातीत की देरी है। शास्त्रीजी महाराज ने यहां मंदिर बनाया और यहां जो कोई आएगा उन सब को हमें सुखी करना है। तुरंत सेवकों ने पूछा बापा कैसे सुखी करने हैं? तो बोले हमारे जैसे ! यह बापा का संकल्प था और वही काका ने झेला....

**मन, बुद्धि और चित्त को दिव्य बनाने के लिए बड़े पुरुष के पास सरल वर्तना ही पड़े**......पप्पाजी के चरणों में प्रार्थना कि **हम हमारी रीत से सरल होकर वर्त सकते हैं, पर सम्यक् रूप से सरल वर्ता जाए ऐसे आशीर्वाद देना**......काकाजी तो सुहृद सम्राट थे। वे सभी के थे, उन्होंने बापा को सांगोपांग रखा था और वो काकाजी गुरुजी पर खूब प्रसन्न हुए....**गुरुजी यानि भेददृष्टि रहित के-जीवन में पप्पाजी का इतना ही स्वीकार, जीवन में उतना ही स्वामिजी का स्वीकार। ऐसे सर्वदेशीय हैं.....**

यहां के मंडल के सभी भाईयों की उमंग देखते हैं-उनका दर्शन कर रहे हैं तो सभी के दिल में आनंद समाता नहीं....दिल्ली मंडल को भी पप्पाजी अंतर से खूब-खूब आशीर्वाद दें कि गुरुजी के साथ का और भगवान के साथ का संबंध खूब दृढ़ हो और उस संबंध के अंदर कुछ बाधारूप ना हो.....

*( 3 फरवरी—ब्रह्मस्वरूप प.पू. काकाजी महाराज के साक्षात्कार दिन की सभा )*

काकाजी मुझे पूछते कि तेरा जीव ब्रह्मरूप हुआ है? यह बात वो हमेशा रखते और दूसरी एक बात रखते कि तुम पाँच एक होकर जीओ। दासस्वामी को तो काकाजी ने यहाँ तक कहा था कि मुझे तुम्हारी पाँच जनों की मूर्ति सामने रखनी है। तुम पाँच जनों को एक होकर जीवाना, उसकी मुझे इतनी जाग्रतता रहती है। तो तुम्हें तो कितनी होनी चाहिए.....

आज तीन फरवरी है-हम पाँच जने रसरूप होकर मैत्रीभाव से जीते हो जाएं, वह 3 फरवरी सच्ची मनाई कहलाए। पर **उसमें हमारा कुछ है-इसलिए हम काकाजी का संकल्प पूरा कर नहीं सकते।** वह कसर दूर हो ऐसे पप्पाजी खूब-खूब आशीर्वाद दें.....

***

## प.पू. गुरुजी

*( 1 फरवरी—हरा अनुग्रह शिविर, सुबह )*

आप लोगों ने मेरा 60वाँ जन्मदिन कैसे मनाया वो ही मुझे समझ नहीं आता। जिस तरह मैं तुम्हारे साथ छेड़छाड़ कर जाता हूँ—जिद्द कर जाता हूँ—लड़ जाता हूँ, वो देखते हुए तुम्हें लगता है कि मैं 60 साल का हूँ? मेरा दिल देखोगे तो 16 साल का लगेगा—शरीर से हो सकता है 36 या ज्यादा 46 साल का लगता होऊँगा, लेकिन 60 साल का तो नहीं कह पाओगे और आप मुझे यूँ बार-बार याद कराओगे कि तुम 60 साल के हो, तो घाटा तुम लोगों को जाएगा। मैं काकाजी तो हूँ नहीं कि एकदम कह दूँगा कि मैं अपने आपको 60 साल का नहीं मानता। मेरे दिमाग में कोई चीज़ घुस गई तो वह निकलती नहीं। सो ये मुझ में घुसाना नहीं कि मैं 60 साल का हूँ....दूसरी बात—आप लोगों ने जो कुछ भी कह दिया, लेकिन **मैं दिल से मानता हूँ कि दिल्ली बहुत दूर है.....**

आप सब ने भले कुछ कह दिया, लेकिन मैं कितना काकाजी की ओर नजर रखककर जीवन जीया हूँ? काकाजी में कितना लय और लीन हो गया हूँ? कितना दिव्यभाव मैंने हर एक में रखा है?-यह मैं जानता हूँ। फिर भी आपने जो कहा सर आँखों पे है। आप सब आशीर्वाद देकर जाना कि आपने जैसा चाहा है वैसी जिम्मेदारी मैं निभा सकूँ।

अब बात-हरा अनुग्रह की, इस शब्द के बारे में-9 फरवरी 1981 में काकाजी ने मुझे कागज लिखा था—जब हमने द्विशताब्दी मनाई कि—द्विशताब्दी की फलश्रुति के रूप में अभी मैं ब्रह्मरूप हूँ उस कक्षा में से ब्रह्मस्वरूप की कक्षा में किसी भी कीमत पर चले जाना है। चाहे फिर वो सेवा से, स्मृति से या स्वरूप उपशम से या **बड़े की प्रसन्नता से।** उसके बाद काकाजी जब दिल्ली आए तो—मैंने कागज रख रखा था क्योंकि उसमें मुद्दे लिखे थे कि चाहे सेवा से, स्मृति से या बड़े की प्रसन्नता से। ये जो चौथा फेक्टर था, वो कुछ अलग पड़ता था। तो मैंने काकाजी को इस बारे में पूछा—काकाजी ने कहा कि देख एक बात समझाता हूँ।

साधु की दया सब पर है सूर्य समान, निष्ठा हो या न हो। सिर्फ उसके सम्पर्क में आ जाना चाहिए। उसके बाद दो चीज आती हैं कृपा और अनुग्रह ! कृपा में निष्ठा होनी जरूरी है

लेकिन निष्ठा के साथ कृपा के लिए उसकी ओर नजर रख कर जीना जरुरी होता है। तुम उसके होकर नहीं जीओगे, उसकी ओर निगाह रखकर नहीं जीओगे तो वो तुम पर कृपा नहीं करेगा। अनुग्रह के लिए निष्ठा जरूरी है, पर-जरुरी नहीं कि वह मर्जी में वर्तता हो। मैंने पूछा कि तो फिर उसमें क्या क्वालिफिकेशन जरूरी है? पू. काकाजी बोले–अनुग्रह के लिए ऐसा है कि उसकी 'पसंदगी' बस ! जैसी कृष्ण की अर्जुन पर थी।

मैंने कहा–लेकिन अब मुझे क्या करना है? बस तुझे कुछ नहीं करना है। लेकिन मैं हूँ तेरा और तुझे जमे या ना जमे–मैं कहूँ वो करा कर। तुझे भले लगे कि काकाजी मेरे अगेईन्सट हैं–**वह तुम्हारा मन है,** तब भी मैं आज तुझे समझा रहा हूँ कि मैं कहूँ इतना करा कर। फिर तुझे पता लग जाएगा कि मैंने तेरे पक्ष में ही करा हुआ है। तो, दरअसल तो **जो कुछ भी विकास नज़र भी आता है ये सब काकाजी ने जो आशीर्वाद बरसाये ही करे-बरसाए ही करे...उसकी बदौलत है।**

जैसे कल मैंने एक बात करी कि हम पप्पाजी को, स्वामिजी को, अक्षरविहारीस्वामिजी को, साहेब को **बड़े जरूर मानते हैं, लेकिन उनकी बातें सच्ची ही हैं। यूं मानना जरूरी है।** अगर यह हम मान लेते हैं, तो हमें अनुभव भी होता है कि इनकी बात तो सही थी-हमारी सोच गलत थी। पर इन लोगों के चरित्र होते ही ऐसे हैं कि अपने दिमाग में बैठे ही नहीं...सो, ऐसे संतों के वचन में हमें विश्वास नहीं होता। हम बोलते हैं कि हम काकाजी के हैं, पप्पाजी के हैं, स्वामिजी के हैं और वे भी कहते हैं-तुम बोला करो हम सुन-सुन। बस इसे ही मैं हरा अनुग्रह समझता हूँ। **बात इतनी ही है कि उन्होंने जो कहा हम वो मान लें।** योगी गीता में एक बात लिखी है कि स्वयं की आत्मा को ब्रह्मस्वरूप मानना। अजीब-सी चीज़ है ! भीतर में सारे दोष दिखाई पड़ते हों, सारे प्रकृति-स्वभाव दिखाई पड़ते हों–फिर भी मानना कि मैं प्रत्यक्ष ब्रह्मस्वरूप हूँ। कोई पागल आदमी लिखेगा या तो इसमें कोई रहस्य छिपा हुआ होगा या उसकी सत्ता का जिसे ख्याल होगा वही यह बात लिखेगा....

मैं तो इतना ही समझता हूँ कि रोज़ हम समझें कि आज काकाजी का हम पर अनुग्रह है और मुझे झेलना है। बस ऐसी हमारी बुद्धि हमेशा की रहे इतना पप्पाजी, काकाजी, स्वामिश्री, अक्षरविहारीस्वामिजी, साहेब आशीर्वाद दें इतनी प्रार्थना !

***( 1 फरवरी—हरा अनुग्रह शिविर, सायं )***

शुरूआत में जब हम दिल्ली आए-यहां कोई नहीं था। रहने के लिए 'साधु समाज' था। सालों तक जो हम आते वो संत और साथ वाला सेवक, पर कोई आता-जाता नहीं था। कहीं जाना भी होता तो रिक्शा या ऐसा कुछ करते। मतलब-रहने का साधन नहीं था, कोई आने जाने वाले लोग नहीं थे, कहीं जाना हो तो उसके लिए निजी कोई वाहन भी नहीं था। आज रहने के लिए बड़ा मंदिर बन गया। मंदिर में तीर-चार वाहन हो गए-भक्त लोग भी बढ़ गए। अब **इन चीजों को लेकर यदि हम कहेंगे कि काकाजी का हम पर हरा अनुग्रह हो गया तो शायद नए तो कोई समझे या नहीं समझे, लेकिन हम पुराने जोगी तो जरूरी सोचेंगे कि काकाजी कितने राजी होते होंगे? ऊपर से कहते होंगे करम फूटे तुम्हारे-कबूतर के कबूतर ही रहे....**

**हमारा कोई स्टेटस अलग है। हमारी कोई शिस्त अलग है.....**प.पू. काकाजी कहते करोड़ गुणा सत्संग होगा। सोने के मंदिर होंगे, पर तुम्हारा स्त्री-पुरुष भाव टला। तुम्हारा जीव ब्रह्मरूप हुआ? इस **गुणातीत समाज के कुछ मूल्यांकनों को हम यदि समझते हैं तो हमारा निशान तो ये है।** 1986 की 26 जनवरी को काकाजी से **सवाल किया गया** कि **कनिष्ठ मुक्त से अब उत्तम कैसे हो-वो रास्ता दिखाओ?** वो कैसेट ध्यान से सुनना। **काकाजी** ने सारी बातें करी और **कहाः– इतना करना-मध्यम मुक्त हो जाओगे। हमने पूछा हम उत्तम कैसे हों? काकाजी ने जवाब दिया इतना करना–मध्यम मुक्त बनोगे।** यह दर्द की बात है–**बापा ने हम लोगों को जो अलग किया वो कोई और चीज थी–हमें अलग स्टेटस देना था। मंदिर बन गया-गाड़ियां आ गई, वैभव बढ़ गया, समाज बढ़ गया। उससे क्या फायदा हुआ?** हमें तो वो हरा अनुग्रह इसलिए चाहिए कि काकाजी कहते थे कि पीली छींट (कसर) भी ऐसे एकांतिकों को रह जाती है.....और.... उसके लिए अतिशय बड़े पुरुष की प्रसन्नता चाहिए। एक कागज में इन्होंने लिखा है कि बापा के अनुग्रह से आज पप्पाजी और यह लिखने वाला महानुभाव ऐसी सर्वोच्च ब्राह्मीस्थिति में प्रवेश कर चुके हैं और तुम खूब भाग्यशाली हो कि इनका तुम्हें संबंध हैं और इससे भी अधिक इन्होंने तुम्हें स्वीकारा है। आगे एक लेटर में लिखा है कि ऐसी जो पीली छांट (कसर) रह जाती है उसके लिए माँगना पड़ता है। पर, हम खूब गाया करेंगे कि काकाजी, पप्पाजी मिल गए, ये हो गया–वह हो गया, लेकिन मैं जैसे सुबह कह रहा था–हम इनकी बातों को सुनते हैं, फिर उस पर सोचते हैं। दूसरों को बात करते हैं, लेकिन वो स्वीकार करके हम खुद नहीं चलते। **आप लोगों को बात करता हूँ ऐसा नहीं, मैं भी खुद अपने आपके लिए यही सोचता हूँ। इसमें दो तीन पहलू हो सकते हैं।**

एक तो, हमें बस सुना ही करना है–पर बरतना है ही नहीं। दूसरा-इनकी बात पर हमें कोई भरोसा ही नहीं कि ये कहते हैं वो करेंगे तो हो जाएगा। सच में भरोसा नहीं होगा, वर्ना क्यों नहीं करे?

या

भरोसा है–इसलिए भी शायद नहीं करते कि इनके कहने पर चलने लग पड़ेंगे और हो जाएगा, तो वो पुराना कोकटैल कैसे पीएंगे?

.......काकाजी ने एक जगह लिखा है–कोई समस्या आ जाए तुम पाँच बम्बा वाला को बुलाओ। वो आ जाएगा और तुम्हारे भीतर के तंत्र को शांत कर देगा। वहां शब्द लिखा है उस कागज में कि इतना फर्स्ट एईड तो तुम कर लो। हम करते हैं क्या? तो आज मुझे यही बात करनी है कि **इनकी बातों का हम भरोसा करें....**काकाजी–स्वामिजी ने कितनी बार ये बातें करी हैं? गटर का पानी गंगा में डाल देंगे तो वो पवित्र हो गया। गंगाजी पर जाते हैं, सिर पर पानी चढ़ाते हैं, आचमन भी लेते हैं। ख्याल भी है कि गंगा का पानी है लेकिन उसमें गटर भी है। **वह हमें कैसे यकीन है कि–नहीं, अब वो पूरा पवित्र हो गया।** इसी तरह हम कहते जरूर हैं कि पप्पाजी का संबंध हो गया, स्वामिजी का संबंध हो गया। हमारा मोक्ष हो गया, कल्याण हो गया, पार उतर गए। लेकिन फिर **उस शिस्त से हम जीते क्यों नहीं?**

यह हरा अनुग्रह शिविर इसीलिए है कि पप्पाजी ऐसी कोई चाबी बता जाएं वही हरा अनुग्रह है कि–हमारे भीतर में अब कोई बदलाव आए कि **जिस प्लेटफार्म पर हम हैं उसके ही जो गुण, महिमा गाया करते हैं, उससे हमारी निगाह अब कुछ ऊपर उठे।** बाकी तो फिर सालों के साल गुजर जाएंगे-हम ये बातें करते रहेंगे, आप सब लोग सुनते ही रहोगे। लेकिन जो निशान था वो तो हांसिल नहीं हुआ। शिविर था, हम घर-घर के लोग बैठे हुए हैं इसलिए मैंने ये बात करी। **पप्पाजी आज हम पर ऐसा अनुग्रह जरूर करें कि हमारी निगाह अब नई क्षितिज पर जाए....**

### *( 2 फरवरी—हीरक जयंती की सभा )*

साढ़े तीन बज रहे हैं......इससे अधिक लेट हमें नहीं होना है क्योंकि अब पेट में कुरकुरी होने लगी.....सुबह बरसात आई-बेशक एक असुविधा जरूर हो गई। लेकिन मैं भीतर में खुश भी था-आप परेशान हुए इसलिए नहीं, लेकिन गुणातीतानंदस्वामी का एक प्रसंग है–महाराज एक बार कोई गांव गए थे। वहाँ किसी के पास एक अच्छी भैंस थी। तो महाराज ने कहा कि ये भैंस बहुत अच्छी है। उसने महाराज को कहा कि महाराज ऐसी दूसरी मिलेगी तो मैं मंगवा कर आपको दूँगा। थोड़े ही दिनों में महाराज स्वधाम चले गए। फिर गुणातीतानंदस्वामी के प्रसंग से वो भक्त को सत्संग की चिकनाई आयी। लेकिन उसके मन में वो बात रह गई कि महाराज ने भेंट माँगी थी, मैं दे नहीं पाया। पर, उसके लिए समस्या भी थी कि अब मैं कर भी क्या सकता हूँ? फिर-जैसे-जैसे सत्संग उसके जीव में बैठता गया, उसे हुआ कि महाराज वैसे गए तो है नहीं। भैंस जो मैं महाराज को नहीं दे पाया था, वो ये स्वामी को दे दूँ, तो जो मेरे भीतर में जलन है वो शांत हो जाएगी। उसने स्वामी को वो भैंस दी। स्वामी महाराज के अखंड धारक थे ही। तो स्वामी ने बेहिचक उसे कह दिया कि तेरी भैंस महाराज को मिल गई ! वाकई उसके भीतर में जो जलन थी वो भी शांत हो गई।

मैं पप्पाजी से खास कहने वाला था कि कई बार मैं देखता हूँ, सोचता हूँ–**यहां के जो सेवक लोग हैं, गृहस्थ भी हैं, बहनें भी हैं वो मेरे साथ ऐसे बरतते हैं कि शायद मैं काकाजी के साथ ऐसा बरत नहीं पाया।** तो ये जो सेवा करते हैं। आज मैं स्वामिजी की तरह तो दावे से नहीं कह सकता कि जाओ तुम्हारी सेवा काकाजी को पहुँच गई। लेकिन इन्होंने परिश्रम उठा कर जो सेवा करी है, आप इसे स्वीकारना और उसके फलस्वरूप वे वह काम में चैम्पीयन हो जाएं, माहिर हो जाएं वो उसका फल हो नहीं सकता। उसका **फल तो यही होना चाहिए कि हमारा प्रभु के साथ एक संबंध पक्का हो। हमारी कसर जो रह गई हो वो टल जाए, हमारी प्रकृति बदल जाए, हमारे प्रारब्ध टल जाएं और वो तभी हो सकता है, जब वो सेवा महाराज अंगीकार करें।** बीच में कोई देवता खा जाए वो सेवा महाराज को नहीं पहुँचती..आज इंद्रदेव ने आकर हमारी वो फेवर कराई और करी हुई सेवा महाराज को पहुँचाई है। वो क्या? जैसे ही बारिश शुरु हुई यहां से फोन पर फोन आने लगे-बारिश बंद करो, बंद करो। बीच में यह आया कि आज का कार्यक्रम यहां से मोकूफ रखें और कल या परसों शाह ऑडिटोरियम में करें। मैंने कहा–यह कोई बात है? ऐसे कैसे हम डर जाएंगे, पीछे हट जाएंगे? मैं मेरी हिम्मत पर नहीं कह रहा-1966 में काकाजी ने एक कागज लिखा था कि सब कुछ बापा कर रहे हैं और इस परीक्षा में से हमें पास हो जाना है। मैं तुम्हारे पक्ष में रहूँगा। काकाजी ने लिखा कि मैं हमेशा तेरे पक्ष में रहूँगा। बेशक, उस समय वो चीज नहीं पकड़ी गई, लेकिन अब तो पकड़ें।

अब इतना भरोसा तो हमें रखना ही चाहिए ना कि जो बारिश गिरती होगी, जो कुछ होता होगा, पर काकाजी मेरी

ही फेवर करते होंगे। फिर जो होता है वो हो। ज्यादा से ज्यादा क्या होता? कुछ नहीं, आसन गीले हो जाते-हम पानी में बैठते थोड़े। पप्पाजी को खाली संभालना पड़ता, बाकी तो कोई चिंता ही नहीं। तो ये फेवर क्या करी कि इन चीजों से हम डिस्टर्ब नहीं हुए....आप लोगों ने जो सेवा करी है उसका महाराज ने सुबह यूं बता दिया कि आपकी सेवा महाराज को जरूर पहुँची है। कोई यह नहीं सोचे कि ऐसा हुआ सो हमारी सेवा महाराज ने नहीं अंगीकार करी। यदि नेगेटिव सोच होगी तो माइंड तो यही सोचेगा। हमें पोझीटीव सोच पर जाना है। हम ऐसे हमेशा करते रहें....पर, नेगेटिव सोच पर जाएंगे तो ऐसा होगा कि अहोहो हमने इतनी भावना से, उमंग से दिल लगाकर मेहनत करके ये सब करा और यह मामला गड़बड़ हो गया। वो मामला गड़बड़ हो जाये उसका हर्जा नहीं। अपना भीतर का मामला गड़बड़ नहीं होना चाहिए। सो बैठे रहो, हो जाएगा—काकाजी हमारी फेवर में हैं ना? यह मैंने 1974 से मानने की शुरूआत धीरे-धीरे करी है। कुछ भी बनता है तो इतना भरोसा दिल में है कि कुछ भी होता होगा काकाजी तो मेरी फेवर में है। जब हमारी जमीन चली गई—तब भी मैंने दालिया को यही कहा था कि देखो मुझे इतना भरोसा है कि ज़मीन के कागज़ भी भले आ गए हों, कुछ भी आ गया हो। काकाजी वो डी.डी.ए. वालों के नहीं, पहले मेरे हैं। अभी नहीं पता लगता होगा,पता लग जाएगा कि क्या हुआ है? देखो, अभी अपना उत्सव भी अच्छी तरह निपट गया—हम डिस्टर्ब नहीं हुए। भीतर में कुछ रोश नहीं आया, मायूस नहीं हो गए। हम चलते रहे। **अपनी सेवा भी महाराज को पहुंची**, उसका यकीन कराया। यह इन्द्रदेव ने आकर हमें यकीन कराया। **वर्ना कहीं तो गुदगुदी रह जाती।** ओहो हमने अच्छा करा, ये करा, वो करा। ये तो अच्छी ब्रेक बीच में आई....

तो पप्पाजी को खूब-खूब धन्यवाद कि ऐसे पल-पल अनुभव कराते रहते हैं सब। इतनी एक प्रार्थना करनी थी कि जन्मदिन तो मैं आज यही मानता हूं कि पप्पाजी, अक्षरविहारीस्वामी, साहेब हैं—इन लोगों के बीच मेरा जन्मदिन तो जैसे घर में बड़े होते हैं, अपने छोटे काके का जन्मदिन मनाते हैं, वैसा मेरा जन्मदिन मनाया......

### *( 3 फरवरी—ब्रह्मस्वरूप प.पू. काकाजी महाराज के साक्षात्कार दिन की सभा )*

..... जब यहां महापूजा-पाटोत्सव की विधि का सोचा था, तब हमने इतना ही सोचा था कि ये विधि करके सीधे अक्षरज्योति की नींव रखने चले चलेंगे। लेकिन जब यहां देखा कि आप इतने आए हुए हो। खास करके मुंबई से, विद्यानगर से, ब्रह्मज्योति से, हरिधाम से और ये दिनकरभाई का शिकागो मंडल। तो एक छोटी-सी सभा कर लें। काकाजी का साक्षात्कार दिन है—तो मुर्हूत का कोई समय तो होता नहीं। 3 फरवरी के दिन तो कभी भी मुर्हुत कर लें.....

काकाजी कई बार बोलते—हमें एक स्पीरिच्युअल न्यूक्लीयस तैयार करना है। एक बार उनसे पूछा स्पीरिच्युअल न्यूक्लीयस का मतलब क्या? तो बोले—जहां मानसिक भूमिका हो ही नहीं। मन का आभास भी नहीं चाहिए, **ऐसा 'करा देना है।'** 'कर लेना है' नहीं बोलते..... कई बार कड़े तेवर में भी बोलते, यहां एक मूर्ति के नीचे लिखा भी है—'ऐसी कौन-सी कसर है जो रह जाती है और क्यों? यह सुन कर मुझे होता कि मैं तो इतना करा करता हूं।अब और क्या करूं? जितना हमारे बस का है, इतना करने तो लगे ही हुए हैं। फिर मैंने एक बार पूछा कि—काका इसके लिए क्या करें? बोले—करना क्या? तुम माँगते ही नहीं। माँगो-तत्काल मिलेगा। मैंने कहा—काकाजी ! कहीं, मांगते नहीं होंगे वो भी मान लिया। पर, सच में मांगने से मिल जाता है क्या? तो बोले बस यही विडम्बना है। तुम सब श्रद्धालु नास्तिक हो। ये शब्द आप लोगों ने भी सुना होगा। मैंने बोला—कुछ समझा कर बात करो—माँगो, माँगो कहते रहते हो। तो कहने लगे—प्रभु के अस्तित्व में विश्वास है? मानवस्वरूप में तुम्हें मिले। मन, बुद्धि, चित्त सभी सत्ताओं से पर। सभी सत्ता तो पतंगे जैसी है। **सर्वोपरि सत्ता का आधार लो—तुम्हारा फटाक से काम हो जाए ऐसी यह सारी नई डेवलपमेन्ट हुई है।** कितने हजार वर्षों के इतिहास के बाद। स्वामिनारायण ने यह बहुत बड़ी डेवलेपमेन्ट करी है। **अक्षरब्रह्म को व्यक्ति स्वरूप में—मानव स्वरूप में धरती पर ला कर और एक चमत्कार किया है** ! यह अभी तक हमारी ही बुद्धि में नहीं बैठा, तो दूसरे को कहां से समझाएंगे? फिर बोले-हमको ऐसा लगता है कि हमारे अंदर इतना सारा भरा है। ये कैसे जाएगा और ये कहते हैं—माँगो। फिर कहा—एक बात समझाता हूँ। बहुत गंदा पानी हो, उसे क्रीस्टल क्लियर करना हो, तो फिल्ट्रेशन प्रोसेसीस वगैरह चलते हैं। लेकिन गंदापन एकदम जाएगा नहीं। पर अब विज्ञान ने तरक्की करी। इस फिल्ट्रेशन के प्रोसेस से ऊपर—ऐसे केमीकल्स निकाले कि उसमें डालो तो इसकी प्रेसीपीटेट्स कहाँ गायब हो जाए और पानी एकदम क्रीस्टल क्लीयर दिखाई दे.... यूं ही तुम **ऐसे स्वरूपों में ऐसे लय और लीन हो जाओ—बस इतना करना है और फिर माँगा करना।** मैंने कहा भजन करते हैं, फिर भी कई बार मन नहीं करता। तो बोले—उसका

भी माँगो। बापा मुझे भजन करना है, पर होता नहीं। तुम्हारी प्रार्थना सच्ची होगी तो **उसकी तीव्रता-संजोग ला कर वो सेट कर देंगे....'**

**ये सब अक्षरधाम की बातें हैं।** पप्पाजी, स्वामिजी, दिनकरभाई वगैरह सब बैठे हैं। तो, आज के दिन बस ऐसे आशीर्वाद देकर जाएं कि ये बातों का हमें भरोसा आए कि सच में कोई नई चीज़ आई है... अपनी पूरी एक अलग-सी ही एन्ट्री है। एक बार इन्होंने यह बात करी कि–महाराज ने एक जगह लिखा है कि किस पल यह हो जाएगा ख्याल भी नहीं पड़ेगा। क्रम से होता तो धीरे-धीरे सेटिंग होता। ये तो फट हो जाएगा। तो हम मांगने लग जाएं, दिल की सच्चाई से हम मांगे कि–हे काकाजी ! हमें करना है, हे पप्पाजी ! हमें करना है, आप करा दो। लेकिन वहां भी सोचेंगे और प्रार्थना करने जाएंगे तब भी हम कहेंगे–पप्पाजी इतना करना, पर इतना सारा नहीं करना। हक़ीकत में ऐसा है। वो हमारा छूट जाए–इतने आप सब आशीर्वाद देकर जाओ।

***

## पू. भरतभाई—ताड़देव

*( 2 फरवरी—हीरक जयंती की सभा )*

.... आज ये पुस्तक हम सभी को देकर गुरुजी ने सही अर्थ में काकाजी के प्रति की भक्ति अदा करी है। गुरुजी को जब भी देखते हैं तो मैं गुरुभक्त की दृष्टि से ही उनको देखता हूं......

सभी ऐसी भावना लेकर आए हैं कि हम भी कुछ भक्ति अदा करें और पूरा जो मंडप लगाया है, जैसा कल बताया–सभी भक्तों ने अपनी भक्ति का दर्शन कराया है... आज गुरुजी के साथ जो पूरा समाज है–हम देख रहे हैं, वो आनंदी दीदी हैं, वच्छराजभाई हैं, हमारे राकेशभाई हैं–ये सब ऐसी भक्ति से, ऐसे अहोभाव से, ऐसे दिव्यभाव से गुरुजी से मिले हैं, उनका एक भी वचन खाली नहीं जाने देते हैं, तो गुरुजी ऐसा महोत्सव मनाने के लिए ना नहीं बोल पाए.....

*( 3 फरवरी—ब्रह्मस्वरूप प.पू. काकाजी महाराज के साक्षात्कार दिन की सभा )*

काकाजी छोटे-छोटे प्रसंग में भी हमें कैसे जीना वो बताते हैं.... वे हमेशा ऐसा रखते थे कि गाड़ी की जितनी केपेसीटी हो उससे एक भक्त ज्यादा लेते थे। एक बार जगह की तकलीफ़ के कारण बेग पीछे रखने की कुछ बात चल रही थी। तो ऐसे दो-तीन बार चल पड़ी। काकाजी ने एकदम बताया कि मुझे बेग की कुछ तकलीफ नहीं है, मगर आप जो संकल्प-विकल्प कर रहे हो, उससे मुझे ज्यादा तकलीफ होती है... तो आज दिव्य स्वरूपों के चरणों में यही प्रार्थना है कि हम सदा आपके पास ऐसे नीरव रहें, संकल्परहित रहें और अपना कुछ भी बीच में लाए नहीं ऐसी प्रार्थना है.....

***

## पू. शांतिभाई—विद्यानगर

*( 1 फरवरी—हरा अनुग्रह शिविर, सुबह )*

.... हम जानते हैं कि गुरुजी को सब ए-वन चाहिए, सब व्यवस्था अच्छी चाहिए–रहने की, खाने की, पीने की सब। लेकिन यहाँ ऐसा तो था नहीं, फिर भी सोचे बिना वे यहाँ आए.... **स्थूल समर्पण करना तो बहुत आसान है, लेकिन जो बुद्धि का समर्पण-मन का समर्पण करना है, वो बहुत कठिन है।** सत्पुरुष कई बार ऐसे खेलते हैं हमारे साथ, तब उनकी आज्ञा शिरोमान्य करना बहुत कठिन होता है। लेकिन साधक वो है कि सत्पुरुष चाहे कैसे भी वर्ताव करे, लेकिन उनके प्रति की दिव्यता अंतर में दृढ़ रखकर उनके साथ वर्ताव करे और तब अनुग्रह जरूर होता है। ऐसे काकाजी की कृपा गुरुजी ने सम्पादन की तो उन पर अनुग्रह हुआ....

***

## पू. महेन्द्र बापु—ताड़देव

*( 1 फरवरी—हरा अनुग्रह शिविर, सुबह )*

..... **हरा अनुग्रह** किसको बोलते हैं? **नो मेरीट रीक्वायर्ड....** आज ये उत्सव में हम बैठे हैं। नैमिषारण्य क्षेत्र में बैठे हुए हैं। कहते हैं कि नैमिषारण्य क्षेत्र में विचारधारा कुंठित हो जाती है। सचमुच ऐसा ही लगता है कि समारोह का–इन भक्तों का केवल दर्शन ही किया करूं.... गुरुजी ने यहां ऐसी गुरुभक्ति रखी है कि हर पौधा, हर पक्षी, धरती के कण-कण में एक ही आवाज़ आ रही है–काकाजी, काकाजी, काकाजी, काकाजी ! और हमारे दिल में से एक आवाज़ आ रही है गुरुजी, गुरुजी, गुरुजी, गुरुजी गुरुजी ! उससे भी आगे यह कि–**मुझे पता भी नहीं चलता कि गुरुजी का जन्मदिन मनाने के लिए आये हैं या काकाजी का जन्मदिन मनाने आये हैं–ऐसी गुरुजी की गुरुभक्ति है।** सभी भक्तों को भी ऐसा लग रहा होगा। **गुरुजी ने इतना प्रेम बांटा हुआ है कि भक्तों को तो मानो खुद का जन्मदिन हो ऐसा लगता है।** गुरुजी पूरे रूप से हमारे दिल में काकाजी की मूर्ति बैठा कर छा गए हैं.....

**हमने काकाजी को हमारे मन, बुद्धि की सीमित कक्षाओं में रहकर देखा होगा....** गुरुजी खूब, खूब, खूब और खूब व तीक्ष्ण बुद्धिशाली हैं। तो, सब के अन्दर उन्होंने सही रूप में काकाजी को पहचान लिया.... हम काकाजी को देख नहीं सकते, लेकिन काकाजी को देखने के लिए गुरुजी ने हमें दिव्यता के चश्में बना कर दिये हुए हैं। तो आज हम काकाजी की गरिमा को जान सकते हैं...

आज हम गुरुजी को देखते हैं तो एक रमता जोगी याद आ जाता है। **काकाजी** भी ऐसे थे। **हमेशा आनंद की मूर्ति ! उल्लास की मूर्ति ! बिल्कुल नेचरल।** कभी किसी को डाँटना हो, तो डाँट भी दें। ऐसा नहीं सोचे कि मुझे 'साधु' देख कर कोई क्या सोचेगा? लेकिन गुरुजी इज़ सो सीम्पल-सो नेचरल। वो हमने देखा है। **यहां के लोगों के साथ मिल-जुलकर रहना वो प्रकृति से बिल्कुल विरुद्ध था।** लेकिन गुरुजी ने अपने आपको काकाजी के ये भक्ति यज्ञ में पूरा खो दिया......

गुरुजी के जन्मदिन की शुरुआत कैसे हुई? बम्बई में योगिनी बहन सोच रही थी कि हमें हार बनाना है तो कैसे बनाएं? तो **काकाजी ने** उनके **सपने में कहा कि गुरुजी के लिए इस बार आप ऐसा-ऐसा हार बनाना।** तो ये जो सब हो रहा है, उसके पीछे एक शक्ति काम कर रही है, वो शक्ति है काकाजी की। आज **गुरुजी की सबसे बड़ी विशिष्टता** ये भी देखी कि इतना बड़ा मंदिर हो गया, इतने सारे भक्त हो गए। इतना बड़ा समारोह हो रहा है लेकिन गुरुजी सचमुच दिल से मानते हैं कि मैं **कुछ नहीं कर रहा हूँ। ये जो कुछ हो रहा है वो काकाजी की देन है—वही काकाजी का हरा अनुग्रह है.....**

✱✱✱

## पू. वशीभाई—ताड़देव

***( 1 फरवरी—हरा अनुग्रह शिविर, सुबह )***

..... दिल में मुझे ऐसा हो रहा था कि काकाजी की मूर्ति आज ऐसे कहेगी कि मुझे वहां मंदिर के प्लेटफॉर्म पर नहीं रहना, मुझे नीचे उतर आना है। सभी भक्तों की ऐसी भावना थी। जैसे ही यहां आए और गुरुजी से मिल कर कहा कि भक्त लोग ऐसी भावना के साथ आये हैं कि काकाजी आज बोलेंगे कि मैं नीचे आ जाता हूं। तो, गुरुजी बोले सचमुच ऐसा हुआ है। चल मेरे साथ—मैं ऊपर ले चलता हैं। हम लोग ऊपर गए और **हॉल देखते ही सन्न से हो गये।** गुरुजी ने सच में इतनी कृपा करी... ये फोटोग्राफ्स जो हैं वो इतने फेनेटीक हैं कि **देखते ही समाधि हो जाती है...** एक बहन है—नयना बहन-शांता बहन शिकागो से आये हैं, तो उन्होंने पांव में कुछ भी पहना नहीं था..एकदम ठंडा था। मैं बोला—आप कुछ पहन लो। तो बोले—**वशीभाई ! ये देखकर मुझे सुधबुध ही नहीं है** कि मोजे पहने हैं या नहीं। वो बोली कि **ऐसे फोटोग्राफ्स मैंने जिन्दगी में नहीं देखे हैं...**

..... तो गुरुजी ने ये बड़ा अनुग्रह किया है। नए-नए जो भक्त आए हैं, जिन्हें काकाजी का परिचय नहीं है। वो सब भी देखकर इतने खुश हो गए... पंजाब के, दिल्ली के भक्त तो आ-आकर मुझे गले लगते हैं। बस आप मिले—काकाजी मिले। ऐसी ये जो भावना काकाजी ने प्रकट करी है सो इतना भाव है। **सब लोगों को ऐसा लग नहीं रहा था कि गुरुजी के जन्मदिन पर आये हैं। हम को ऐसे ही लगा रहा है कि हम काकाजी के जन्मदिन पर जा रहे हैं...** ये सब लड़के लोग को देखें—थोड़े से समय में उन्होंने ये जो सब किया है—तो थोड़ा आभार दर्शन भी करता हूँ कि गुरुजी की आशिष, पू. भाईस्वामी एवं आनंदी दीदी का आयोजन... आखिरी मीटिंग में आनंदी दीदी ने कहा अपने पास 36 घंटे हैं अपने को सोना नहीं है। ऐसा समझना है कि वॉर है, तो उनके वचन से इन लोगों ने ऐसा—आप हर चीज़ में देखो एकदम भक्ति से किया है। ऐसा नहीं समैया है, तो चलो कर दो—ऐसा नहीं...

ये राकेशभाई, प्रभाकरभाई, जानी परिवार—सचमुच उन्होंने गुरुजी को काकाजी का रूप मानकर.... जैसे अभी **गुरुजी ने बोला—ये लोग करते हैं तो मुझे ऐसा विचार आता है कि मैं काका के साथ ऐसा नहीं बरत पाया हूँ जैसे ये मेरे साथ बरतते हैं।** रसोई की, उतारे की व्यवस्था ने सचमुच स्पेल बाउन्ड कर दिया है सबको और ये फोटोग्राफ्सदेख कर तो हमको ऐसा लगा—काकाजी सब को हाथ छुटी बला कर रहे हैं....

✱✱✱

## प.भ. पंकजभाई—शिकागो

***( 1 फरवरी—हरा अनुग्रह शिविर, सुबह )***

..... मैं शिकागो में था तो वहां से **एक रिक्वेस्ट** आई थी कि आप जब भी जाओ तो गुरुजी से एक प्रार्थना करना। तो आज सभी स्वरूपों के सामने गुरुजी को प्रार्थना करता हूं कि हमें सबका दर्शन मिलता है, पर **गुरुजी कभी अमेरिका नहीं आए।** तो आज सबके सामने प्रार्थना करता हूं कि **एक बार हम सभी हरिभक्तों को यू.एस.ए. में आपके दर्शन हों।**

✱✱✱

## प्रभाकर

***( 1 फरवरी—हरा अनुग्रह शिविर, सुबह )***

...... गुरुजी के साथ जुड़ने के बाद एक तो उनका अथाह प्रेम जो उन्होंने पहले मेरे विकास के लिए दिया, वह भुलाना

और चुकाना दोनों तरह असम्भव-सी बात है... आज गुरुजी की हीरक जयंती मना रहे हैं। हीरा जब जौहरी के पास जाता है, उस जौहरी को पता होता है कि इस हीरे को में कैसा आकार दूंगा और यह किस तरह चमकेगा? तो गुरुजी हमारे लिए वो जौहरी हैं....

..... गुणातीतानंदस्वामी की बातों में लिखा है कि जैसे माँ-बहन कपड़े बदलती हो और उस पर हमारी नज़र पड़ जाए, तो नज़र फेर लेते हैं, वैसे ही गुरुजी ने हमारी भूलों की तरफ़ से अपनी नज़र फेरी है..... गुरुजी ने हर एक के लिए इतनी मेहनत करी है कि कई बार तो वो हमारे लिए सारी-सारी रात जागे हैं। कभी उन्होंने यह भी नहीं देखा होगा कि मैंने खाना खाया या नहीं खाया.... धन्यवाद है सभी स्वरूपों को–काकाजी को कि **हमें एक ऐसी भेंट दे दी जिसका हमें पता नहीं कि क्या क़ीमत है इस चीज़ की?.......**

✷✷✷

## पू. दासस्वामी — सोखड़ा

***( 1 फरवरी—हरा अनुग्रह शिविर, सायं )***

.....हमने जीवन में जो कुछ किया है वह इन दिव्य स्वरूपों के संकल्प, करुणा, कृपा, अनुग्रह से ही हुआ है। ऐसी प्रतीति वाले, अनुभूति वाले हम सब यहां इकट्ठे हुए हैं....पप्पाजी ने भी आज दोपहर को हमको समझाया कि मैं क्रिया साध्य नहीं बल्कि कृपा साध्य हूं.....

.....गुरुजी का प्रागट्यदिन मनाया जा रहा है। महिमा कहना-महिमा में रहना एक पहलू है इस महोत्सव का। पर दूसरी कोई आस्पेक्ट भी ऐसे बड़े संत की होती है। किस तरह उसने स्वयं अपने जीवन में ऐसे हरे अनुग्रह को प्राप्त किया....मुकुंदस्वामी भले गिनीस वर्ल्ड बुक में इनका नाम ना हो, पर 32 बार 'मुगले आज़म' देखने वाली व्यक्ति–वह आज एक ऐसे समाज का परम भागवत् संत के रूप में कैसे हो सकता है? यह हरे अनुग्रह का ही परिणाम है....योगी बापा ने कहा था–कोई मुझे 100 सोने के मंदिर दे, इसके बजाय कोई दो हाथ जोड़ कर यूं कहे कि मुझे आपको प्रसन्न करना है, तो उस पर मेरी ज्यादा प्रसन्नता है। यह योगी बापा ने हरा अनुग्रह ही बहाया.....

गुरुजी के प्रसंग जानते हैं, क्योंकि वर्षो से उनके साथ रहे हैं। हर एक कॉलेज के नोटिस बोर्ड पर उनका नाम होता....यह कोई अनुकरण करने जैसी बात नहीं-हरा अनुग्रह के जो आभारी हैं वह बता रहा हूँ-दो जीवन की चरम सीमाएं-एक ही व्यक्ति की....

क्या करने से अनुग्रह हो इसकी कोई स्पष्ट व्याख्या नहीं। पात्र-पात्र के लिए अनुभव के प्रसंग अलग होते हैं। उसकी व्याख्या अलग होती है....काकाजी एक चीज खूब कहते थे कि यदि सरलता रखें और गुरुमुखी व ठहरावरहित रहें–ये मुद्दे दृढ़ करने की प्रार्थना और संकल्प करें तो जरूर उनके हरे अनुग्रह की अनुभूति हम हमारा समय गंवाए बिना जल्दी से जल्दी कर सकेंगे। सच में तो **गुरुजी के साथ चौबीस घंटे भी रहने को मिले–यह खूब आनन्द-गौरव का विषय बन जाता है....** पुरानी स्मृतियाँ भी ऐसी आत्मा में मिठास प्रकट करती हैं और **आज मंगलकारी प्रसंग पर काकाजी इस समाज में ना हो तो कहाँ होंगे? सभा में काकाजी ना हों तो ब्रह्मांड में कहाँ होंगे?** सो काकाजी भी हैं। **स्वामिजी भले जुहू में रहें पर उनका मन यहीं है। यह निश्चित बात है....**

सभी के चरणों में एक ही प्रार्थना है कि हरा अनुग्रह जो निरंतर हमारे चैतन्यों पर आपका बहा ही करता है–उससे हम कोरे नहीं रहें, कोई आवरण नहीं रखें–खूब सरल रहें और आपका सर्वोपरि सेवा का सर्वोपरि निमित्त बन कर रहें यही आपके मंगलचरणार्विंद में प्रार्थना.....

✷✷✷

## पू. स्नेहलस्वामी — सांकरदा

***( 1 फरवरी—हरा अनुग्रह शिविर, सायं )***

.....मुकुंदस्वामी का परिचय '61 के बाद हुआ....खूब तीव्र बुद्धिशाली ! एक जगह खड़े ही ना रहे....तब के मुकुंदजीवन स्वामी को देखो तो यूं हो कि मुकुंदस्वामी कैसे रह सकेंगे?..... पर, सच में मुकुंदजीवनस्वामी का स्वभाव इतना निखालस–हर एक के साथ जैसे दूध में शक्कर घुल जाए ऐसे **मुकुंदजीवनस्वामी** मिल जाते थे। **योगीजी महाराज के साथ अद्भुत–अद्धितीय संबंध ! काकाजी, पप्पाजी के साथ ऐसा अद्भुत संबंध**.....धर्म, ज्ञान, वैराग्य, भक्ति भले ही खूब हो, लेकिन स्वरूप के प्रति की निष्ठा जो ना हो तो वह एक के बिना के शून्य जैसा है। मुकुंदजीवनस्वामी के जीवन में देखें कि स्वरूप निष्ठा.....खुद ऐसा जीवन जीते हैं, तो खुद के जो शिष्य हैं उनमें यह आए ही.....आज मुकुंदजीवनस्वामी के जीवन में देखे तो कैसे मणि जैसे साधु। उनकी वाणी सुनें तो अंतर में ठंडक-ठंडक-ठंडक हो जाए......

मुकुंदजीवस्वामी की एक बात करूँ? इनको इतना मेरे प्रति भाव....हम 'भक्त' का ऐसा कि पित्तल के ही पत्तर में खाना खाना, लेकिन उनके मेरे प्रति इतना भाव कि नियम से परे जाकर मुझे स्टील का पत्तर दिलवाया और उसमें खाना खिलाया। विचार करें कि जब छोटे से छोटे संत, छोटे से छोटे भक्त का भी ऐसा माहात्म्य हो वे मुकुंदजीवनस्वामी कैसे?

प्रसंगों को अति सूक्ष्म दृष्टि से जब छानबीन करते हैं तब हमें ख्याल आता है कि किस कक्षा-भूमिका में यह साधु जीवन जीता होगा....

पप्पाजी कई बार कहते कि तुम्हें जिसे सौंपा है, वो शायद पूर्ण होगा या नहीं उसकी शंका करने की तुम्हें जरूरत नहीं। तुम तो उसे योगीजी महाराज का स्वरूप मान कर उसका सेवन करो—क्योंकि उन्होंने उसे चुना है। आज **मुकुंदजीवनस्वामी को चुनने वाले काकाजी, पप्पाजी और योगी जी महाराज हैं।** तो भले हमारे लिए मुकुंदजीवनस्वामी हमें मनुष्यभाव और मायिकभाव ले जाने लिए हमें कहते हैं कि मेरे में कुछ नहीं पर हमारे लिए सच में काकाजी स्वरूप हैं....

***

## पू. भाईस्वामिजी

***( 1 फरवरी—हरा अनुग्रह शिविर, सायं )***

.....**गुरुजी का जीवन खुद एक दृष्टांत रूप है**....सच में ऐसे संत की ओर निशान रख कर कोई जीए तो बड़े पुरुष जैसे चाहते हैं वैसे ब्रह्मरूप होने में देर नहीं लगे। गुरुभक्ति यज्ञ मनाने के लिए देखें तो उनकी पल-पल की क्रिया और बारीक से बारीक सूझ भी हमेशा एक ही बात रहती है कि कैसे करके काकाजी के स्वरूप की पहचान उनके संबंध में आए हुए छोटे-बड़े सब को हो। साथ में सेवकों को खुद बरत कर यह बताते रहे कि जिस सेवकभाव से मैं रहता हूँ और मैंने आदर्श रखा है उसी तरह आप सब साधना करते रहोगे तो भगवान की मूर्ति आप सब के हृदय में भी बस जाएगी....

दिल्ली का समाज छोटा है, मगर तीन महीने से दिन-रात एक करके सारे लगे हुए हैं, तो उन सब को केवल बड़े पुरुष की ओर निगाह रखकर जीवन जीने की प्रेरणा मिले और उन सब के जीवन में महाराज बस जाएं व सब ब्रह्मभाव में रहते हो जाये ऐसे आज के दिन आशीर्वाद दें....

***

## प.भ. अजय मल्कानी

***( 1 फरवरी—हरा अनुग्रह शिविर, सायं )***

.....गीता किन्होंने ने नहीं पढ़ी? लाखों लोगों ने पढ़ी हैं। पर समस्या यह है कि हम फॉलो नहीं करते हैं। जैसे गुरुजी कुछ बोले तो सभा में समझ भी लेते हैं, ताली भी बड़ी जोर की बजा देंगे....बाहर जाकर यही कहेंगे वाह-वाह गुरुजी ने क्या बातें करी। पर हम फॉलो करने के लिए तो तैयार हैं नहीं। सभा में प्रार्थना ये करनी है कि हम ऐसे बन जाएं कि हम जो चीज़ समझें, सुनें उसे सच में फॉलो भी कर पाएं....

***

## प.भ. वच्छराजभाई

***( 1 फरवरी—हरा अनुग्रह शिविर, सायं )***

.....गुरुजी इतने छुपे हुए रहते हैं कि उनको समझ पाना कठिन है। लेकिन जहाँ भक्त प्रभु को पुकारता है वहां प्रभु इतने सरल हो जाते हैं कि सालों से जिसकी कल्पना नहीं कर पाते हैं वो मिनिटों में हो जाता है....किसी छोटी बात को वो खूब बारीकी कर जाते हैं कि हमें लगता है कि गुरुजी का जो माहात्म्य भरा जीवन है वह एकदम साफ-सुथरा....आज इस समय जो हम उनका माहात्म्य गाते हैं वो हमारे जीवन में सार्थक हो—बस गुरुजी जो बोलें वही करना है....

और हमें आज यही प्रार्थना करनी है कि गुरुजी की तबियत बहुत अच्छी रहे, ऐसे ही हँसते-खेलते रहें। इतना आनंद कराते हैं गुरुजी हम सब को। अपने लिए स्पेशयल कमरा भी है, लेकिन कभी अंदर नहीं सोते। सर्दी में नहीं, गर्मी में नहीं-सब भक्त लोग आओ। टेलीफोन करेंगे रात को ग्यारह बजे—तुम आ जाओ ना, मैं अकेला हूँ। हम साथ में सब युवक लोग सोते हैं आनंद कराते हैं...

***

## प.भ. महेन्द्र जयस्वाल ( जगरांव )

***( 1 फरवरी—हरा अनुग्रह शिविर, सायं )***

काकाजी तकरीबन सोलह-सत्रह वर्ष पहले पंजाब आए... काकाजी के जाने के बाद गुरुजी वहां कार्य कर रहे हैं। उसमें हमको सबको मिल कर योगदान देना चाहिए और काकाजी का स्वरूप समझ कर उनको पहचानना चाहिए और गुरुजी को **एक प्रार्थना** करना चाहता हूँ कि **1998 में काकाजी का साक्षात्कार दिन व गुरुजी का जन्मदिन जगरांव में मनाया जाये...**

***

## पू. प्रज्ञानंदस्वामिजी

***( 2 फरवरी—हीरक जयंती की सभा )***

....जब भी मैं शिकागो जाता हूँ तो दिनकरभाई से मिले बगैर मेरा मन नहीं मानता। चूँकि उनसे ही मुझे ऐसे संत के दर्शन हुए थे और अभी भी मैं आया हूँ कि दिनकरभाई यहाँ आ रहे हैं तो मैंने कहा कि मैं अवश्य आऊँगा...

जब हमारी छोटी-सी कुटिया में काकाजी पधारे....जिस समय उस स्वामिनारायण मंत्र का गान किया तो, उस समय मैं बहुत अविभूत हो गया था। जिस भाव से उन्होंने मंत्र को दोहराया था, जिस स्पीड में-मैं तो कल्पना भी नहीं कर सकता कि इस मंत्र को इतने भाव से, इस रूप में दोहराया और गाया जा सकता है। वो क्षण अभी भी मुझे स्मरण बना हुआ है। आज हम इस अवसर पर जो हैं उनसे सिर्फ यही निवेदन करना चाहेंगे कि संत का कभी अवसान नहीं होता....**अंत तक**

**जिसका साथ रहे उन्हीं का नाम संत होता है....**

उनसे प्रेरणा लें, उनसे प्रकाश लें....ऐसे व्यक्ति शक्ति बन करके आपका मार्गदर्शन करें। **वो व्यक्ति नहीं बल्कि शक्ति बन गए। शक्ति को छू करके शक्ति बन जाया करते हैं। शक्तिपात से व्यक्ति शक्तिमय बन जाया करता है।** तो जब कभी भी उनको स्मरण करेंगे......**जब भी उनका प्रेम से, हृदय से स्मरण करेंगे तो काकाजी वहां प्रकट हो जाएंगे। यह विश्वास का विषय है, अनुभूति का विषय है—अभिव्यक्ति का विषय नहीं...** उनकी प्रतिमूर्ति काकाजी के दर्शन आप स्वामिजी महाराज में आज कर सकते हैं। **उनकी प्रत्यक्ष ज्वलंत प्रतिमूर्ति के रूप में आपके सामने प्रत्यक्ष मार्गदर्शन के लिए हैं** और जहां ये उपलब्ध ना हों—सूक्ष्म उनके स्मरण से मार्गदर्शन हो जाएगा, यह मेरा यकीन है, मेरा विश्वास है.....

✷✷✷

## मा. श्री सनत महेता साहेब

***( 2 फरवरी—हीरक जयंती की सभा )***

.....मेरा इस संप्रदाय से कोई इतना संबंध नहीं। लेकिन काकाजी को मिलने का अवसर प्राप्त हुआ। कई बार हमने बहुत सारी बातें की और इस संबंध में मेरी भावनाएं प्रस्तुत करने के लिए मैं यहां आया.....**काकाजी का एक सपना था और वो सपने को उन्होंने नाम दिया था—'योगी डिवाईन सोसाईटी।'** कई बार हमारी चर्चा हुई। काकाजी का सपना था कि उसको एक बड़ा स्वरूप दें—ऐसा स्वरूप कि हमारा जो आध्यात्म जीवन है और हमारी पुरानी संस्कृति की जो अच्छी चीजें हैं और अब जो समय बदला है उसके साथ वे हर चीज़ को जोड़े। **काकाजी सिर्फ यह नहीं चाहते थे कि दिल्ली में एक बड़ा मंदिर बने। उनके दिमाग में ये था** कि ये जो सारा मानव जीवन है वो इस तरह से विकसित हो रहा है कि शायद हो सकता है कि हमारी जो अच्छी-अच्छी बातें है वो हमारे हाथ से छूट जाएं.....**तो हमारे ये जो पुराने मूल्य हैं उनको हर चीज से जोड़ना है।** ऐसी कई चीज़ें इनमें से आ रही थी।

**यूं मैंने तो उनको एक बड़े क्रांतिकारी आदमी की हैसियत से देखा है।** वो **चिला-चालू, छोटी-मोटी, इधर-उधर की बातों में संतोष मिले, ऐसी उनकी आत्मा ही नहीं थी....काकाजी की जो एक गतिशीलता है, जिसका उदाहरण यहां जो बहनें बैठी हैं वो काकाजी की गतिशीलता का जीता जागता नमूना हैं।** यह कोई आसान चीज नहीं। उन्होंने मुझे समझाया था कि किस तरह वो योगी बापा से अलग हुए, क्यों अलग होना हुआ? उसके पीछे उनका क्या दिमाग चल रहा था। क्या मंथन चल रहा था? मुझे कुछ **ऐसा लगता है कि जिस चीज को लेकर काकाजी निकले थे वह गतिशीलता कुछ कम होती जा रही है। हम भी चिला-चालू होते जा रहे हैं।** मैं नहीं चाहता कि काकाजी को याद करने वाले लोग गतिशीलता गुमाएं....

अच्छा है कि एक बहुत अच्छी स्मृति काकाजी की बन गई...**हिन्दुस्तान ताजमहल बना सकता है, लेकिन एक अच्छा प्राईमरी स्कूल नहीं बना सकता। यह हमारी करूणा है.....** काकाजी के दिमाग में भी ऐसा ही एक ख्याल था....मैं यहां आया हूं तो मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई उनकी तस्वीरें देखें। **मैं कोई व्यक्तिपूजक नहीं।** नॉन कनफरमिस्ट आदमी हूँ, पॉलिटिक्स में हूँ। जो दिल में आता है वो कह देता हूँ। इसलिए मेरी हालत भी पॉलिटिक्स की नजर से अच्छी नहीं है, जितनी होनी चाहिए। लेकिन मुझे इसकी परवाह नहीं। क्योंकि देश जिंदा रहता है—वो क्या विचार प्रदान करता है उस पर देश जिंदा रहे। सिर्फ जिन्होंने बहुत बड़े मकान बनाए इमारतें बनाई इसलिए वो नहीं टिक पाए। हिन्दुस्तान की सबसे बड़ी देन विचार की है। **काकाजी की जो फ्रन्टीयर्स थी, उनकी सीमाएं थी वो बहुत बड़ी थी....**वो आसान काम नहीं है। **वो तो बहुत क्रांतिकारी दिमाग रखते थे। उन्होंने एक दिन मुझे वॉट विल बी धी अलटीमेट योगी डिवाईन सोसाईटी वह समझाया था। इससे आकर्षित होकर मैं इस तरफ आया.....**

आपको इस बात को कहने आया हूँ कि जिनकी क्षितिजें, जिनकी फ्रन्टीयर्स-सरहदें सीमा के पार थी, उसको पकड़ने के लिए हमे कोशिश करनी पड़ेगी। तब ये जो सेन्टर है वो काकाजी की असली स्मृति रख पायेगा। वर्ना मुझे बम्बई की जो वो छोटी-स्मृति वाली जगह है उससे मुझे ज्यादा संतोष मिलेगा, इससे मुझे ज्यादा संतोष नहीं मिलेगा....यदि वो क्षितिज को हमने नहीं पकड़ा। **गुरूजी के उत्सव निमित्त काकाजी की उन स्मृतियों को कहने के लिए सिर्फ आया...शायद कभी ना भी आऊँ।** क्योंकि मुझे ये सारी चीज़ें दिल को बहुत परेशान करती हैं। सुबह से मैं परेशान हूँ......

**पू. काकाजी** ने योगी बापा की जो सारी स्मृतियाँ थी उनको भर के **'समथिंग बिगर धेन एकलव्य' किया—**अधिक ज्यादा और किस्म का। एकलव्य अपने दिमाग से वो कटुता नहीं निकाल सका। सिर्फ उन्होंने उनका ज्ञान ले लिया था। **काकाजी के दिमाग में-दिल में कोई कटुता नहीं थी....**बहुत डीफीकल्ट चीज है। एक छोटा-सा हमारा अपमान करते हैं तो हम उसके बारे में कितना गलत सोचने लगते हैं और माईंड गोज-गोज, यू कान्ट स्टोप इट। ये जो भावनाएं उनकी थी, जो क्षितिजें थी, योगी डिवाईन सोसाईटी के बारे में उनकी जो एक परिकल्पना थी, उस कल्पना

को साकार करने के लिए हम लोग कोशिश करें। **उत्तर भारत का समाज नसीबदार है क्योंकि काकाजी को जो दिल्ली का सेन्टर था वो बहुत था।** दो चीजें उनको बहुत पसन्द थी। एक दिल्ली का सेन्टर और आणंद की बहनों की जो संस्था है–वो उनके बहुत उत्कृष्ट सपने थे और वो सपने में वो ताड़देव का एक छोटा-सा दिया था। जो लोग काकाजी की इतनी स्मृतियाँ आज याद करते हैं–**उन स्मृति से सिर्फ सन्तुष्ट होकर** कि अपना काम निकल गया, ऐसी गलतफहमी से बाहर निकाल कर **उन क्षितिजों तक पहुँचने की कोशिश के लिए थोड़ी सी कोशिश करें.....आप उस आदमी की सीमा तक पहुँचने की कोशिश नहीं करते हो ऐसा मुझे लगता है।**

मेरी ये भावनाएं व्यक्त करने के लिए आपने मौका दिया। मुझे बहुत लोग जानते नहीं है, मुझे ज्यादातर पॉलटीशियन, एकोनोमिस्ट, फाइनेन्स मैनेजर ऐसी-ऐसी चीजों में जानते हैं.....मेरे दिल के अन्दर रखा एक क्षेत्र है–अध्यात्म है, उसको मैं कभी बहिरमुख नहीं बनाना चाहता। मैंने उसको अंतर्मुख रखा हुआ है। ये मेरे जीवन के आचरण का सवाल है... मैं उनको बुनियादी बात समझता हूं.......

गुरुजी को धन्यवाद देता हूँ कि उन्होंने ये काम उठाया, लेकिन बहुत कठिन काम और ये कठिन काम में हम लोग गुरुजी को मदद करें–दिनकरभाई को मदद करें क्योंकि मैं देख रहा हूँ दिनकरभाई को कि उनका एक तादातम्य काकाजी के साथ है। लेकिन परसोनेलेटी इज़ टोटली डीफरन्ट-ये तो बड़े शान्त चित्त आदमी हैं। काकाजी तो एक पाँच मिनिट भी शांत नहीं बैठ सकते थे। इतनी देर आप उनको यहाँ बिठाते, तो कई बार ऐसे-ऐसे कर देते–तुम इधर आ जाओ–यहाँ आ जाओ....ये उनका जीवन था–लेकिन संघर्षमय जीवन! भगवान ने मुझे स्वास्थ्य दिया-माई एज इज 72 और मैं इतना घूम सकता हूँ। काकाजी को ये स्वास्थ्य मिला होता तो कमाल हो जाता.....वो विचार से हमारे साथ हैं, इसकी मुझे बड़ी खुशी है...मुझे काकाजी के इन पत्रों को भी पढ़ने दिया होता तो मैं खुशी से पढ़ता लेकिन आज उसी किताब को यहां उद्‌घाटन करने के लिए कहा इसलिए मैं अपने आपको धन्य समझता हूँ। आपको मेरी बात-मालूम नहीं अच्छी लगी, बुरी लगी–लेकिन मेरी दिल की बात है इसलिए मैंने कही...गुरुजी ने मुझे मौका दिया–पप्पाजी ने मुझे मौका दिया। आप लोगों का शुक्रिया अदा करता हूँ–धन्यवाद!

***

## मा. श्री एच.के.एल. भगत साहेब

*( 2 फरवरी—हीरक जयंती की सभा )*

मुझे आज बेहद प्रसन्नता है कि महोत्सव में मैं यहाँ आया हूँ....मेरी जान-पहचान काकाजी से कई वर्ष पहले हुई। उनके साथ ही गुरुजी से पहचान हुई। **गुरुजी अपनी सोच के पक्के हैं.....**जब मुझे बुलाया जाता है तो मुझे बहुत खुशी होती है.....

***

## प.भ. विट्ठलदासभाई — आणंद

*( 2 फरवरी—हीरक जयंती की सभा )*

.....पहली बार साहेब के साथ काकाजी मेरे प्रिंटिंग प्रेस पर आए। चंदे का एक पेम्फलेट छपवाने के लिए काकाजी आए थे। बोले–आप कितने दिन में ये पेम्पलेट बना देंगे? मैंने बताया पाँच दिन में। बोले आपको गुणातीत ज्ञान की बाराखड़ी सीखनी होगी। **उनकी काम कराने की जो लौ थी–उस दिन मैंने काकाजी में वो शक्ति देखी।** बोले–आप सुबह तक में ये तैयार कर दो। वो **काकाजी की धगश थी कि जो काम एक घंटे में हो 10 मिनिट में करना चाहिए।** वो सीख हमने काकाजी में से पाई। 1965 में मेरा दूसरा छोटा-सा प्रेस करना था। उसके उद्‌घाटन के लिए मैंने बापा को खत लिखा, तो **बापा ने मुझे पोस्ट लिखी** कि दादुभाई साहेब वहां है, आप उनको बुला लेना। **उसमें हम आ गए।** ऐसा मान लेना। तो **बापा के दिल में काका का कैसा स्थान था वो उन्होंने मुझे 1965 में लिख कर बताया था** और वैसा ही काका ने वहां किया था....काकाजी ने पहले धून करवाई कि आपकी जो प्रिंटिंग प्रेस की जगह है वो शहर के बीच में होनी चाहिए, अच्छी जगह होनी चाहिए और वो मिल जाए, उसके लिए 5 मिनिट धून करें। काका का मेरा ऐसा बहुत परिचय तो था नहीं मगर **बापा ने जो लिखा था कि उसमें हम आ गए,** तो **काका ने अपने आप यह प्रतीति करवाई।** मैंने तो काका को कुछ कहा था नहीं। फिर मुझे बहुत अच्छी जगह मिली....

1966 से हम अलग हुए वह इतिहास तो हम सब लोग जानते हैं। तब बापा को मैंने पूछा था कि–काकाजी और मुकुंदस्वामिजी को पत्रिका चालू करनी थी....**बापा ने बोला संत लोग जो हैं, हमारे लिए उन्होंने झुकाया है। हमारे सिर के मुकुट बराबर हैं। वो महिमा की ही बात सोचेंगे, महिमा की ही बात लिखेंगे। तो आप उनकी पत्रिका प्रिन्ट करो।** सनतभाई ने बताया–काकाजी बहुत क्रांतिकारी थे। उनके दिमाग में जो था–वो हमें नई चीज़ देने के लिए आए थे। सनतभाई ने जो बताया कि गुणातीत ज्योत की बहनों का जो कार्य है वो एक नई चीज़ थी। ऐसी तो बहुत बातें काकाजी के दिमाग में थी। **काकाजी का संकल्प बहुत ऊंचा था, बहुत उत्कृष्ट था। उसी दिशा में हम सबको मिलकर काम करना है....**

**काकाजी ने बापा के लिए सारी कुर्बानियाँ दी। उन कुर्बानियों का हमको ऋण चुकाना है।** तो **काकाजी का एक** विज़न था, **गुणातीत समाज के लिए विज़न था।** ऐसे प्रसंग पर हम सब इकट्ठे होते हैं,तो पता चलता है। **नई चीज़, नई दिशा–कोई नया ज्ञान देने की और हमें आत्मसात कराने की उनकी ख़्वाईश थी।** वो समझने के लिए अब **काकाजी के पत्रों द्वारा और अभी के प्रत्यक्ष स्वरूपों के द्वारा समझ कर काकाजी का ऋण चुकाने के लिए आज संकल्पबद्ध होते हैं....**

आज गुरुजी की हीरक जयंती का दिन है। हम सब लोग संकल्प करते हैं कि आपके कार्य में–आपके द्वारा काकाजी का संकल्प जो आगे चलाना है वो चलता रहेगा और हम सब लोग आपके साथ रहें। दिल्ली मंडल ने परिश्रम करके यह उत्सव प्रस्तुत किया। सब लोगों को इसमें शामिल होने का लाभ मिला, इसलिए उन सब लोगों को भी हम धन्यवाद देते हैं... हमारे लिए जो भी सेवा काकाजी का ऋण अदा करने के लिए सौंपी जाए, उसमें हम पूरे साथ से करेंगे। हमको ऐसा दृढ़ बुद्धियोग देना कि उसमें हम सम्मिलित हों !

✷✷✷

## प.भ. राकेशभाई

***( 2 फरवरी—हीरक जयंती की सभा )***

**प.पू. गुरुजी** से मेरी मुलाकात 1991 में हुई.... **जगत की साधु की परिभाषा से बिल्कुल अलग निराले साधु हैं। सच्चे साधु हैं।** इनकी सारी निगाह केवल चैतन्य का जतन करने के लिए ही है। **चाहे फिर खुद को बुरा भी दिखना पड़े।** तो भी **ये परवाह नहीं करते.... हर पल इनका नया ही रूप होता है,** क्योंकि इनकी सारी क्रियाएं चेतनालक्षी होती है और हमारे सारे मूल्यांकन जो हैं वो भौतिक होते हैं....

**कृष्ण** के बचपन को देखा जाए, बाल लीला को देखा जाए तो **जिसने चीर हरण की लीला देखी होगी, वो यह कभी नहीं मान पाएगा कि उसी ने द्रौपदी के चीर पूरे थे। कैसा विरोधाभास?** ये विरोधाभास ऐसे स्वरूपों के जीवन में होता ही है। उनकी हर एक क्रिया पल-पल पर उस संयोग के अनुसार उस जीव के लिए क्या भला है? उस पर निर्भर होती है.... मेरा ये पक्का मानना है कि प.पू. गुरुजी की क्रियाएं–मूल्यांकन गलत कर रहे हैं या समझ नहीं पा रहे हैं। **प.पू. गुरुजी का एक विशिष्ट गुण यह कि वो सतत् जाग्रतता रखते हैं...** हालांकि वो किस स्थिति पर हैं ये शायद मेरे बयान करने की क्षमता तो नहीं है। लेकिन कई लोगों को अनुभव हो चुका है... सभी गुणातीत स्वरूपों सेयही प्रार्तना है कि हमारी निगाह सतत् गुरुजी पर रहे–सिर्फ उनकी मर्जी, उनका अभिप्राय वही, हमारा जीवन बने–ऐसी आप कृपा कर दें....

✷✷✷

## प.भ. पुरी साहेब

***( 2 फरवरी—हीरक जयंता की सभा )***

पिछले चार साल से गुरुजी के सम्पर्क में आया। मुझे एक भी ऐसा इंस्टन्स महसूस नहीं हुआ जब गुरुजी ने यह दर्शाने या समझाने की कोशिश करी हो कि मैं दिल्ली मंडल का हूँ या दिल्ली के लिए हूँ। गुरुजी के हर प्रवचन में काकाजी की बात तो अलग छोड़ी जाए, पर–पप्पाजी का, स्वामिजी का नाम ना आए ऐसी सभा मैंने कभी एटेन्ड नहीं करी, कभी सुनी नहीं। इतने बड़े संत ने अपनी प्रेरणा के लिए एक-दो स्तंभ स्थापित किए हैं, कितनी बड़ी बात है....

मैं बड़े फक्र के साथ यह मानने तैयार हूँ कि काकाजी जैसे जौहरी ने आज जिस हीरे को अथक परिश्रम से तराशा, हीरे ने अपने को तराशने के लिए, अपने आपको उस रूप में ढालकर प्रस्तुत किया है.... कई पत्थर ऐसे कमजोर होते हैं कि जब तराशना शुरू करते हैं तो वो चटक जाते हैं,टूट जाते हैं। लेकिन इस हीरे ने अपनी फुल ग्रेविटी के अंदर फुल फोर्स के अन्दर काकाजी जैसे जौहरी के सामने अपने को प्रस्तुत किया और तराश कर आप लोगों के सामने...

आज खुले मन से गुरुजी के चरणों में ऐसी प्रार्थना है कि कभी भी किसी संत की या हरिभक्त की तरफ से कोई बात ऐसी निकले जो हमारी समझ से परे हो, वो हमारे मन को छुए नहीं, हमारे मन के तंत्र को वो छेड़े नहीं। अगर छेड़े तो आप अपनी अमृत वर्षा से उसको शांत करें–ऐसी हमें सामर्थ्य दें, भावना दें, बुद्धि दें और साथ में **हम कभी मेरा, अपना, आपका या पराया न सोचें। यह न सोच पाएं कि दिल्ली में ये, बाम्बे में ये, दूसरी जगह ये या तीसरी जगह ये।** क्योंकि हम गुणातीत समाज के एक अंग–एक आध्यात्मिक विचार के अलावा हम कुछ सोच ना पाएं....

✷✷✷

## प.भ. एन.के. अग्रवालजी

***( 2 फरवरी—हीरक जयंती की सभा )***

... जो काकाजी थे या जो काकाजी हैं, उनको अभी तक ना किसी ने पहचाना है ना पहचान सकेगा... लेकिन एक बात तो सच है कि प.पू. गुरुजी काकाजीमय रहकर जीए हैं। अभी भी अपने आपको उन्होंने काकाजी से अलग नहीं समझा है... **गुरुजी का जीवन अपने आप में एक दर्शन है, एक दर्पण है...**

सच में मेरी आंखों में आंसू आ जाते हैं कि हमारे ऊपर एक ऐसा बैठा हुआ है कि हमारी किसी भी क्षण, किसी भी तकलीफ, किसी भी मुसीबत में रक्षा करने वाला है। ये एक बड़ा भरोसा गुरुजी ने हमको दिया हुआ है यहां पर कि अपने परिवार में कोई भी समस्या होती है तो गुरुजी के पास दौड़े चले आते हैं...

गुरुजी के व्यक्तित्व का सब से बड़ा आकर्षण के **उनके व्यक्तित्व में एक चुम्बकीय शक्ति है। जो उनकी ओर देखता है, तो बस खींचा ही चला आता है। गुरुजी का जो आकर्षण है, वो आकर्षण काकाजी से ही मिला है.....** मैं तो बस सभी स्वरूपों के समक्ष इतनी ही याचना करता हूं कि—हरा अनुग्रह करके तुम मुझ को इतना बल दो, हर शय में तुम्हें देखूं मेरी ऐसी नज़र कर दो....

✱✱✱

## पू. हिंमतस्वामी

*( 2 फरवरी—ब्रह्मस्वरूप प.पू. काकाजी महाराज के साक्षात्कार दिन की सभा )*

..... काकाजी का बहुत बड़ा ऋण है। इंग्लैंड की ब्रह्मज्योति की जो तपोभूमि है—वह 1981 में जब लेने का विचार करते थे, तब सभी का मत अलग पड़ता था... काकाजी पेरीस में थे, जून-जुलाई में और वहां से सीधा शिकागो जाकर वापिस आने वाले थे। काकाजी का प्रोग्राम अचानक बदला और वे सीधे ही पधारे। सहज ही हुआ कि काकाजी को बात करें कि ऐसे दुविधा में हम पड़े हैं... काकाजी को सहज बात करी और ब्रह्मज्योति की तपोभूमि है वहां काकाजी को तुरन्त ले गए। काकाजी एकदम ध्यान में चले गए, तुरन्त मेरा हाथ पकड़ कर कहा—राजा! तुझे जो मानना हो मान—मैं ही पप्पाजी हूँ, मैं ही साहेब हूं, मैं ही स्वामिजी हूं, बस-इकट्ठे मिलकर ले ही लें हम। सच में उनके आशिष वचन से यह ब्रह्मज्योति की तपोभूमि भी आ गई। बाकी व्यावहारिक रूप से देखें तो खूब मुश्किलें थी। लेकिन 6 महीने के अंदर सब क्लीयर हो गया।

आज गुरुभक्ति यज्ञ के मंगल अवसर पर एक प्रार्थना करनी है कि हमारे जीवन में एक जपयज्ञ का आसरा लेकर हम सब तन, मन, धन, आत्मा से सुखी हों.....

✱✱✱

## प.भ. वालिया साहेब

*( 3 फरवरी—ब्रह्मस्वरूप प.पू. काकाजी महाराज के साक्षात्कार दिन की सभा )*

सबसे पहले आपको मेरा परिचय बता दूं। मैं ऊधमपुर से आया तो इसकी गलतफहमी जो है—मैं दूर कर दूं कि मैं रिटायर नहीं हुआ हूं। एक सेना छोड़कर दूसरी सेना में आ गया हूँ। फर्क सिर्फ इतना ही है कि उस सेना में जनरल बनने के लिए लगभग 40 साल लग गए। इस सेना में आते ही कुछ बन गए, मालूम नहीं क्या बन गए। लेकिन अभी हमारा रैंक 'सेवक' का है। जैसे-जैसे आशीर्वाद मिलता जाएगा सेवक की उन्नति होती जाएगी...

दूसरा मेरा जो अनुभव है वो है **स्वामिनारायण मंत्र** की महा-महाशक्ति ! **ये एक ऐसा मंत्र है कि कठिन से कठिन समय पर भी वह मंत्र अपने आप आ जाता है। आपको सोचने की जरूरत नहीं है इसकी कभी भी।** ऐसा रामबाण-**रामबाण तो** मेरे ख्याल से आपको **चलाना पड़ता है, पर ये अपने आप चलने लगता है...** इससे ज्यादा शक्तिशाली कोई शक्ति नहीं है।

✱✱✱

## प.भ. मल्कानी साहेब

*( 3 फरवरी—ब्रह्मस्वरूप प.पू. काकाजी महाराज के साक्षात्कार दिन की सभा )*

..... मैं गुरुजी को यह याद तो दिलाना नहीं चाहता कि वो 60 साल के हैं या 260 साल के हैं। **मेरे मन से तो गुरुजी एईजलेस हैं।** मैं अन्तर से मानता हूँ कि ही इज़ एईजलेस। गुरुजी को मैं अगर धन्यवाद करने लगूं तो शायद एक दो घंटे तो कम से कम लग ही जाएं। मेरे में खुद सवाल आता है कई टाईम कि **गुरुजी को कैसे मैं अपनी ग्रेटीट्युड दिखाऊं?** कई टाईम विचार आता है कि **गुरुजी ने हमारे लिए क्या-क्या किया है? गुरुजी को** मिलने के बाद, उनका **पहला दर्शन होने के बाद मेरी लाईफ की जो दिशा कही जाए या जो फोकस कहा जाए वो तो सारा बदल गया.....**

गुरुजी को जब से मिले—गुरुजी ने बड़ी मेहनत करके, बहुत समझाया कि गुणातीत स्वरूप क्या है? गुणातीत स्वरूप की पहचान बताई। मैं पक्का में जानता हूँ कि प.पू. काकाजी गुरुजी के गुरु हैं। मगर **गुरुजी ने एक बात मुझे पहले दिन से ही बहुत अच्छी समझाई कि काकाजी, पप्पाजी स्वामिजी, साहेब, अक्षरविहारीस्वामी—ये सब एक ही हैं। It doesn't matter whose style, whose way you can follow? Maharaj is present in all of them and this stuck me. मेरे दिल में गुरुजी की ये बात बिल्कुल बैठ गई।** Apart from कि हमारी लाईफ का फोकस बदल गया... काकाजी को जब मिले तो एक मन में बात थी कि सारंगपुर में हनुमानजी के मंदिर में जाएंगे। गुरुजी ने मुझे ऐसा कहा कि काकाजी आपको ले जाएंगे, तो काकाजी In the mean time left his

body. एक दिन गुरुजी ने बोला कि स्वामिजी का टेलीफोन है और आप उधर जाओ तो स्वामिजी आपको सारंगपुर ले जाएंगे। Anyway हम तैयार होकर गए... इधर से मेरे ख्याल से 40-45 चले थे। बापु भी था उधर-महेन्द्र बापु ! तब से हमारा महेन्द्र बापु के साथ बहुत प्रेम है...

**आज मैं देखता हूँ शीला-मेरे ख्याल से 24 घंटे में दो मिनिट छोड़कर बाकी तो स्वामिजी का ध्यान ही करती होगी। ऐसा एक फोकस बदल गया।** बच्चों में भी मैं यही देखता हूँ– तो अब ऐसा फोकस बदल गया.. नॉरमली मैं एक डायरी रखता था कि कोई प्रॉब्लम आ जाए तो कौन-कौन से मित्र को फोन करूं? आज भी मैं डायरी रखता हूँ, मगर आज सोचना होता है कि कौन-से, कौन-से मित्र को फोन करूँ? तो मैं अशोक विहार से लेकर विद्यानगर, ताड़देव, शिकागो, वशीभाई को टेलीफोन करूँ या बापु को करूं या उधर सुमन बहन को करूँ या डॉ. नीलम को करूँ किस-किस को करूँ?

..... ये गुरुभक्ति यज्ञ-हमारे सामने कितने उदाहरण हैं गुरुभक्ति के। आनंदीमाई हैं यहां, शोभना बहन हैं, हरिधाम से सुमन बहन हैं, उधर डॉ. नीलम, भारती बहन, सुष्मी बहन.... अभी उधर पप्पाजी का भक्ति उत्सव था, तो वहां मैंने देखा भक्तवत्सलस्वामी–रात को उठूँ तो भी बैठा है, अगर सुबह उठूँ तो भी बैठा है.... पप्पाजी वहाँ जाएं तो वो ऐसे ही mood में रहता है। He doesn't get tired. चौबीस घंटे हो, 48 घंटे हों, 72 घंटे हों–वो वहीं बैठा–कि पप्पाजी को काम हो तो मैं तुरन्त कर लूं... हमारे सामने सेवा के उदाहरण रखे हैं। so we shall follow....

मंत्र की बात जनरल वालिया ने करी.... गुरुजी बहुत भजनीक हैं..... एक भजन बनाया है।उसकी एक बात मेरे माइंड में अभी तक है। It is in gering with his grace. हर एक प्रसंग पर–कोई प्रॉबलम हो–कोई भी पैसे की हो, कोर्ट की हो, पुलिस की हो, परिवार की हो–किसी भी चीज़ की हो, भजन का ही बल लेना चाहिए।**मैंने देखा भी है कि गुरुजी ऐसे ही करते हैं।** पहले-पहले आया तो मुझ से ये स्वामिनारायण मंत्र होता ही नहीं था। इच्छा भी थी, मन में भी बात बैठी हुई थी कि गुरुजी बोलते हैं तो करना ही चाहिए।एक दिन मुंबई चला गया था।तो बापु उन दिनों इंडियन थे।बापू ने बोला-आओ इधर काकाजी के रूम में बैठते हैं। थोड़ा आराम किया–अच्छा एक घंटा सो गया वहाँ। उन्होंने एयर कंडीशन वगैरह चलाया और मैं सो गया।सो कर उठा तो बापु ने कहा हम यहां धून करते हैं।**मुझे मन में हुआ कि ये तो धून करेंगे–मैं क्या करूंगा?** मैं बैठ तो गया।बापु का मुझे पहले से ही था कि He is tremendous follower of Kakaji and he is good man. I shall sit with him and I can learn something with him. **बापु तो खो गए धून में। पर मैंने यह देखा कि मेरे अंदर से भी धून करना चालू हो गया।** मैंने कहा प्रभु कितनी कृपा की है। गुरुजी ने और बापु ने। आज तक मैं बापु आपको बहुत याद करता हूँ।गुरुजी ने ऐसी कृपा करी है– ऐसी की है कि मंत्र जाप दे दिया है। Lonliness—अकेलापन महसूस नहीं होता। हमें पता है–जब भी गाड़ी में बैठें, ट्रेन की यात्रा हो, प्लेन की यात्रा हो, महाराज को याद किया, काकाजी को, पप्पाजी को, स्वामिश्री को, गुरुजी को–सब को याद किया, तो दो घंटे निकल ही जाएंगे और महाराज कृपा तो करने वाले हैं ही...

**गुरुजी ने हमारे शब्दकोष से वो अकेलेपन का नाम हटा दिया...** मैं तो फिर इतना कहूंगा। **I am indebted to Guruji probably forever. I can thank him without stop which I think he knows.....** आज का जो फंक्शन है वो किताबों में पढ़ा जाता है कि ऐसी वाईबरेशन्स होती है–ऐसा है। ये जितने भी सत्संगी यहां बैठे हुए हैं जब भजन करने बैठे–उनका मन तनिक भी विचलित ना हो....

***

## प.भ. प्रेमकुमार साहेब

(भूतपूर्व उपाध्यक्ष—डी.डी.ए.)

***(9 मार्च' 97—हिन्दी तिथि के मुताबिक मनाई गई प.पू. गुरुजी की हीरक जयंती के अवसर पर)***

बोलना मेरा कोई पेशा नहीं है, काम करना पेशा रहा है। मैं इस आश्रम से या मंदिर से या **गुरुजी** से दस साल से ज्यादा से जुड़ा हुआ हूँ।**जब वो पहली बार मेरे पास आए और उन्होंने मंदिर की जमीन के लिए कहा–**तो मैंने यह नहीं सोचा था कि इतनी बड़ी संस्था होगी। मुझे यह भी नहीं पता था कि ये स्वामिनारायण वाले क्या करते हैं या क्या नहीं करते? लेकिन **उनकी पर्सनालटी से इतना प्रभावित हुआ कि उसमें कोई अड़चन नहीं आई। मैं तो एक जरिया था। जगह तो मिलनी ही थी।** फिर मुझे आहिस्ता-आहिस्ता पता लगा उनके कामों का, सोशियल सेवाओं, उन चीजों का जो काम करते हैं। तो, **मुझे अपने फैसले पर कभी भी पछतावा नहीं हुआ। खुशी ही हुई कि ये जो काम हुआ, बहुत अच्छा हुआ और मैं इस मंदिर को देख रहा हूँ, तो मुझे बड़ी खुशी हो रही है।**

मैं यह भी सोच रहा था कि गुरुजी में बहुत सारी क्वालिटीज है, जिससे वो प्रभावित करते हैं, सभी को।आमतौर पर जन्मदिन पर जब लोग आपको परमात्मा के बराबर करना चाहते हैं तो

आदमी का मन जो है, वो रिवोल्ट करता है कि मैं तो परमात्मा के बराबर नहीं हूँ और खास कर **संत** लोग जो हैं, वे तो परमात्मा की बराबरी नहीं करना चाहते। लेकिन फिर भी, वो जनता को खुश करने के लिए या अपने फोलोअर्स को खुश करने के लिए, वो जो इज्जत देना चाहते हैं, उसको वो स्वीकार करते हैं–**हार या दूसरी चीजें–मुकुट स्वीकार करते हैं**; तो मैं समझता हूँ कि **वो भी उनकी एक नम्रता की निशानी है। अपने मन के विरुद्ध, इच्छा के विरुद्ध भी वो स्वीकार करते हैं। वो अपना मन मारकर करते हैं।**

दूसरा और कोई तरीका नहीं है इसके बारे में सोचने का या देखने का जो मैं समझ पाता हूँ। क्योंकि जो संत बन जाता है, उसको इन चीजों की परवाह नहीं रहती। वो तो सिर्फ भला ही चाहता है। या अपने परमात्मा की तरफ चला रहता है...सभी की भलाई चाहते हैं। वो किसी व्यक्तिविशेष से प्यार या मोह नहीं कर सकते.....पूरी जाति से स्नेह है, वो एक दूसरी बात है–**अच्छे कामों के लिए। अच्छा काम करें–मेरी पूरी इच्छाएँ इनके साथ हैं, दुआएँ साथ हैं और जो मैं सेवा करने के लिए कभी काबिल होऊँगा–मुझसे हुक्म करेंगे, मैं साथ रहूंगा......**

## व्रतोत्सवसूची

1.दि. 4.4.97 शुक्रवार – एकादशी, व्रत
2.दि. 8.4.97 मंगलवार – नवरात्रे प्रारम्भ
3.दि.13.4.97 रविवार – बैशाखी
4.दि.16.4.97 बुधवार – रामनवमी, भगवान स्वामिनारायण जयंती
5.दि.18.4.97 शुक्रवार – एकादशी, व्रत


Statement about Ownership and other particulars about news paper

**'भगवत-कृपा'– 'THE DIVINE GRACE'**

(Form IV Rule 8)

| | |
|---|---|
| 1. Place of Publication | : Yogi Divine Society 'Anirdesh' A-103, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 |
| 2. Periodicity of its Publication | : Monthly |
| 3. Printer's Name | : Prabhakar Rao |
| Nationality | : Indian |
| Address | : Yogi Divine Society 19_D, Janta Flats, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 |
| 4. Publisher's Name | : |
| Nationality | : As above |
| Address | : |
| 5. Editor's Name | : |
| Nationality | : As above |
| Address | : |
| 6. Owner's Name | : |
| Nationality | : As above |
| Address | : |

I, Prabhakar Rao, hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Sd/-**Prabhakar Rao**
Signature of Publisher

Date: 25th March, 1997


## ब्रह्मप्रवाह......

प.पू. गुरुजी की हीरक जयंती निमित्त प.पू. काकाजी द्वारा लिखे पत्रों का संकलन-हिन्दी व गुजराती दोनों भाषाओं में 'ब्रह्मप्रवाह' की पुस्तक के रूप में प्रकाशित हुआ है। इस संकलन में K.G. से लेकर P.H.D. तक के मुक्त को अपनी साधना के लिए व्यवहारिक व आध्यात्मिक समाधान मिलेंगे। अधिकतर पत्र तो प.पू. गुरुजी को ही उद्देश्य करके लिखे हैं, जो कि **एक गुरु द्वारा शिष्य के हर प्रकार के उत्थान के लिए किए गए अथाह परिश्रम की अद्‌भुत मिसाल है।** संकलन में तो कई पत्रों के कुछ अंश ही हैं, तो पत्र तो कितने सारे लिखे होंगे? कहां जाता है ना कि गुणातीतानंदस्वामी की बातों के संकलन की एक साथ पूरी पारायण भी तो नहीं की जा सकती और 200 साल के बाद भी वो बातें आज भी हर एक को इतनी ही appealing हैं। ठीक उसी प्रकार 'ब्रह्मप्रवाह' वर्तमान व भविष्य दोनों के लिए अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगी ही।

**यह संकलन योगी डिवाईन सोसाईटी-दिल्ली, मुंबई व शिकागो के केन्द्रों से उपलब्ध हैं।**

1. केक कटिंग करते हुए **'प.पू. पप्पाजी'** 2. **'हीरक जयंती' की सभा में दिव्य बहनें**
3. **'सरदार'** हिन्दी चलचित्र देखने निमित्त 'अम्बा' थियेटर को पावन करते प्रगट स्वरूपों के साथ गुणातीत समाज के मुक्त
4. मंदिर पाटोत्सव निमित्त मंदिर के हॉल में हो रही **'महापूजा'**

1. नींव की ईंटें-पुष्प सामग्री आदि ले जाती हुए **-प.पू. ज्योति बहनें, पू. प्रेम बहन, पू. आनंदी दीदी व बहनें**

2. **'अक्षरज्योति'** की जमीन की ओर जाते गाड़ी में विराजमान**-प.पू. पप्पाजी**

3. **'अक्षरज्योति'** की जमीन की नींवकी ईंट व अस्थिकलशों का पूजन करते हुए -प.पू. पप्पाजी

4. **'अक्षरज्योति'** की जमीन पर नींव की ईंट रखते हुए **-प.पू. आनंदी दीदी**

**PUBLISHED BY SHRI PRABHAKAR RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY**
'Anirdesh', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 7229327, 7249327
**Printed by :** Chowdhary Mudran Kendra, 714,/200, Shri Ram Marg, South Maujpur, Delhi-110 053